चांदनी महल की आत्माएं

अनिल शेखर "अमस"

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है, उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुक्सान हो सकता है ।

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

आपका

अनिल शेखर “अमस

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद और चांदनी महल की आत्माएं

तीन साल की बच्ची मीरा उस हवेली के आंगन में खेल रही है !

साथ में है उसकी दादी वसुंधरा जिसकी उम्र लगभग 60 साल के आसपास होगी । वह एक चारपाई पर पसरी हुई है । उसी के बगल में मीरा खेल रही है ।

उस आंगन में कोई और दिखाई नहीं दे रहा .....

पुरानी हवेलियों में जैसा होता था ठीक वैसा ही यह आंगन है !

जिसके चारों तरफ कमरे बने हुए हैं यानी बीच में खुला हुआ दालान ....

उसके चारों तरफ बने हुए कमरे ।

पहले के मकानों में इस प्रकार की व्यवस्था होती थी और यह व्यवस्था मनुष्य के शरीर के हिसाब से बहुत अच्छी व्यवस्था थी !

वर्तमान चिकित्सा विज्ञान भी मानता है कि सूर्य की किरणें अगर सही मात्रा में शरीर को स्पर्श ना करें तो शरीर में विटामिन डी की कमी हो जाती है । विटामिन डी की कमी होने से जहां हड्डियों में दिक्कत आ सकती है वहीं पर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी प्रभाव पड़ता है ।

पहले के समय में सुबह की धूप या शाम की हल्की धूप और कभी-कभी दोपहर की धूप भी इसी दालान में आ जाती थी और महिलाएं और पुरुष दोनों ही उसका लाभ ले पाते थे । बच्चे तो खैर दिन भर उसका लाभ लेते रहते थे ।

अब परिस्थितियां चेंज हो गई है और फ्लैट या कंक्रीट के बने हुए मकानों का सिस्टम आ गया है । जहां धूप के पहुंचने की संभावना तो है लेकिन उसे हम अंदर नहीं आने देते । खिड़कियां ऐसी बनी हुई है कि वह धूप को अंदर नहीं आने देती या फिर अगर वह कांच की है तो उसे या तो हम टिंटेड बना देते हैं या फिर उसमें काली फिल्म लगा देते हैं और सूरज की किरणों को बाहर ही रोक देते हैं ।

अब उस पर एक और चीज प्रभावी हो गई है और वह है एयर कंडीशनर या ए सी !

यह एक ऐसी चीज है जो हर कमरे को एक बंद बाक्स बना देती है ।

जहां से ना हवा बाहर जा सकती है और ना ही हवा अंदर आ सकती है क्योंकि ऐसी स्थिति में कमरे की जो ठंड बनी हुई है वह कम हो जाती है । इसलिए अधिकांश कमरों को लगभग बॉक्स बना दिया जाता है, जिसकी वजह से शुद्ध हवा भी प्रवेश नहीं करती और कमरे की हवा को हम घुमा फिरा कर इस्तेमाल करते रहते हैं ।

कुल मिलाकर यह समझ लीजिए कि जो प्रकृति ने हमें मुक्त हस्त से प्रदान किया था ताकि हम स्वस्थ रह सकें, उससे हम ज्यादा से ज्यादा बचने की कोशिश करते हैं । चाहे वह सूरज की रोशनी हो या फिर ताजी हवा !!!

यह क्योंकि पुराना मकान था, इसलिए इसमें दोनों चीजें भरपूर थी !

जब हल्की हल्की धूप निकली हुई हो और आपके पास एक चारपाई मौजूद हो तो आप को झपकी मारने से कोई नहीं रोक सकता .....

उस झपकी का मजा शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता ।

कुल मिलाकर वह एक अजीब ही सुख है जिसका मजा दादी वसुंधरा ले रही थी .....

वह उसमें इतनी ज्यादा मगन हो चुकी थी कि उसे अपनी पोती के हटकर जाने का पता भी नहीं चल पाया.....

खेलती हुई मीरा को अचानक कोई दूर गलियारे में दिखाई दिया ।

कौन दिखाई दिया ?

यह पता नहीं चल पा रहा है लेकिन ऐसा लग रहा है जैसे मीरा को कोई दिखा और वह धीरे-धीरे ठुमक ठुमक कर उस ओर बढ़ती जा रही है.....

दादी को उसकी पायल की खनक सुनाई दे रही है !

इसलिए वह भी निश्चिंत है कि बच्ची आसपास ही है और वह फिर से अपनी झपकी में खो जाती है !!

मीरा धीरे-धीरे उस गलियारे की ओर बढ़ रही है।

इधर थोड़ा अंधेरा सा है !

जब वह गलियारे के पास पहुंचती है तो ऐसा लगता है कि वहां पर कोई खड़ा हुआ है जो किसी को दिखाई नहीं दे रहा !!

मीरा अपना हाथ ऊपर उठाती है और हवा में कुछ पकड़ लेती है जैसे बच्चे बड़ों की उंगलियां पकड़ते हैं ....

ठीक वैसे ही .....

और फिर वह धीरे-धीरे उस अंधेरे गलियारे में गुम होती चली जाती है ।

लगभग 15 मिनट के बाद दादी को अपनी नींद से थोड़ी सी जागृति होती है और तब उसे आभास होता है कि बच्ची की पायल की आवाज नहीं सुनाई दे रही .....

आंखें खोल कर देखा तो मीरा आसपास कहीं भी नहीं है !

पूरे दालान में कहीं नहीं है !!

अब दादी को चिंता होने लगी की बच्ची आखिर गई कहां ?

वह आवाज लगाते हुए घूमने लगती है

मीरा.....

मीरा.....

फिर खीजने लगती है - यह नासपीटी कहां जा मारी !
दिखाई नहीं दे रही !!
उसकी खीज बढ़ती जा रही थी , लेकिन मीरा कहीं भी दिखाई नहीं दे रही । लगभग 10 मिनट इधर उधर घूमने के बाद थक कर वापस उसी चारपाई पर बैठ गई ।

वह एक पुराना बंगला है !
जो काफी लंबा चौड़ा है ।
उस हवेली के आकार प्रकार और विस्तार को देखते हुए वहां रहने वालों के विषय में जिस प्रकार का आकलन बनता है उस पर ना तो दादी के वस्त्र फिट बैठते हैं और ना ही बच्ची मीरा के !
उन्हें देखने पर और उनके कपड़ों को देखने पर ऐसा लगता है जैसे वे किसी मजदूर परिवार के सदस्य हैं । हवेली पुरानी जरूर है लेकिन उसके बनावट से वह किसी धनी मानी व्यक्ति की हवेली लगती है ।

कुछ देर बाद दादी फिर उठी और आवाज लगाने लगी -
मीरा .... मीरा.....
वह आवाज लगाते हुए इधर-उधर खोजने लगती है .....।

उस दालान के एक तरफ बने हुए कमरे में रसोई बनी हुई है । जहां खाना बन रहा है ।

मीरा उधर एक कमरे में मौजूद है और किसी के साथ खेल रही है । किसके साथ खेल रही है यह दिखाई नहीं दे रहा लेकिन जमीन पर बिल्लस के चौखाने बने हुए हैं .....

बिल्लस का खेल अगर आप जानते हो तो यह जरूर जानते होंगे कि उसमें चौखाने बनाए जाते हैं जिसके अंदर पहला खिलाड़ी कूदता है और उसके बाद दूसरे खिलाड़ी का नंबर आता है ।

कमरे में भी जो चल रहा है कुछ कुछ वैसा ही है ....

पहले मीरा उन चौखानों पर कूदती नजर आ रही है .....

उसके बाद वह किनारे खड़ी हो गई और चौखानों की तरफ देखने लगी !

जैसे.....

कोई उस पर कूद रहा है !

ठीक उसी तरह जिस तरह कोई दूसरे खिलाड़ी को देखता है ।

लेकिन.....

कोई भी वहां दिखाई नहीं दे रहा है !
यह एक अजीब बात है !!

मीरा उधर देख कर खुश भी हो रही है !
बीच-बीच में ताली बजाती है !
उससे ऐसा लगता है कि वहां पर कोई और खिलाड़ी भी मौजूद है ।
जिसके कूदने को देखकर मीरा खुश हो रही है .....
लेकिन वह जो भी है..... दिखाई नहीं दे रहा !!
मीरा उसे देख कर तालियां बजा रही है !
बच्ची को अपने अकेलेपन का कोई साथी मिल गया है !

ना तो दादी उसके साथ खेल पाती है और ना ही उसकी मां .....
क्योंकि दादी की उम्र हो चुकी है और गठिया के कारण मुश्किल से चल पाती है ।
मां इसलिए नहीं खेल पाती क्योंकि वह गर्भवती है ।
मां का नाम है सरस्वती !
सरस्वती लगभग 22-23 वर्ष की युवती है ! जो संभवतः गर्भ के छठवें या सातवें महीने में है । पेट का उभार काफी स्पष्टता से दिखाई दे रहा है ।

सरस्वती को देखने से किसी अच्छे खानदान से होने का आभास होता है । उसके नैन नक्श बेहद तीखे हैं ।
गठी हुई देहयष्टि और दमकता हुआ गोरा रंग ।
यौवन जैसे उसके हर अंग से फूट-फूटकर छलक रहा है ।
ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसे किसी मूर्तिकार ने फुर्सत में बनाया हो ।
किसी अप्सरा के जैसे दिखने वाली वह युवती बेहद आकर्षक है ।
अगर आपने अनुभव किया होगा तो गर्भावस्था में कई स्त्रियों का सौंदर्य बढ़ जाता है , वह ज्यादा आकर्षक भी दिखने लगती हैं । संभवतः कुछ ऐसा ही उसके साथ था .....

वह रसोई में खाना बनाने में व्यस्त है ...
सास की आवाज उसे सुनाई देती है जिस पर वह थोड़ा कान लगाती है और फिर अपने काम में लग जाती है .....
क्योंकि यह दादी और पोती के बीच में निरंतर चलने वाला कार्यक्रम है.....

उस पर ज्यादा ध्यान देने से रसोई बिगड़ने का खतरा रहता है जो वह उठाना नहीं चाहती .....

दादी काफी देर इधर-उधर ढूंढने के बाद थक कर चारपाई में आकर बैठ गई .....
उसके बाद जैसा आमतौर पर बुजुर्ग लोगों के द्वारा किया जाता है वैसे ही वह अपने जीवन को .....
सबके जीवन को ....
बच्ची को .....
सब को ....
कोसने लगी .....

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है तो शरीर की कार्य करने की क्षमता कम होती जाती है और इसे स्वीकार करना भी थोड़ा मुश्किल होता है !
थकावट भी जल्दी आती है और उसकी वजह से चिड़चिड़ाहट भी बढ़ती जाती है .....

तभी .....
गलियारे की तरफ से फिर मीरा दिखाई देने लगी !

ऐसा लग रहा है जैसे कोई उसकी उंगली पकड़कर उसे अपने साथ लेकर आ रहा हो !

मीरा बीच बीच में ऊपर की तरफ देखती है जैसे किसी से बातें कर रही हो !!

कभी कभी हंस भी पड़ती है !!!

मीरा के बिखरे बाल बेहद सलीके से सवार कर चोटी की शक्ल में बांधी हुई है !

ऐसा लगता है जैसे किसी सुगढ़ महिला ने उसे सजा कर तैयार कर दिया हो ।

वह काफी खुश नजर आ रही है ।

गलियारे के पास संभवतः वह उंगली उसे छोड़ देती है और वह धीरे-धीरे आगे बढ़ती जा रही है ।

बीच में पीछे मुड़कर देखती है और एक दो बार देखने के बाद फिर उसे पीछे नहीं मुड़ती ।

शायद वह वहां से जा चुकी है.....

धीरे-धीरे चलती हुई वह दादी के पास आकर खड़ी हो गई !

मीरा पुकारती है - दादी..... दादी..... भूख लगी है !

दादी क्रोधित है और उसकी पीठ पर एक धौल जमा देती है , और चिल्लाती है - तू कहां चली गई थी ?

बच्ची को कुछ समझ में नहीं आता और वह रोने लगती है । जब बच्ची रोने लगती है तो दादी को लगता है कि उसने बच्ची पर जबरन गुस्सा उतार दिया और वह उसे गोद में उठाकर लाड करने लगी ।

सुनने में बात भले अजीब लगे लेकिन हम बच्चों पर इसलिए जल्दी गुस्सा हो जाते हैं क्योंकि वह वापस रिएक्ट नहीं करते और कई बार इस वजह से हम अपना गुस्सा भी उनके ऊपर निकाल देते हैं, खासतौर से छोटे बच्चों पर .....

और साथ में यह भी कहते हैं कि बच्चे भगवान का स्वरूप होते हैं खैर ` .....

बच्चे के रोने से दादी का गुस्सा शांत होने लगा था और वह उसे गोद में उठाकर रसोई की ओर ले चली ..

मां सरस्वती तब तक खाना बनाकर तैयार कर चुकी थी । दादी ने एक थाली में उसके लिए भोजन निकाला

और उसे गोद में बैठा कर खाना खिलाना प्रारंभ कर दिया ।

खाना खिलाते खिलाते उसने पूछा - तू कहां चली गई थी ?

मीरा - दीदी के साथ खेल रही थी ! दीदी बहुत अच्छी है और मेरे साथ रोज खेलती है ! तुम तो मेरे साथ नहीं खेलती हो ... उसने मेरे बाल भी बना कर दिए ! देखो चोटी कितनी अच्छी बनी है !

दादी उसकी बातें सुनकर हैरान भी थी !

परेशान भी !!

लेकिन अब यह लगभग रोज की बात हो चुकी थी ।

इसलिए दादी ने बात को बदलने के लिए दूसरा टॉपिक पकड़ लिया और पूछने लगी - शाम को तुम क्या खाओगी ?

खाने की बात सुनकर मीरा बहल गई और दादी को अपनी पसंद बताने लगी ....

दादी सरस्वती की ओर देखने लगी ....

सरस्वती की आंखों में भी मायूसी थी....

क्योंकि यह एक ऐसी समस्या थी जिसका कोई हल नहीं था ।

ये सब जिस हवेली में मौजूद थे उस हवेली का नाम है चांदनी हवेली .....
यहां रहने वाले आदमी का नाम है गिरधारी लाल शर्मा ।
जिसकी पत्नी है सरस्वती और उसकी मां है वसुंधरा यानी की दादी ।
गिरधारी लगभग 35 साल का है और इलाके के विधायक फौजदार शर्मा के यहां नौकरी करता है ।

गिरधारी लाल मूल रूप से राजस्थान के धौलपुर जिले का निवासी है । उसकी मां अपने तीन बेटों के साथ वहां रहती थी ।
छोटा वाला बेटा है गिरधारी ।
बचपन से ही गिरधारी बातों को थोड़ी देर से समझता । इसलिए मोटा मोटी घर के नौकरों जैसी ही उसकी स्थिति थी ।

पिताजी के मरने के बाद बड़े बेटे बनवारी और मँझले बेटे मुरारी ने मिलकर प्लान बनाया और जमीन अपने नाम करवा ली । कुछ दिनों तक उन्होंने मां की अच्छी देखभाल की...
कुछ समय बाद दोनों का विवाह हो गया ।
समय बीतने के साथ प्रासंगिकता कम होती जाती है ।

उन्हे लगा कि मां और भाई दोनों को निपटा देना ठीक रहेगा । यहां रहेंगे तो किसी के दिमाग से अगर यह बात आ गई तो हिस्सेदारी की बात आ सकती है । दोनों भाइयों को अपने अपने हिस्से का कुछ छोटे भाई को भी देना पड़ सकता है । यह विचार आते ही उन्होंने मां को बनारस जाने का और काशी विश्वनाथ के दर्शन का सुझाव दिया ।

बुढ़ापे में धर्म कर्म करने की इच्छा सबकी रहती है ।
इसलिए माता जी जाने को राजी हो गई .....

आप ने अनुभव किया होगा तो हमेशा ऐसा होता है कि जो कमजोर होता है बीमार होता है या विकलांग होता है या किसी भी वजह से बाकी लोगों की तुलना

में बेवकूफ किस्म का होता है उसके प्रति माताओं का लगाव और करुणा ज्यादा होती है । यह संभवत प्रकृति का कोई सिस्टम है जिसकी वजह से कमजोर बच्चों को मांओं की तरफ से ज्यादा स्नेह और संरक्षण मिलता है । गिरधारी के साथ भी वैसा ही था ।
मां जाने वाली है तो स्वाभाविक था कि गिरधारीलाल भी जाता .....

यह तो दोनों भाइयों के लिए और ज्यादा सुविधा वाली बात थी !
एक ही तीर से दो निशाने लग रहे थे !
दोनों भाइयों ने गाड़ी बुक की और तीनो भाई मां के साथ बनारस की ओर चल पड़े .....
बनारस से लगभग 20-25 किलोमीटर दूर एक गांव में रात हुई तो धर्मशाला में रुके । धर्मशाला में 2 कमरे लिए । एक कमरे में मां और गिरधारी लाल थे , और दूसरे कमरे में दोनों भाई ।

रात का भोजन करने के बाद सभी अपने अपने कमरे में सोने के लिए चल पड़े । अगले दिन जो सुबह हुई वह सुबह दोनों मां बेटे पर किसी वज्रपात से कम नहीं थी!

क्योंकि .....
दोनों भाई अल सुबह धर्मशाला छोड़ कर जा चुके थे !!!

धर्मशाला का मालिक सहृदय था !
उसने गिरधारी लाल को बनारस जाकर कुछ काम धंधा ढूंढने के लिए कहा और जब तक कोई व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक भोजन और रहने की व्यवस्था धर्मशाला में ही करने की बात कही यह एक बहुत बड़ी राहत थी अन्यथा भूखे मरने की नौबत आ जाती ।

गिरधारी कामकाज की तलाश में भटकते भटकते बनारस तक पहुंच गया और वहां उसकी मुलाकात विधायक फौजदार शर्मा से हो गई ।
उस दिन वह गंगा घाट पर बैठा हुआ था और तभी फौजदार गंगा आरती के वक्त वहां से गुजरा । किसी अज्ञात प्रेरणा से गिरधारी लाल ने उसके पैर पकड़ लिए ।

फौजदार हट्टा कट्टा 6 फुट का मजबूत कद काठी का पुरुष था । जिसकी उम्र लगभग 36-37 साल की होगी

। फौजदार शर्मा एक जमींदार खानदान से ताल्लुक रखता है । कई सालों से उनका परिवार वाराणसी में और उसके आसपास के इलाके में ही रहता रहा है । अचानक इस प्रकार से किसी का पैर पकड़ लेना फौजदार के लिए सामान्य घटना नहीं थी । इसलिए उसने गिरधारी लाल से उसका नाम पता पूछा । उसकी समस्या जाननी चाही । जब उसे पता चला कि गिरधारी लाल शर्मा है तो जातिगत भावना जागृत हो गई और उसने गिरधारी लाल को अपने पास काम पर रख लिया ।

लेकिन.....
फौजदार शर्मा ने भी उसे कुछ दिन अपने पास रखा और उसके क्रियाकलाप को देखकर उसे अपने खेत का चौकीदार बनाना ज्यादा उचित लगा । उसे अपने खेत पर लगा दिया वहां पर और भी चौकीदार थे । चौकीदारी का काम ज्यादा मेहनत का भी नहीं होता है इसलिए फौजदार के खेत में गिरधारी सेट हो गया ।

कुछ दिन के बाद फौजदार ने उसे अपने फार्म हाउस में काम के लिए बुला लिया । फौजदार का फार्म हाउस

बनारस से लगभग 15 किलोमीटर दूर एक गांव में था । पत्नी और परिवार बनारस में ही रहते थे । फौजदार कभी बनारस रहते कभी लखनऊ तो कभी दिल्ली । उनका आना-जाना इधर-उधर लगा ही रहता था । फार्म हाउस में परिवार वालों का आना जाना कम ही होता था । ऐसे भी कह सकते हैं कि उनका वहां जाना मना था क्योंकि फार्म हाउस अलग प्रकार के कार्यों के लिए उपयोग में आता था । मेरा आशय आप समझ ही गए होंगे ।
फार्म हाउस पर चौकीदार था 55 साल का विशाल !
उसकी बेटी थी सरस्वती !

उस समय फौजदार 30-32 साल के थे और सरस्वती यौवन पर कदम रख रही थी .....
यानी 15-16 साल की ....
गरीब परिवार में जन्म लेने के बावजूद सरस्वती अद्भुत सौंदर्य की स्वामिनी थी !
ऐसा लगता था जैसे प्रकृति ने उसे देने में कोई कमी नहीं की हो !
जंगल के बीच में बने हुए किसी खूबसूरत झरने की तरह वह उस फार्म हाउस में दौड़ती फिरती.....

एक दिन फौजदार की नजर उस पर पड़ गई और उसके बाद वही हुआ जो ऐसी परिस्थितियों में होता है , क्योंकि जमींदार के आगे बोलने की किसी की हिम्मत नहीं होती !
वह उस के टुकड़ों पर पल रहा है या यूं कह लीजिए कि उसका गुलाम है !!
ऐसी ही स्थिति गांव में पहले हुआ करती थी ।

उसके कुछ-कुछ प्रमाण आज भी कई जगह पर आपको दिखाई देंगे । अब जमींदार बदल गए हैं लेकिन व्यवस्थाओं में इस प्रकार की चीजें आज भी मौजूद है । कई बार आप कार्यालयों में आज के जमींदारों यानि बड़े अधिकारियों द्वारा अधीनस्थ का शोषण किए जाने के विषय में पढ़ते होंगे .....
वह भी इसी का एक स्वरूप है ।

तो सरस्वती अब फौजदार की हो गई !
यह एक प्रकार का अलिखित समझौता था ।
सरस्वती का सभी प्रकार से फौजदार ख्याल रखता और बदले में उसकी इच्छा की पूर्ति करना सरस्वती का कार्य था ।

सरस्वती ने भी उसे अपना भाग्य मान लिया था ।
वह फौजदार को ही अपना पति मानती थी और उसके लिए सारे व्रत भी रखती रही । वह भी इस बात को जानता था और उसके मन में सरस्वती के लिए एक अलग ही स्थान था । वह उसे प्रेम भी करता था और उसका सम्मान भी !
ऐसा नहीं था कि सरस्वती अकेली उसकी जीवन में आई हुई औरत हो !
लेकिन सरस्वती का स्थान उसके जीवन में बाकियों से थोड़ा ऊंचा था ।

सरस्वती गर्भ से हो गई और उसने यह बात फौजदार को बताई ।
फौजदार इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था लेकिन भ्रूण हत्या के पाप को भी वह अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था ।
ऐसी स्थिति में उसे एक ऐसा आदमी चाहिए था जिसके ऊपर वह यह जिम्मेदारी सौंप सकें .... और इसके लिए गिरधारीलाल सबसे उपयुक्त आदमी लगा !

उस समय सरस्वती की उम्र कोई 19 साल के आसपास रही होगी और गिरधारी लाल 32-33 साल का !
गिरधारी लाल ने सरस्वती से विवाह कर लिया ।

विवाह क्या वह एक प्रकार का अनुबंध था ।
जिसके तहत उसे सरस्वती को किसी भी प्रकार से स्पर्श करने की अनुमति नहीं थी । यूं कह लीजिए एक प्रकार से सरस्वती का सामाजिक चौकीदार था ताकि सरस्वती फौजदार के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हो सके ।
समय अपनी निर्बाध गति से आगे की ओर चलता रहा... ....
इस बीच सरस्वती का पहला प्रसव हुआ और मीरा अवतरित हो गई ।
सब कुछ सामान्य चल रहा था ।
आउटहाउस के पास एक छोटा दो कमरे का मकान बना हुआ था जिसे गिरधारी को दे दिया गया । गिरधारी अपनी वहां और सरस्वती के साथ वहां रहने लगा था ।
जब फौजदार आता तो सरस्वती फार्म हाउस के अंदर होती । ऐसा महीने में दो-तीन बार ही होता था ।

फौजदार के साथ गिरधारी पूरी निष्ठा के साथ काम करता रहा । फौजदार भी खुश था ।

पहले गिरधारी की मां को परिस्थितियों से एडजस्ट करने में बहुत दिक्कत हुई लेकिन उनके पास कोई दूसरा उपाय नहीं था । वह स्वयं मोतियाबिंद और गठिया के चलते अपना कार्य मुश्किल से कर पाती थी । ऐसी स्थिति में दो जून की रोटी का जुगाड़ करना गिरधारी की जिम्मेदारी थी । गिरधारी की मानसिक स्थिति से वाकिफ होने के कारण उसे पता था कि ऐसी नौकरी उसे आसानी से दूसरी जगह नहीं मिल पाएगी ।

विवशता और विशेष रूप से आर्थिक विवशता ! जब जीवन में आती है तो मनुष्य को बहुत सारी चीजों से समझौता करना पड़ जाता है । मां भी इस बात को समझती थी ।

उसके खुद के दो बेटों ने उसे घर से निकाल दिया था ! ऐसी स्थिति में उसने बड़ी मुश्किल से दिन गुजारे थे !! वह वापस उस स्थिति में नहीं जाना चाहती थी । इसलिए धीरे-धीरे उसने भी परिस्थितियों से समझौता कर लिया और इसे ही अपने और पुत्र की नियति मान लिया ।

सरस्वती दिल की बहुत अच्छी थी ! उसे पता था कि यह विवाह केवल एक दिखावा है । फिर भी उसने गिरधारी और वसुंधरा को बराबर सम्मान दिया इसलिए वे भी उसे काफी पसंद करते थे ।

दो-तीन साल ऐसे ही बीत गए !

चांदनी महल का चौकीदार एक दिन चल बसा । चांदनी महल काफी सालों से सुनसान पड़ा हुआ था । वहां भूत प्रेत का निवास है और महल मे रात को अजीब अजीब सी आवाजें आती है ऐसा कहा जाता था । इसलिए कोई भी उस ओर जाने से झिझकता था । देखरेख न होने के कारण उसकी हालत थोड़ी सी जर्जर हो चुकी थी, लेकिन तब भी वह काफी अच्छी स्थिति में था ।

चौकीदार के मरने के बाद फौजदार को उसकी देखरेख के लिए एक आदमी की जरूरत थी । उसने गिरधारी को इसके लिए चुन लिया । इससे उसे दो फायदे होने थे। एक तो महल की देखरेख हो जाती और दूसरा सरस्वती से एकांत में मिलने की संभावनाएं ज्यादा बढ़ जाती

क्योंकि चांदनी महल वाराणसी मे ही था और उसकी ओर कोई भी आना जाना नहीं करता था ।

तब तक सरस्वती की पहली बेटी 3 साल की हो चुकी थी ।
वही मीरा थी !
जो अभी आंगन में खेल रही थी .....

अभी सरस्वती के गर्भ में दूसरा बच्चा पल रहा था जो संभवत: 6-7 माह का हो चुका था ।

यहां आए हुए गिरधारी को अभी लगभग महीना पर हुआ था । इस दौरान वहां पर चित्र विचित्र घटनाएं घटती रहती थी । बच्ची के द्वारा अलग-अलग प्रकार की बातें किए जाने से दादी को एहसास हो गया था कि वहां पर कुछ न कुछ अजीब तो है ।
लेकिन क्या अजीब है ? उसकी समझ से बाहर था ।

अभी तक जो भी हो रहा था वह बच्ची के साथ ही होता था और दादी को स्वयं किसी प्रकार का अनुभव नहीं हुआ था इसलिए वह बच्ची की कल्पना भी हो सकती है इस संभावना को भी मन में लिए हुए थी ।

समय आगे बढ़ता गया मीरा को अलग-अलग प्रकार के अनुभव होते रहते ! जिसके विषय में दादी को ज्यादा जानकारी होती थी ।

सरस्वती अपने गर्भ के अंतिम महीनों में चल रही थी और उसे खुद को संभालने में ही काफी परेशानी हो जाती थी इसलिए मीरा अब लगभग पूरी तरह से दादी के ही जिम्मे थी ।

गिरधारी को भी विचित्र प्रकार के अनुभव होते रहते थे । कभी उसे लगता कि कोई उसके पास से गुजरा !

तो कभी कोई उसके कान में कुछ फुसफुसा कर निकल जाता !!

जब वह हवेली के चक्कर लगा रहा होता तो अचानक से कोई उसे छूकर निकल जाता ।

उसे भी एहसास हो चुका था कि चांदनी महल में कुछ ना कुछ शक्तियों का आवास तो जरूर है । मालिक की आज्ञा है इसलिए रुकना जरूरी था उसके पास कोई दूसरा उपाय नहीं था । गिरधारी अभी तक स्त्री सुख से वंचित था । पहले तो विवाह हुआ नहीं था इसलिए उसे अवसर मिला नहीं । विवाह भी हुआ तो ऐसा हुआ कि उसके बाद भी उसे अवसर नहीं मिल पाया ।

चाँदनी महल मे आने के लगभग 1 महीने गुजर चुके हैं ..

गिरधारी कुर्सी पर बैठा हुआ है । चांदनी महल के दरवाजे के पास उसकी कुर्सी लगी हुई है जहां वह चक्कर लगाने के बाद आकर बैठता है ।
तभी उसे अपने पास किसी के होने का एहसास होता है । गिरधारी पलट कर देखता है लेकिन उसे कोई भी दिखाई नहीं देता ।
वह आवाज लगाता है - कौन है ?
कोई जवाब नहीं.....
दो-तीन बार आवाज लगाने के बाद वह भी शांत होकर बैठ गया ।
बैठकर उसने जैसे ही दाहिनी ओर देखा तो उसे बाहर के छोर पर लाल रंग की साड़ी में कोई दिखाई दिया ।
वहीं ठहर जा ! रुक-रुक ! कहता हुआ गिरधारी उस ओर दौड़ पड़ा ..।
कोने तक पहुंचते-पहुंचते गिरधारी को लाल रंग पहनी हुई महिला का स्वरुप हल्का-हल्का नजर आने लगा ।

गिरधारी को आश्चर्य हुआ क्योंकि पिछले 1 महीने में उसे इस महल की ओर कोई महिला आती हुई दिखाई नहीं दी थी ।

वह बेहद सधे हुए कदमों से धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी ....

गिरधारी तेजी से उसकी तरफ बढा .....

गिरधारी काफी दूरी तय कर चुका था और हाँफ रहा था ।

सांस फूल रही थी ।

वह दौड़ रहा था ताकि जान सके कि वह है कौन ?

उसके और साड़ी वाली महिला के बीच में लगभग 10 गज की दूरी रह गई है । युवती ने घूंघट लिया हुआ है इसलिए उसका चेहरा स्पष्ट नहीं दिख रहा । हाथ की चूड़ियां खनक रही है पांव की पायल भी हल्के हल्के बज रही है .....

वह बेहद सधे कदमों से आगे बढ़ती जा रही है । ऐसा लग रहा है जैसे गिरधारी के आवाज देने का उसके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा ।

गिरधारी अपनी स्पीड बढ़ा देता है ताकि उसे पकड़ सके ।

वह महिला महल के दीवाल के मोड़ तक पहुंच चुकी है !

बस तीन कदम का फासला रह गया है मोड़ तक

पहुंचकर महिला एक बार पीछे मुड़कर देखती है !

गिरधारी को ऐसा लगता है कि उसने शायद घुंघट भी हल्का सा उठाया !

लेकिन ...

गिरधारी उसके चेहरे को देख नहीं पाता ।

इस चक्कर में उसकी स्पीड थोड़ी कम हो गई । उसके ठिठकते ही युवती मोड मुड़ जाती है ।

अगले ही पल गिरधारी भी उस मोड़ पर पहुंच गया .....

उसे पूरा विश्वास है कि वह उसे पकड़ ही लेगा लेकिन जैसे ही उसने वह मोड़ पार किया आश्चर्य से उसकी आंखें फट गई .....

क्योंकि मोड़ के बाद उसे कोई भी दिखाई नहीं दे रहा .....

दूर-दूर तक कोई नहीं है !

वह महिला कहां गायब हो गई पता नहीं !

गिरधारी ने काफी देर तक उसे खोजा लेकिन वह महिला उसे दिखाई नहीं दी ।

इस प्रकार की घटनाएं अब उसके साथ सामान्य होने लगी । लाल रंग की साड़ी वाली महिला अब अक्सर उसके इर्द-गिर्द दिखाई देती थी । उसी प्रकार से दिखाई देती और रहस्यमय ढंग से गायब हो जाती । गिरधारी उसके पीछे दौड़ता और फिर निराश लौट आता ! उसके मन में उस युवती के रहस्य को जानने की इच्छा प्रबल होती जा रही थी लेकिन उसका रहस्य उसे पता नहीं चल पा रहा था । यह उसके लिए भी बढ़िया टाइम पास हो गया था । उस भूतहा महल में करने को कोई काम तो था ही नहीं । इधर उधर घूमते रहना था । अब उसे इस महिला की जानकारी लेने की आकांक्षा के रूप में एक नया काम मिल गया था । जिसे वह बराबर अंजाम दे रहा था .....

एक दिन रात को जब गिरधारी सो रहा था तो कमरे में उसी युवती का स्वरूप दिखाई देने लगा । युवती ने पायल को झनकाया । गिरधारी हड़बड़ा कर उठ बैठा ।

वही लाल रंग की साड़ी वाली महिला खड़ी है । घूंघट अभी उसी प्रकार से डाला हुआ है । अचानक उसने घूँघट उघाड़ दिया ।

उसे देखकर गिरधारी जड़वत खड़ा रह गया !

वह बेहद खूबसूरत युवती थी । उस युवती की आंखें किसी गहरी झील की तरह थी और शरीर बेहद मादक था ।

गिरधारी की आंखें जब उसकी आंखों से टकराई तो वह सम्मोहित सा हो गया ।

वह युवती धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ी !

उसे पता ही नहीं चला कि कब उसके देह से वस्त्र उतर गए.....

फिर यह लगभग रोज की घटना होने लगी ।

अजीब बात यह थी कि वह युवति कुछ बात नहीं करती थी.....

केवल रात के गहराने पर कमरे में अचानक से प्रकट होती और अपनी इच्छा पूर्ति करके कमरे से निकल जाती ।

गिरधारी यह बात किसी को बता भी नहीं सकता था क्योंकि इस विषय पर मां से चर्चा कर नहीं सकता था .....
और सरस्वती पत्नी होते हुए भी पत्नी नहीं थी ।

यह और बात है कि गिरधारी को यह सुख पहली बार मिल रहा है ! इसलिए वह बेहद आनंद की स्थिति मे है ।
अब उसे चांदनी महल से अलग ही लगाव हो गया है .....

समय गुजरता जाता है .....
सरस्वती की गोद में एक और बेटी मौली आ जाती है ....
सरस्वती और दादी और ज्यादा व्यस्त हो जाते हैं !
उनके पास मीरा के लिए वक्त की कमी बढ़ जाती है.....
मीरा दलान में अकेले खेल रही है ....
अचानक उसे गलियारे पर फिर वही चिर परिचित आकृति दिखाई देती है जिसे वह दीदी कहती है ।

उसकी उंगली पकड़कर वह फिर से उस कमरे की ओर चली जाती है ।

कमरे के अंदर पहुंचकर खेल शुरू हो जाता है । थोड़ी देर तक सब ठीक चलता रहा । फिर अचानक मीरा की चोटी पकड़कर कोई खींच लेता है...

मीरा - आह !

मीरा छोटी होने के कारण बैलेंस नहीं कर पाती और पीछे की तरफ गिरने लगती है, तभी ऐसा लगता है जैसे किसी ने उसे पीछे से संभाल लिया हो । गिरते-गिरते वह अचानक हवा मे उठ गई । जैसे किसी ने उसे गोद मे उठा लिया हो .....

फिर धीरे से जमीन पर रख दिया हो .....

थोड़ी देर शांति रहती है ।

मीरा घबराई हुई है .....

ऐसा लग रहा है जैसे वह कुछ अजीब देख रही है .....

तभी उसकी एक बांह हवा मे एक तरफ खिंचती है और दूसरी दूसरी तरफ ।

ठीक वैसे .....

जैसे दो लोग उसको अपनी अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे हों .....

दोनों तरफ झूलती हुई मीरा कभी बाई तरफ झुकती है तो कभी दाएं तरफ झुकती है !

यह मीरा के लिए एक अलग और अजीब किस्म का अनुभव है !

वह घबरा रही है.....

और फिर अचानक रोने लगी....

उसके रोने की आवाज सुनकर संभवत: जिन्होंने भी उसका हाथ पकड़ा हुआ था उन्होंने हाथ छोड़ दिया

उसके दोनों हाथ नीचे आ गए .....

वह काफी देर तक रोती रही उसके बाद मीरा दौड़ती हुई वापस दालान में आ गई!

दालान में आने के बाद भी काफी देर तक वह रोती रही और रोते रोते ही चारपाई पर सो गई ।

अब ऐसा अक्सर होता है कि मीरा गलियारे से इसी प्रकार रोती हुई बाहर निकलती !

कभी उसके गाल लाल होते !

कभी उसके बाल बुरी तरह बिखरे होते .....

जैसे किसी ने उसे बाल पकड़कर खींचा हो.....
हाँ ! कई बार उसके बाल बड़े सलीके से सँवारे होते हैं और वह बेहद साफ-सुथरे ढंग से सजी हुई होती ...
कई बार उसके बालों में और कपड़ों पर मिट्टी लगी होती जैसे वह जमीन पर गिर गई हो या उसे जमीन पर घसीटा गया हो ....

इसके बावजूद उसे दीदी के साथ खेलना पसंद है क्योंकि वही इकलौती है जो उसके साथ खेलती है । दादी और मां तो अलग-अलग कामों में व्यस्त हैं । पिता यानी गिरधारी अपने काम मे लगा रहता है तो उसके साथ खेलने कूदने का सवाल ही नहीं था.....
इन सबके बावजूद गलियारे में उसके गुम होने का सिलसिला जारी रहता है .....

उधर गिरधारी के साथ भी बहुत कुछ अजीब हो रहा था । पहले जो चीज एक रहस्यमय महिला के साथ प्रारंभ हुई थी ..... उसमे और महिलाओं की एंट्री हो चुकी थी ।
एक रात को जब वह सो रहा था तो अचानक उसे फिर से वही अनुभूति हुई । वहीं रहस्यमय लाल कपड़े वाली

महिला प्रकट हुई और उसके साथ समय व्यतीत करने के बाद वह चली गई.....

गिरधारी सोने की कोशिश कर रहा था तभी उसे कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास हुआ !
यह दूसरी महिला थी जो सतरंगी घाघरा चोली पहने हुए थी और उसने भी गिरधारी के साथ वही किया जो लाल साड़ी वाली महिला करती थी ।
धीरे-धीरे यह रोज का क्रम हो गया .....
पहले हरी साड़ी वाली महिला और उसके बाद घाघरा चोली वाली .....
यह कहानी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी और उसके जो पल आनंद वाले गुजर रहे थे वह अब मजबूरी की तरफ बढ़ रहे थे .....

दीपावली का समय आने वाला था.....
मैं यानि अघोरानंद एक गृहस्थ युवा था । जो शासकीय सेवा में था और छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग शहर में रहता था । मेरी पत्नी का युवावस्था में ही देहांत हो गया । उसके देहांत के बाद मैं बेहद अकेला पड़ गया । कुछ समय बाद मेरे जीवन में अजीब अजीब सी घटनाएं

घटी । मेरे गुरु ने मुझे अघोर दीक्षा प्रदान की और मुझे "अघोरानंद" नाम दिया । जिसके बाद मेरा साधनात्मक जीवन प्रारंभ हुआ । इसके विषय मे विस्तार से जानने के लिए आप मेरी रचना "तांत्रिक अघोरानंद" पढ़ सकते हैं ।

मैं एक शासकीय विभाग में क्लर्क की नौकरी कर रहा था । शासकीय विभाग में काफी छुट्टियां होती है । दीपावली के लिए लगभग तीन-चार दिनों की छुट्टियां मिलने वाली थी और मैं सोच रहा था कि इस चार दिन का उपयोग अपने आराध्य भगवान काशी विश्वनाथ के चरणों में बैठने के लिए व्यतीत करूँ .....

काशी यानी वाराणसी या बनारस !

मेरे आराध्य भगवान शिव की नगरी !!

एक ऐसी नगरी जिसके बारे में कहा जाता है कि उसका निर्माण लगभग 5000 साल पहले हुआ है !!

विश्व की प्राचीनतम नगरियों में से एक.....

जिसका विवरण शब्दों से परे है ....

अद्भुत अलौकिक भगवान शिव का सिद्ध पीठ !!!

कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि काशी के नीचे एक और काशी बसी हुई है !

जिसे पाताल काशी कहते हैं !

गुप्तकाशी भी कहते हैं !!

यह काशी सामान्य आंखों से दिखाई नहीं देती । यह उन्हीं को दिखाई देती है जो साधनात्मक रूप से काफी उच्च कोटि के होते हैं या फिर उनको जो सिद्ध योगी होते हैं । उस गुप्त काशी में असंख्य योगियों साधकों और सिद्धों का जमावड़ा लगा रहता है !

वे निरंतर अपनी साधना करते रहते हैं !!!!

दरअसल जिन स्थानों पर ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई है अर्थात भगवान शिव के सिद्ध पीठ है वे पृथ्वी के ऐसे स्थानों पर स्थित है जहां पर साधना करने से जल्दी लाभ मिलता है !

जल्दी सिद्धियां प्राप्त होती है !!

मस्तिष्क तथा आंतरिक शरीर का व्यापक विकास होता है !!!

सिद्धपीठ पर स्थापित शिवलिंग एक तरह से आप कह सकते हैं कि ऊर्जा के स्त्रोत है ! इस प्रकार के पिंड या

शिवलिंग अपने आसपास ऊर्जा का प्रबल संचार रखते हैं । वह ऐसे स्थान पर स्थापित है जो ऊर्जा का विस्तार अनंत गुना बढ़ा देते हैं । वहां जाने से आपको एक अलग ही ऊर्जा का प्रभाव महसूस होगा ।

बनारस में भी अगर आप जाएं तो कभी काशी विश्वनाथ के दर्शन की हड़बड़ी में ना हो तो मंदिर के आसपास कहीं बैठ कर देखें !
नदी तट पर शांति से बैठ कर देखें !!
प्रकृति के साथ अपने आप को सामंजस्य स्थापित करने का अवसर दें..... तो आप पाएंगे कि आपके आसपास कुछ अजीब सा घटित हो रहा है !
आपके मस्तिष्क में कुछ नया कुछ अजीब सा हो रहा है जो वर्णन से परे है !!
कुछ ऐसा जो आपको आनंद के रस से आप्लावित कर रहा है .....
आपको सुखद एहसास दिला रहा है !
यह सिद्ध पीठ की शक्ति है !!

वास्तव में सिद्ध पीठ ध्यान करने के लिए और अपने अंदर की शक्तियों को जागृत करने के लिए बनाए गए थे !

परिस्थितियां बदलती गई और अब यह आध्यात्मिक केंद्रों के बजाय धार्मिक पर्यटन के व्यावसायिक केंद्रों में बदलते जा रहे हैं लेकिन उनकी मूल ऊर्जा अब भी विद्यमान है । उसे महसूस करने के लिए आपको वहां शांत मन से बैठना होगा !

समय देना होगा .....

उस पराशक्ति के सानिध्य को उसके साथ सरल सहज सूक्ष्म संबंध स्थापित करके ही एहसास कर पाएंगे !

तभी आप सिद्ध पीठों के वास्तविक लाभ को ले पाएंगे !

खैर ....

भगवान शिव विचित्र है !

वैसे ही उनका धाम काशी भी !!

यह अपनी विशेषताओं के लिए विश्व भर मे जाना जाता है ..

काशी के विषय मे कहा जाता है कि :-

रांड सांड सीढ़ी सन्यासी ।

इनसे बचे सो वासे काशी ।।

अर्थात यह चार चीजें काशी में बहुतायत में उपलब्ध हुआ करती थी । इसमें पहले नंबर पर गणिकाए तो है ही !

दूसरे नंबर पर आता है सांड...

सांड भगवान शिव का वाहन माना जाता है और काशी में आप किसी सांड के साथ मारपीट या दुर्व्यवहार नहीं कर सकते । काशी में सांड की अपनी अलग दबंगई चलती है । अगर वह सड़क पर खड़ा है तो उसकी मर्जी है कि वह आपको रास्ता दे और अगर उसने आपको रास्ता नहीं दिया तो आप उसको हटा नहीं सकते । आपको अपना रास्ता बना कर खुद निकलना है ।

ऐसा भी नहीं है कि वहां पर कुछ 20-25 की संख्या में सांड है । वहां सैकड़ों हट्टे कट्टे सांड घूमते नजर आ जाएंगे ! उन्हें भगवान शिव का वाहन माना जाता है ! इसलिए उनका भरपूर सम्मान है और उनके भोजन की भरपूर व्यवस्था भी हो जाती है ।

इसके बाद आ जाइए सीढ़ी पर ...

काशी में 84 घाट प्रसिद्ध है और उन सारे घाटों में आपको सीढ़ियाँ मिल जाएंगी । इसी बात से आप समझ सकते हैं कि वहाँ कितनी सीढ़ियाँ होंगी .....

इसके अलावा भी रास्ते में कई जगह पर सीढ़ियां बनी हुई है । नदी का तट होने के कारण जमीन में ढलान है और उस पर आने जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है । इन सारी सीढ़ियों मे भी आपको बच कर चलना है ।
आखिरी और सबसे विचित्र चीज है साधु या सन्यासी ! काशी बाबा विश्वनाथ ! भोले भंडारी ! आदि पुरुष दक्षिणामूर्ति शिव की नगरी है तो आपको यहां पर चित्र विचित्र किस्म के साधुओं के दर्शन तो होना ही है ।
यहाँ सफेद कपड़ों में आपको साधु मिल जाएंगे !
गेरुए कपड़ों में साधु मिल जाएंगे !!
लाल कपड़ों मे मिल जाएंगे !!
धोती पहने !
लंगोट लगाए हुए साधु दिख जाएंगे और साथ ही नागा बाबा भी मिल जाएंगे ।
साधुओं की जितनी वैरायटी होती है वह सारी की सारी काशी में दिखाई देगी ।

यहाँ आश्रमों की भी कमी नहीं है !
पंडों की भी कमी नहीं है ।
मंदिरों की कमी तो बिल्कुल नहीं है....
यानी कुल मिलाकर यह अलग ही किस्म का नगर है
जिसे बनारस कहा जाता है !!!
वहां पहुंच जाना !
काशी विश्वनाथ के दर्शन करना !!
जीवन का सौभाग्य है !!!

बनारस की तंग गलियों के बीच में कई ऐसे घर बने हुए हैं जिनमें कई मंजिलें हैं !
कुछ घरों मे भूगर्भ में भी कमरे बने हुए हैं ।
वास्तव में काशी विभिन्न प्रकार की साधनाओं का केंद्र रहा है ।
कई घरों में अंदर मंदिर है और वह भी ऐसे मंदिरों जो आजकल बने हुए नहीं हैं बल्कि कई साल पुराने हैं ।
उनमें से कुछ अत्यंत जागृत और चैतन्य शक्तिपीठ हैं । जिनमें कई प्रकार की साधनाएं अपने समय में होती रही है । इन में दक्षिण मार्गी साधनाएं भी होती थी और वाममार्गी साधनाएं भी होती थी ।

यही नहीं कापालिक साधनाओं का भी सिद्ध क्षेत्र रहा है बनारस या वाराणसी....

ऐसी अद्भुत नगरी में जाना जीवन का सौभाग्य है ।
उस की भूमि को स्पर्श करना !
उसे अपने माथे से लगाना !!
वास्तव में जीवन का सौभाग्य है । मैं उसी सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए बनारस पहुंच गया !!

बनारस में दो घाट है जहां पर 24 घंटे अर्थात दिन और रात दोनों समय शवों का दाह संस्कार किया जाता है । आमतौर पर सनातन धर्म में शव का दाह संस्कार दिन के समय ही किया जाता है लेकिन यही दो घाट है जो उसके अपवाद है । इसमें से एक है मणिकर्णिका घाट और दूसरा है हरिश्चंद्र घाट ।
हरिश्चंद्र घाट वह घाट है जहां पर राजा हरिश्चंद्र ने डोम के सेवक के रूप में कार्य किया था ।
राजा हरिश्चंद्र बेहद धर्म निष्ठ राजा माने जाते थे । महर्षि विश्वामित्र ने एक बार उनका परीक्षण किया था ।
ऋषि विश्वामित्र राजा हरिश्चंद्र के राजमहल में पहुंचे ।
राजा हरिश्चंद्र ने उन्हें अपने राज सिंहासन पर बैठाया और

कहा - प्रभु ! मेरा संपूर्ण राज्य आप को समर्पित है आप आसन ग्रहण करें ।

राजा ने ऋषि के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया था लेकिन महर्षि विश्वामित्र तो उनका परीक्षण करने के लिए आए थे इसलिए उन्होंने आसन ग्रहण कर लिया और उसके बाद राजा हरिश्चंद्र से दक्षिणा की मांग कर डाली ।

जब राज्य हाथ से चला गया तो राजा हरिश्चंद्र स्थिति में नहीं थे कि वह दक्षिणा दे सकें इसलिए उन्होंने कुछ समय मांगा और महर्षि दे उनको समय दे दिया । उस दौरान वे निर्धारित धनराशि को दक्षिणा के रूप में देने में असमर्थ हो गए । तब उनको स्वयं को डोम के पास दास के रूप में रखना पड़ा था । इस दासत्व के बदले में मिले हुए धन को उन्होंने महर्षि के दक्षिणा के रूप में उन्हें प्रदान किया था । लेकिन महर्षि का परीक्षण तो अभी पूर्ण नहीं हुआ था ।

उन्हें श्मशान में शव जलाने का कार्य सौंपा गया था और साथ ही उस डोम ने उन्हें कहा था कि किसी भी शव का दाह संस्कार बिना कर लिए नहीं करना है ।

राजा हरिश्चंद्र ने स्वामी की आज्ञा का पूरी तरह से पालन किया था । संयोगवश सर्पदंश से उनके पुत्र की मृत्यु हो गई । जब वह पुत्र दाह संस्कार के लिए लाया गया तब उन्होंने अपनी पत्नी से अपने ही पुत्र का दाह संस्कार करने के लिए कर के रूप में साड़ी का आधा भाग लिया था ...क्योंकि उस समय उनकी पत्नी के पास देने के लिए धनराशि उपलब्ध नहीं थी .....

उनकी इस कर्तव्य निष्ठा को देखकर महर्षि विश्वामित्र प्रसन्न हुए थे और वापस उन्हें संपूर्ण राज वैभव वापस कर दिया था और उनके मृत पुत्र को भी जीवित कर दिया था.....
कहा जाता है कि डोम को राजा हरिश्चंद्र ने एक भव्य महल बनवा कर दिया था । आज भी हरिश्चंद्र घाट पर डोम को डोम राजा ही कहा जाता है और उनका भवन वहां पर विद्यमान है ।
हरिश्चंद्र घाट पर डोम का कार्य करने वाले स्वयं को उसी डोम का वंशज मानते हैं ।

हरिश्चंद्र घाट में जिसका अंतिम संस्कार होता है वह जन्म मरण के बंधनों से मुक्त हो जाता है ऐसा माना जाता है

। इसलिए काशी में मृत्यु को प्राप्त होना साक्षात मोक्ष प्राप्त होने के सामान माना जाता है। इसीलिए यहां पर बड़ी संख्या में शव दाह संस्कार के लिए लाए जाते हैं।

प्राचीन काल मे दक्षिण भारत में यह परंपरा थी कि जब व्यक्ति काफी वृद्ध अवस्था को प्राप्त हो जाता था तो वह मोक्ष की प्राप्ति के लिए काशी की यात्रा के लिए निकल जाता था। इस यात्रा का उद्देश्य काशी में प्राण त्याग करना होता था ताकि उसे मोक्ष की प्राप्ति हो सके ।

काशी को प्राचीन काल से ही ऐसा महत्व प्राप्त है.....

मैं उसी घाट पर बैठा हुआ था !
बाबा विश्वनाथ के दर्शन कर लेने के बाद मन में जो अभूतपूर्व शांति का आभास उत्पन्न होता है, उसी एहसास के साथ !
गंगा के जल को !
उसकी उभरती हुई लहरों को देखता हुआ !
शांति के साथ बैठा हुआ था .....

उसी समय गिरधारी आकर मेरे दाहिने तरफ बैठ गया।

वह मुझसे कुछ दूरी पर बैठा था ।
उसके अंदर जिस प्रकार के विचारों का आलोडन विलोड़न चल रहा था उसका प्रभाव मुझ तक पहुंच रहा था । जब आप साधनाएं करते हैं तो एक स्थिति के बाद आप अपने आसपास के लोगों के भाव से अवगत होना प्रारंभ हो जाते हैं । जब कोई व्यक्ति बहुत ज्यादा विचलित या परेशान होता है बहुत ज्यादा दुखी होता है तो उसके मस्तिष्क में चल रहे विचारों का प्रवाह उसके अंदर की भावनाओं का प्रभाव आपको भी प्रभावित करने लगता है । इससे बचने के लिए सभी साधु सन्यासी या सिद्ध पुरुष समाज से दूर हटकर रहते हैं ।

गिरधारी के अंदर चल रहे अंतर्द्वंद का प्रभाव मुझे अपने मानस पटल पर भी पडता हुआ लगने लगा । इसलिए मैं अपने विचार समुद्र से बाहर निकल आया और उसकी ओर देखने लगा .....
मन में उमड़ आई किसी अज्ञात प्रेरणा के चलते मैंने उससे पूछा - क्या बात है ? तुम इतने परेशान क्यों हो ?
प्रश्न से गिरधारी घबरा कर इधर-उधर देखने लगा ।

उसके सामने एक धुंधली वायवीय आकृति दिखाई दे रही थी, जिसे देखकर मैं समझ गया कि यह कोई पैशाचिक शक्ति है, जिसे देखकर वह घबरा रहा था और मेरे प्रश्नों का उत्तर देने से हिचक रहा था ।
वह कभी उसकी ओर देखता और कभी मेरी ओर ।
काफी देर तक यही स्थिति बनी रही !
उसके भय से शायद वह कुछ भी कहने से रुक रहा था .....

मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और काली मिर्च के दो-तीन दाने मेरे हाथ में आए । भैरव मंत्र का उच्चारण करते हुए मैंने उन दानों को उस आकृति की तरफ उछाल दिया । पटाक की आवाज के साथ वह आकृति वहां से विलुप्त हो गई .....

मैने हवा में अपना हाथ उठाकर तीन चुटकी बजाई । इसका मतलब यह होता है कि जहां हम बैठे हैं उसके 10 फीट के दायरे में कोई भी अशुद्ध शक्ति नहीं आ सकती.....

इस प्रकार से आकृति को विलुप्त होते देखकर वह आश्चर्य से मुझे देखने लगा । मैंने सामान्य कपड़े पहने हुए थे और किसी भी तरह से साधक या तंत्र विद्या की जानकारी रखने वाला व्यक्ति नहीं दिख रहा था । इसलिए शायद उसने मुझसे इस प्रकार के कृत्य की अपेक्षा नहीं की थी ।
आकृति के इस प्रकार गायब हो जाने पर उसे अब भी विश्वास नहीं हो रहा था .....
वह काफी देर तक इधर उधर देखता रहा जैसे उस आकृति के वापस आ जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो । पाँच सात मिनट तक जब वह आकृति वापस दिखाई नहीं दी तो वह निश्चिंत हो गया और धीरे-धीरे सामान्य होने लगा । फिर अचानक वह मेरे पैरों से लिपट गया और जोर जोर से रोने लगा ....

इस प्रकार की स्थिति बड़ी अजीब होती है कि किसी सार्वजनिक स्थान पर कोई आपके पांव पकड़कर रो रहा हो.....

आसपास के लोग आश्चर्य से हम दोनों को देख रहे थे और धीरे-धीरे आसपास लोग इकट्ठा होने चालू हो गये ।

यह देख कर मैं थोड़ा असहज हो गया और मैंने गिरधारी को संभालने की कोशिश की ।

उसे उठाकर अपनी बगल में बैठा लिया । अब गिरधारी थोड़ा शांत हो चुका था । मैंने उसे उठाया और पास में चाय की दुकान पर ले गया । दो कप चाय मंगाइ और हम दोनों ने चाय पी । चाय पीते पीते वह पूरी तरह से सामान्य हो चुका था ।

गिरधारी बोला - भैया मैं बहुत परेशान हूं । इन लोगों ने मेरा जीना हराम कर रखा हुआ है । मैं किसी को यह बात बता भी नहीं सकता और उसे बर्दाश्त भी नहीं कर सकता .....

मैं आज गंगा मैया में डूब कर अपनी जान देने के लिए आया था तभी आप मिल गए । लगता है बाबा ने मुझे बचाने के लिए ही आपको भेजा है । गिरधारी ने अपनी परेशानी सुनाई और अपने साथ चांदनी महल चलने का प्रस्ताव रखा ।

मेरे पास भी कोई खास काम नहीं था तो मैंने हामी भर दी। हम दोनों चांदनी महल की ओर चल पड़े। लगभग आधे घंटे की दूरी पर चांदनी महल था। रास्ते में चलते चलते अब तक घटी हुई सारी घटनाओं के बारे में उसने बताया।

लाल रंग की साड़ी वाली का आना उसके लिए सुखद अनुभव की प्रारंभिक स्थिति थी लेकिन धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ने लगी और रात्रि में उसे क्षण भर भी आराम नहीं मिलता था। सुबह उसके अंगों से खून निकलने तक की स्थिति बन जाती थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसके शरीर से प्राणों को निचोड़ लिया गया हो। सुबह होने पर किसी निचुड़े हुए संतरे की तरह वह अपने आपको महसूस करता था। उसने एक दो बार महल छोड़कर भागने के विषय में भी सोचा। लेकिन अंधेरा होते ही वे शक्तियां उसे खींच कर वापस महल की ओर ले जाती थी और उसे वही करना होता था जो शक्तियां कराना चाहती थी .....

गिरधारी को ऐसा महसूस होने लगा था कि अब उसके प्राण नहीं बचेंगे। मनुष्य कितना भी मंदबुद्धि हो उसे

यह मालूम होता है कि उसे अपने प्राण बचाने हैं ।
यू समझ लीजिए कि जीवन की रक्षा करना जीव का प्राथमिक कर्तव्य है । यह उसके अंदर किसी मौलिक दायित्व की तरह कोड किया हुआ होता है । वह अपनी तरफ से हर प्रयास करता है कि वह अपने जीवन की रक्षा कर सकें । गिरधारी भी इसका अपवाद नहीं था....

गिरधारी की बात सुनकर मुझे भी आश्चर्य हुआ !
क्योंकि एक आत्मा के द्वारा इस प्रकार शोषण किए जाने का घटनाक्रम मैंने देखा हुआ था और उसके विषय में मुझे जानकारी थी !
लेकिन .....
एकाधिक आत्माओं के द्वारा इस प्रकार शोषण किया जाना मेरे जीवन का पहला अनुभव था ।

तंत्र साधना के क्षेत्र में कई प्रकार के लोगों से मिलना होता रहता है और चित्र विचित्र प्रकार के अनुभव भी होते रहते हैं । इसके अलावा ऐसी ऐसी घटनाओं से पाला पड़ता है जिसके बारे में आप सोच भी नहीं सकते !!

किसी सस्पेंस फिल्म से भी ज्यादा रहस्य और रोमांच से भरी हुई घटनाएं लोगों के जीवन में घटती रहती है !!! यह और बात है कि इनमें से अधिकांश कुछ लोगों के या पीड़ित व्यक्ति के करीबी लोगों के पास ही रहस्य बन कर रह जाती हैं ।

इन घटनाओं से जिन लोगों को गुजरना पड़ता है, उनके अनुभव सुनना भी किसी अद्भुत रोमांचक फिल्म को देखने से ज्यादा रोचक रहस्यमय और मन को हिला देने वाला होता है ।

गिरधारी की कहानी भी कुछ-कुछ उसी श्रेणी की थी .....

शाम के लगभग छह बजे के आसपास हम लोग चांदनी महल पहुंच गए ।

धनतेरस का दिन था !

इसलिए हर तरफ रोशनी बिखरी हुई थी । चाँदनी महल शहर से थोड़ा सा हटकर था । महल काफी पुराना लग रहा था ! महल को देखकर ऐसा लगता था कि कम से कम सौ सवा सौ साल पुराना महल होगा ! उसकी हालत देखकर और बनावट देखकर ऐसा लग रहा था

कि कभी वह बेहद खूबसूरत रहा होगा ! महल के ऊपर यह उक्ति सही बैठती थी कि :-

खंडहर के निशान बताते हैं कि इमारत

कभी बुलंद हुआ करती थी ! ! !

वह तीन मंजिला था ! वह अपने जमाने में बेहद भव्य और शानदार रहा होगा । फौजदार के परदादा वनराज शर्मा के समय यह महल बना था । उनकी बनारस के पास जमीदारी थी । उनके पास लगभग 200 गांव की जिम्मेदारी थी । फौजदार शर्मा के परदादा बहुत ही कुख्यात जमींदार हुआ करते थे । यह महल उन्हीं के समय बनाया गया था वह बेहद कठोर और निर्दयी किस्म के प्राणी थे ।

जमींदारी का मतलब होता है कि जिस इलाके की जिम्मेदारी आपकी हो उस इलाके से कर इकट्ठा करना आपकी जिम्मेदारी होती है । अंग्रेजों द्वारा तय कर अंग्रेजों को देना पड़ता था और उसके बाद जो बचा हुआ कर होता वह जमींदार का होता था । इसका मतलब यह था कि जितना ज्यादा आम आदमी को निचोड़ पाए , जमींदार को उतनी ही ज्यादा आमदनी होती थी ।

निचोड़ने के मामले में वनराज का कोई जवाब नहीं था वह इतना दबाव बना देता कि किसान पिस कर रह जाता था ...।

बातों बातों में चांदनी महल के अंदर हम लोग प्रवेश कर चुके थे । अंदर की भव्यता को देख कर मैं दंग रह गया ! पुराने महल और पुरानी इमारतें जितनी रहस्यमय होती है उतनी ही सुंदर भी होती है उन्हें देखना भी अपने आप में एक अद्भुत अनुभव होता है ।
चांदनी महल भी गजब का महल था ! मैं सोच रहा था कि उन शिल्पकारों और मिस्त्रीयों ने कितनी मेहनत से इतना सुंदर महल बनाया होगा । वहां पहुंचने के बाद मैंने महल को पूरा देखने की इच्छा व्यक्त की !
गिरधारी ने पहले मुझे महल का बाहरी हिस्सा पूरा घूम कर दिखाया । महल लगभग एक एकड़ जमीन पर बना हुआ था । चारों तरफ 10 से 12 फीट ऊंची पत्थर की बनी हुई दीवाल थी । दीवाल की चौड़ाई लगभग एक से डेढ़ फीट की थी । मुख्य दरवाजा लोहे से बना हुआ था । उसकी ऊंचाई भी लगभग 10 फीट के आसपास रही होगी । महल के पीछे की तरफ खुली जगह थी

जहां घास उगी हुई थी । दक्षिणी कोने में एक छोटा सा समाधि जैसा बना हुआ था । गिरधारी ने बताया कि वह वनराज की समाधि है ।

बाहर की सारी चीजों को देख लेने के बाद हम अंदर आए अंदर में बहुत सारे कमरे थे जिनमें से कुछ बंद थे । जो कमरे खुले हुए थे उनमें मैं गिरधारी के साथ गया । नीचे के मंजिल में अर्थात ग्राउंड फ्लोर पर बने हुए चार कमरे का इस्तेमाल गिरधारी कर रहा था । बाकी कमरे बंद थे उनमें से कुछ में ताले भी पड़े हुए थे जिसे खोलने की इजाजत गिरधारी को भी नहीं थी । इसलिए वह कमरे हम नहीं देख पाए ।

उसके बाद सीढ़ियां चढ़कर हम दूसरी मंजिल पर पहुंचे । गिरधारी ने बताया कि आमतौर पर वह ऊपर की मंजिल पर नहीं आता है । दूसरी मंजिल पर पहुंचते ही मुझे आभास हो गया कि इस स्थान पर बहुत सारी शक्तियां मौजूद है और इसके पीछे जरूर कोई लंबी कहानी होगी । ऊपर की मंजिल में अधिकांश कमरे खुले हुए थे और उनकी दीवाल जैसा कि आमतौर पर

होता है जर्जर हो चुकी थी । तीसरी मंजिल का हाल भी कुछ ऐसा ही था ।

दूसरी मंजिल में एक कमरा ऐसा था जो बाकी कमरों से हटकर था । वह सबसे आखरी छोर पर बना हुआ था और ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे विशेष रूप से इस प्रकार का बनाया गया हो । उसके सामने एक लंबा गलियारा था । उस गलियारे से होकर वहां तक पहुंचना पड़ता था । गलियारे में रुक कर मैंने उस कमरे की ओर बढ़ना चाहा लेकिन गिरधारी ने मुझे रोक दिया । उसने कहा - वह मालिक का कमरा है । उधर आप नहीं जा सकते ।

मैंने उससे कहा - अगर मैं उसके सामने तक जा सकूं तो मुझे उस कमरे के विषय में भी कुछ जानकारी हो पाएगी । लेकिन गिरधारी फौजदार से इतना डरता था कि वह मुझे उधर जाने देने के लिए राजी ही नहीं हुआ । इसलिए वहां से मुझे वापस लौटना पड़ा ।
उस कमरे के आसपास मुझे विचित्र किस्म की आकृतियां दिखाई दे रही थी । जिसके आधार पर मुझे

ऐसा लग रहा था कि सारी समस्या की जड़ उस कमरे मे होनी चाहिए....
उस स्थान पर मुझे बेहद भारीपन महसूस हो रहा था । ऐसा तभी होता था जब कुछ नकारात्मक शक्तियां इस स्थान पर मौजूद हैं । यह भारीपन सामान्य से बहुत ज्यादा था और मुझे समझ में आ रहा था कि समस्या ज्यादा ही गंभीर है ।

एक पल को मेरे मन में यह विचार भी आया कि मैं किस चक्कर में फस रहा हूं । मैं चार दिन की छुट्टी में यहां भगवान काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए आया था । बड़े आराम से 4 दिन भगवान काशी विश्वनाथ और बाबा भैरव नाथ के दर्शन करता ! गंगा माई के तट पर बैठकर लहरों के उन्मुक्त दर्शन करता और उन मीठी यादों को लेकर वापस लौट जाता ।
कहां उसकी जगह एक अनजान आदमी के चक्कर में बेवजह की मुश्किल को अपने सर पर लाद रहा हूँ । इस खंडहर नुमा रहस्यमय महल के भूत पिशाच को साधने की कोशिश करने वाला हूं । जिसमें पता नहीं कितना

समय लग जाएगा । मन में इस प्रकार के नकारात्मक विचार कुछ क्षणों के लिए आ ही जाते हैं ।
लेकिन.....
जब आप साधना के मार्ग पर निकल जाते हैं तो आपके हाथ में बहुत कुछ नहीं होता है.....
आपको वह करना पड़ता है जो समय आपसे करवाता है या महामाया की इच्छा होती है ।

मैं भी वैसी ही है परिस्थिति में आकर फंसा हुआ था । मैंने सोचा कि अचानक भगवान काशी विश्वनाथ के दर्शन की इच्छा का मन में पैदा होना.....
बनारस आना.....
और घाट पर गिरधारी से मेरी मुलाकात होना !
किसी पूर्व निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होगा और मुझे इस व्यक्ति के लिए कार्य करना ही पड़ेगा ।

यह विचार मन में आते ही मैंने नकारात्मक विचारों को सिर से झटका और आगे के कार्य में लग गया ।

उसके बाद हम महल की छत पर गए । महल की छत की अवस्था भी काफी अच्छी थी । उसे देखकर ऐसा

नहीं लगता था कि हम इतनी पुरानी इमारत की छत पर खड़े हैं ।

मैं छत पर रुक गया और गिरधारी को कहा - कुछ देर मुझे यहां बैठकर समस्या का पता लगाने दो ! तब तक तुम दो अनार और 11 नींबू की व्यवस्था करो ।

गिरधारी चला गया !
दरअसल मुझे उन चीजों की जरूरत नहीं थी , लेकिन मैं एकांत चाहता था ताकि वास्तविकता जानने के लिए कपालिनी का आह्वान कर सकूं । गिरधारी मुझे वहां छोड़कर चला गया । मैंने अपनी थैली में से आसन निकाला और उसे बिछाकर वहां बैठ गया ।
किसी भी समस्या को हल करने से पहले उस समस्या की जड़ तक पहुंचना जरूरी होता है । अगर आप समस्या का कारण निकाल लें तो समस्या को हल करने में आसानी हो जाती है । कपालिनी को बुलाने का मेरा उद्देश्य यही था कि मैं जान सकूं कि आखिर वह कौन से कारण है जिसकी वजह से ये पैशाचिक शक्तियां यहां पर विद्यमान है.....

कपालिनी ने जो बताया वह बेहद दुखदाई और भयानक था.....

फौजदार के परदादा वनराज बहुत ही निर्दयी और क्रूर प्रवृत्ति के आदमी थे । साथ ही एक नंबर के शौकीन । उसको सभी प्रकार के नशे की आदत थी और साथ ही औरत उनकी कमजोरी थी । महिलाओं के साथ क्रूर व्यवहार करके उन्हें अपनी वासना का शिकार बनाना उनका प्रिय शगल था.....

कुल मिलकर वे ऐसे आदमी थे जिन्हें दूसरों की आंखों में आंसू देखने में और उनकी चीखें सुनने में मजा आता था.....

ऐसे लोग हर युग में पाए जाते हैं ! उनका शिकार बनते हैं बेहद सीधे-साधे और मासूम से लोग !! जो उनका विरोध नहीं कर पाते या उनका विरोध करने की स्थिति में नहीं होते । जमींदार होने के नाते उनके शिकार बनते थे .....
मासूम सीधे-साधे किसान .....

वनराज किसानों को प्रताड़ित करने में आनंद महसूस करते थे । उस समय सिंचाई के साधन बहुत ज्यादा विकसित नहीं थे और मूल रूप से बरसात वाली फसल ही प्रमुख फसल हुआ करती थी । दो सौ गांव की जमींदारी वनराज के पास थी । उन सारे गांव में उनका दबदबा चलता था । दबदबा ऐसा कि जब वह गांव में पहुंचते थे तो सारा गांव इकट्ठा हो जाता था ।

किसी की मजाल नहीं थी कि वह उनसे नजर उठा कर बात कर सके ।
नजर उठाने का मतलब होता ...
साथ चल रहे नौकरों या लठैतों की लाठी का शिकार बनना .....
और वह भी तब तक .....
जब तक आदमी अधमरा ना हो जाए ।

यह एक प्रकार का मानसिक दबाव जैसा होता है ।
आप सैकड़ों लोगों की भीड़ में किसी एक आदमी को बुरी तरह से पीट दीजिए और उसके बाद उस भीड़ में से कोई भी आदमी आप का विरोध करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा ।

मुहल्ले में या शहर में दादागिरी करने वाले गुंडे भी इसी टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते हैं । वह किसी एक व्यक्ति या घटना को इतनी क्रूरता के साथ अंजाम देते हैं कि कई सालों तक लोग उसको याद करके डरते रहते हैं और उसकी दबंगई को स्वीकार करते रहते हैं ।

ऐसा दवाब अंग्रेज भी बनाया करते थे । अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर सवारी करते हुए आते और किसी भी निर्दोष व्यक्ति को पकड़ कर उसकी जबरदस्त पिटाई किया करते थे । हल्की गलती होने पर भी उसकी इतनी पिटाई कर दिया करते थे कि उसको देखकर बाकी लोग सहम जाते थे और किसी प्रकार की गुस्ताखी करने की हिम्मत नहीं करते थे ।

वनराज भी उसी सिस्टम को फॉलो करता था । वह किसी गांव में गया ....
तो.....
उस गांव में किसी न किसी आदमी को कोई न कोई कारण बताकर पीटना एक सामान्य घटना थी । गांव वाले भी इसके लिए तैयार रहते थे कि कहीं कोई गलती

ना हो जाए और मालिक के हाथ पिटाई की नौबत ना आए ।

लेकिन वनराज कुछ ना कुछ कारण ढूंढ ही लेता था उसके बाद सामने वाले कि इतनी पिटाई होती थी कि उसके जिस्म से खून निकल आता था । उसी अवस्था में उसे छोड़ दिया जाता और कई बार अगर कमजोर व्यक्ति होता तो उसके प्राण भी निकल जाते थे.....

वनराज को कर देना जरूरी था । अगर कोई परिवार कर नहीं दे पाता तो उस परिवार की महिला चाहे अविवाहित हो, या विवाहित स्त्री हो उसे वनराज के नौकर उठा लेते .....

उसे चांदनी महल पहुंचा दिया जाता ।

उस स्त्री के वापस जाने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था ।

हां उस परिवार का कर माफ हो जाता था .....

चांदनी महल की केयरटेकर थी ..... चांद बेगम !

चांद बेगम एक तवायफ थी । जिसके लखनऊ में बड़े चर्चे थे । एक बार वनराज लखनऊ गया हुआ था ।

वहां किसी ने चांद बेगम के बारे में उसे बताया वनराज चांद बेगम के कोठे पर पहुंच गया.....

चांद बेगम की जवानी और अदाएं उसे इतनी पसंद आई कि उसने कोठे की मालकिन से चांद बेगम को मनचाही रकम देकर खरीद लिया !!

अब चांद बेगम वनराज की हो चुकी थी.....

वनराज चांद बेगम पर फ़िदा था.....

चांदनी महल में उसने उसे रखा और राते रंगीन करने लगा.....

चांद कोठे पर पली-बढ़ी थी ...

बचपन से ही उसने कई प्रकार के दृश्य देखे थे जिसमें बच्चियों और युवतियों को अलग-अलग तरीकों से धंधे में झोंका जाता था ।

चाँद बेड़िया समाज की लड़की थी ...

बेड़िया-बाछड़ा समुदाय भारतीय व्यवस्था का वह हिस्सा है, जो सबसे निचले दर्जे का माना जाता है । यह हमेशा जमींदारों , रजवाड़ों और धनिकों के सानिध्य में फलता-फूलता रहा ।

भारत में अंग्रेजों के शासन से पहले जब मुगल सत्ता का अधिपत्य था, तब से यह समाज मनोरंजन यानि नाच गाना और नाटक नौटंकी आदि करके पेट पालता रहा है । नौटंकी में पहले पुरुष ही महिला का भेष धर कर खेल-तमाशे दिखाते थे । कुछ परिवारों ने अपनी बेटियों को इसमें शामिल किया । धीरे धीरे यह चलन मे आ गया ।

मप्र का राई लोकनृत्य इसी समाज की देन माना जाता है । जिसमें ताल देने वाला एक पुरुष होता है और उसके साथ कई नर्तकियाँ घूंघट ओढ़कर नाचती हैं । मालवा में यह कला आज भी जीवित है और कलाकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति पा चुके हैं ।
समय के साथ साथ यह चलन आगे बढ़ता गया !
नृत्य करना समाज की महिलाओं का काम बना और इसे देखकर मनोरंजन करना जमींदारों का ....
मुगल शासन आते तक इस शौक में इजाफा होने लगा.....

इतिहासकारों और जानकारों का यह मानना है कि काफी समय तक नृत्य-संगीत की कला के साधक बने

बेड़िया-बाछड़ा समाज में देह व्यापार की दस्तक नहीं हुई थी । वे शादी-ब्याह, बच्चे जन्म और शुभ कामों में नाचने का काम करते और पेट पालते रहे ।

कुछ लोगों का मानना है कि इनके देह व्यापार का प्रारंभ ताज महल से जुड़ा हुआ है और इनके देह व्यापार में उतरने की कहानी मुगल शाहजहां से जुड़ी हुई है । इस कहानी की सत्यता की जांच अब तक नहीं की गई है । समुदाय के लोगों का मानना है कि देह व्यापार का काम तभी शुरू हुआ । जब आगरा में मुमताज महल की मौत के बाद 1632 में ताजमहल का निर्माण शुरू हुआ । माना जाता है कि शाहजहां ने इस काम को पूरा करने के लिए दुनिया भर से सबसे अच्छे कारीगरों को लाने का हुक्म जारी किया था । ताजमहल बनवाने वाले मुख्य आर्किटेक्ट अलग-अलग हिस्सों से इन मजदूरों को जमा कर लेकर आए थे ।

इन मजदूरों के ऊपर कई प्रकार की शर्तें लागू थी उनमें से एक शर्त के अनुसार मजदूर कहीं और काम नहीं कर सकते थे । यानि उनका दिन और रात केवल ताजमहल के निर्माण के लिए थी । ऐसा इसलिए किया गया

था ताकि ताजमहल के जैसा कोई और इमारत ना बन सके । इस विषय में यह भी कथा प्रचलित है कि बनाने वाले मजदूरों के हाथों को काट दिया गया था ताकि ताजमहल के बाद ऐसी कोई इमारत ना बन सके ।
इस प्रकार की कई कथाएं प्रचलित है ।
मुगलों की क्रूरता के कई किस्से मशहूर हैं उन पर चर्चा फिर कभी ....

ताजमहल निर्माण के लिए लाए गए मजदूरों का मन लगा रहे इसलिए नाटक-नौटंकी का इंतजाम किया गया । हर रोज नए करतबबाजों को तलाशना मुश्किल था, इसलिए उस्ताद ने मालवा से बेड़िया-बाछड़ा समाज के लोगों को आगरा के आसपास ही बसा लिया । मजदूर जो वहां पर आए थे उनको मनोरंजन के साथ साथ देह सुख की भी आवश्यकता थी जो इसका कारण बनी । खेल, तमाशे और संगीत के बीच देह व्यापार की शुरुआत भी हो गई ।

ताजमहल का निर्माण लगभग 20 साल चला, तब तक बेड़िया—बाछड़ा समुदाय की एक पीढ़ी गुजर गई.....

देह व्यापार अब समुदाय के क्रियाकलापों का एक हिस्सा बन गया था.....

ताजमहल का निर्माण पूरा होने के साथ मजदूर भी वहां से चले गए और उसके बाद इनके लिए कमाई का जरिया समाप्त हो गया । ताजमहल का निर्माण पूरा होने के साथ ही समुदाय के कुछ लोग आगरा में ही बस गए और बाकी मालवा लौट आए ।

जब वे लौटे तो संगीत के साथ आ गया था देह व्यापार ! संगीत कार्यक्रम के लिए जहां ग्राहक तलाशना मुश्किल था वहीं देह व्यापार में ग्राहकों का तांता लग जाता है .....

इसका एक उदाहरण आप ट्रेन में देख सकते हैं जहां एक के युवा स्त्री अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ नट वाला कार्यक्रम दिखाती है .....

वह बच्चे गोल-गोल छल्लो के भीतर से अपने शरीर को अलग-अलग प्रकार से घुमा फिरा कर निकालते हैं और कुछ गाने और नृत्य दिखाते हैं ।

लेकिन हमारी जेब से उनके लिए एक रुपए के सिक्के से बड़ा कुछ नहीं निकलता है .....

हाँ .....
उस युवा स्त्री के फटे हुए कपड़ों से झांकते हुए जिस्म को आंखों से निगल जाने की कोशिश करते हुए अधिकांश पुरुष आपको दिखाई दे जाएंगे ....
उन सारी चीजों के बीच में वह अपने बच्चों के साथ यह नौटंकी करती है और गिनती के कुछ सिक्कों को लेकर अपना पेट भरने का प्रयास करती है ।
वही अगर.....
वह अपने जिस्म को प्रदर्शित करके कुछ करें तो यकीन मानिए सौ सौ के नोटों की बारिश हो जाएगी .....
यही वास्तविक नग्न सत्य है .....

तो चर्चा बेड़िया समाज के लोगों की आगरा से वापसी के बाद की स्थिति की हो रही थी ।
आगरा से वापसी के बाद इन परिस्थितियों को देखकर बेड़िया समुदाय के लोगों ने भी अपना तरीका बदल लिया । देखते ही देखते समाज के पुरुषों ने वाद्य यंत्रों से किनारा किया और दलाली के काम में उतर गए ।
आज मालवा के मंदसौर में इस समाज की मुख्य देहमंडी है ।

चाँद इसी समुदाय की लड़की थी । चांद का बाप खुद उसके लिए ग्राहक तलाश कर लाता था । कोठे की मालकिन ने 15 साल की उम्र मे ही उसकी खूबसूरती देखकर एक बड़ी रकम देकर उसे खरीद लिया था और तब से वह उस कोठे की जीनत बन गई थी .....
वह ऐसी परिस्थितियों में पली बढ़ी थी, इसलिए कोठे का कार्य और वहाँ किए जाने वाले समस्त प्रकार के कर्म और दुष्कर्म उसके लिए सामान्य सी बात थी .....
धीरे-धीरे समय गुजरा और चांद बेगम को कर के रूप में लाई गई महिलाओं को वनराज के सामने पेश करने की जिम्मेदारी भी मिल गई और वह इस जिम्मेदारी को बखूबी निभाती थी ।

वह एक तवायफ थी और उसने बचपन से इस प्रकार की घटनाएं देखी हुई थी, इसलिए उसे इसमें कुछ भी अजीब नहीं लगता था । गांव से उठा कर लाई गई लड़कियों युवतियों और महिलाओं को सजा संवार कर वनराज के लिए वह पेश करती थी .....
वनराज जी भर कर उसके यौवन का उपयोग करता !

उसके बाद उसके कारिंदे, उसके लठैत और नौकर उस मजबूर स्त्री की देह पर किसी जानवर की तरह टूट पड़ते । सारी रात और कभी-कभी दिन रात यह सिलसिला चलता रहता ....

इस बेरहम अत्याचार के चलते स्त्रियां मृत्यु को प्राप्त हो जाती । उनको महल के पिछवाड़े की तरफ बने हुए मैदान में गाड़ दिया जाता था ।

एक बार वनराज अपने शिकार पर निकला हुआ था । बिलौरी गाँव मे उसे एक ऐसा बुजुर्ग किसान गोकुल मिल गया जो कर नहीं दे पा रहा था और उसके परिवार में कोई भी महिला नहीं थी ।

केवल 7 साल की एक बच्ची थी .....

उन दुष्टों ने उस बच्ची को ही उठा लिया था और उसे लाकर चांद बेगम को सौंप दिया ताकि उसके बड़े होने पर वह वनराज के सामने प्रस्तुत की जा सके ।

चांद बेगम ने उसे अपने पास रखा !

उसका पालन पोषण करने लगी !!

हर औरत के अंदर एक मां होती है और वह मां कभी ना कभी जागृत जरूर होती है !!
माला की देख रेख करते करते चांद बेगम के अंदर का मातृत्व भी जाग गया था .....
लगातार लड़कियों और महिलाओं का आना जाना वहां होता रहता था । इसलिए कुछ दिन बाद माला के विषय में लोग भूल गए ।

चांद बेगम ने उसे एक कमरे में छुपा कर रखना चालू कर दिया था । जब सारे लोग चले जाते तभी वह उसे कमरे से बाहर निकालती.....
बाकी सारा समय माला उसी कमरे में रहती । चांद बेगम ने उसे सख्त ताकीद की हुई थी कि अगर वह उस कमरे से बाहर निकली तो उसे वे लोग मार देंगे । महल में कई प्रकार की चीखें गूंजती रहती थी , इसलिए बच्ची डर के मारे कमरे से बाहर नहीं निकलती थी ...

इस प्रकार से 7-8 साल गुजर गए । बच्ची अब लगभग 14-15 साल की साल की हो चुकी थी । जब घर में कोई नहीं रहता था .....

तब वह महल में इधर उधर खेलती कूदती और घूमती रहती.....
लेकिन जैसे ही किसी के आने की आहट होती चांद बेगम के निर्देशानुसार वह अपने कमरे में जाकर छुप जाती ....

वनराज का एक कुटिल सहायक मुख्तार था जो उसी के समान दुष्ट भी था और कामुक भी .....
वनराज के उपभोग के बाद वही उन स्त्रियों का शोषण करता फिर बाकियों का नंबर आता .....
एक रात शराब के नशे में धुत होने की वजह से वह महल से वापस नहीं जा पाया और एक कमरे में सो गया । बाकी सारे लोगों को लगा कि मुख्तार अपने घर की ओर निकल गया है, लेकिन वह नशे में इतना धुत्त हो गया था कि उसे बाहर निकलते भी नहीं बना ।
वह नीचे उतरते समय किनारे पर बने हुए कमरे में घुस कर सो गया !
सो गया कहने के बजाय जमीन पर बेहोश हो गया कहना ज्यादा उचित होगा । जब वह सुबह उठा तो गलती से माला उसके सामने दिखाई दे गई ।

वह समझ गया कि यह वही 7 साल की बच्ची है जिसे चांद बेगम को सौंपा गया था ।

उसने चांद बेगम को तलब किया और अगली रात वनराज के बिस्तर पर माला को प्रस्तुत करने का हुक्म दे दिया ।

मुख्तार का हुकुम टालना किसी के लिए संभव नहीं था, क्योंकि वह वनराज का मुंह लगा था और उसके द्वारा कही गई बात वनराज के द्वारा कही गई बात के समान ही चांदनी महल में स्वीकार्य होती थी .....
चांद बेगम समझ गई कि अब उसकी बच्ची नहीं बच सकती.....
उसी रात चांद बेगम ने बच्ची को जहर दे दिया और खुद भी जहर खाकर जान दे दी !

मुख्तार इतना दुष्ट था कि उसने दफनाने से पहले उस मरी हुई बच्ची का भी उपयोग किया !
चांद बेगम की आत्मा उस समय मुक्त नहीं हुई थी और उसका पहला शिकार बना मुख्तार.....

महल के पिछवाड़े में ठाकुर के नौकर दोनों की लाश को ठिकाने लगाने का इंतजार कर रहे थे और मुख्तार छत पर खड़ा हो कर देख रहा था। ....

शाम का समय था !
अचानक न जाने कैसे वह छत से नीचे गिर पड़ा उसकी चीख सुनकर नौकर उसकी तरफ दौड़े !
काफी चोट लगी थी !

मुख्तार को मिशनरी अस्पताल में भर्ती कराया गया ...
वनराज का मुंहलगा था इसलिए वनराज ने उसके इलाज की व्यवस्था कर दी।
वनराज को 1 महीने के बाद होश आया , लेकिन उसके शरीर में किसी प्रकार की हरकत नहीं हो रही थी !
विस्तृत जांच से पता चला कि गले की एक नस दब गई थी। जिसकी वजह से शरीर के निचले हिस्से पर उसके मस्तिष्क का नियंत्रण छूट गया था ।
हमारी रीढ की हड्डी का ऊपरी हिस्सा गर्दन के पीछे से गुजरता है । हमारी रीढ़ की हड्डी दरअसल एक हड्डी नहीं है, बल्कि छोटी-छोटी हड्डियों का एक समूह है जो आपस में अस्थि मज्जा और अन्य नाड़ियों के द्वारा जुड़े

हुए होते हैं। इसमें से 12 हड्डियां पीठ की तरह होती हैं।

पांच हड्डियां कमर के पास होती हैं जिसे L1 से L5 कहा जाता है। इसमें से 7 हड्डियां गर्दन की तरफ होती हैं जिसके साथ वे नाडिया चलती है जो मस्तिष्क के द्वारा दिए जाने वाले संकेतों का आदान प्रदान करती हैं। यानि मस्तिष्क के संकेतों को शरीरी के हिस्सों तक पहुंचाने का प्रमुख कार्य रीढ की हड्डी का ही होता है । यदि किसी कारण से गर्दन के पास वाले हिस्से में इस प्रमुख नस का हिस्सा दब जाए तो मस्तिष्क से भेजे जाने वाले संकेत शरीर के अंगों तक नहीं पहुंच पाते हैं और वह काम करना बंद कर देते हैं। इसे ही हम लकवा भी कहते हैं। यह एक ऐसी स्थिति है जब आपका अंग पूरी तरह से स्वस्थ है, लेकिन उसे क्या करना है इसे बताने वाले संकेत उस तक पहुंच नहीं पाते हैं और वह बेजान होता चला जाता है।

मुख्तार के गर्दन के नीचे का पूरा हिस्सा लकवा ग्रस्त हो गया अर्थात अब वह अपने शरीर के सिर के नीचे वाले हिस्से में किसी भी प्रकार का मूवमेंट नहीं कर सकता था । चिकित्सा विज्ञान ने बहुत ज्यादा तरक्की नहीं की

थी और उपलब्ध संसाधनों के द्वारा जितना हो सकता था उतना इलाज करने की कोशिश की गई। दो महीने के प्रयास के बाद डॉक्टरों ने हाथ जोड़ लिया और कहा कि इसका इलाज संभव नहीं है और इसे घर ले जाकर आवश्यक दवाइयां देते रहना पर्याप्त होगा ।

इधर चांद बेगम की मौत के साथ चांदनी महल में रहस्यमई घटनाओं का दौर भी चालू हो गया ...
इनमें से सबसे अजीब था अचानक से किसी भी आदमी का वहां से गायब हो जाना .....
कई बार इस प्रकार की घटना होने लगी ।
अचानक घर का कोई नौकर गायब हो जाता और जब वापस मिलता तो ऐसा प्रतीत होता जैसे उसके शरीर से सारा खून चूस लिया गया हो , एक-दो दिन के अंदर ही उसकी मृत्यु हो जाती.....
जब तीन चार नौकरों के साथ ऐसा हुआ तो धीरे-धीरे नौकरों में खौफ घर करने लगा ....
समस्या के समाधान के लिए तांत्रिक को बुलाया गया !

तांत्रिक का नाम था भुतहा बाबा !

भुतहा बाबा भूत पकड़ने में माहिर आदमी था और वह भूतों को अपने नियंत्रण में लेकर उनसे नौकरों की तरह काम करवाता था !

यह बात सुनने में बड़ी अजीब लग सकती है लेकिन ऐसा कहा जाता है कि अगर कोई भूत को सिद्ध कर ले तो भूत किसी सेवक की तरह उसकी सेवा टहल करता है।

भूत बाबा के पास कई भूत थे जो उसके सेवक थे या एक तरह से कहिए कि उसके गुलाम थे। जो उसके इशारों पर सारा काम करते थे।

वह चांदनी महल के पास ही बने हुए एक दूसरे खंडहर नुमा हवेली में रहता था !

लोग उस हवेली को भूत बंगला कहते थे !

वह अंग्रेजों के द्वारा बनाया हुआ एक बंगला था जो खंडहर हो गया था !

उसे अंग्रेजों ने एबंडेंट याने खराब घोषित कर दिया था ! उसमें वह लोग नहीं रहते थे। उसी में भूत बाबा ने कब्जा कर लिया था।

इस प्रकार के कई इमारतें आपको रेल लाइन के बगल में भी दिखाई देंगी। जिन्हें रेलवे वाले ABANDONED घोषित कर देते हैं और फिर उसे रेलवे रहने के योग्य नहीं मानता है। जबकि एकबारगी देखने में वह इंसान के रहने के लायक लगता है।

उस भूत बंगले में अजीबोगरीब दृश्य देखने को मिलते। वहां एक चारपाई पर भुतहा बाबा आराम से पड़ा रहता था !

उस भूत बंगले में भुतहा बाबा के अलावा कोई भी दूसरा आदमी नहीं रहता था !

भूत बंगले में चार गाय थी !

हट्टी कट्टी मुस्टंड !

रसोई का धुआ भी वहां से निकलता हुआ दिखाई देता था, लेकिन कोई भी आदमी वहां पर दिखाई नहीं देता !

जब भी किसी को गायें दिखती तो उनके सामने हरी हरी घास कटी हुई पड़ी रहती !

जैसे ताजी-ताजी काटकर लाई गई हो, लेकिन उसे कौन लेकर आता है ?

यह एक रहस्य बना हुआ था !

कुछ लोगों ने इसकी जांच करने की कोशिश भी की थी। लेकिन वह घास को हवा में उड़ता हुआ आता देखकर बेहोश हो गए थे। उन्हें बेहोशी से होश में लाने में काफी प्रयास करना पड़ गया था !

इसी प्रकार गलती से एक आदमी उस भूत बंगले में चला गया था ! वहां जाकर उसने देखा कि चूल्हे में आग जल रही है और उसके ऊपर हांडी चढ़ी है। उस हांड़ी के ऊपर ढक्कन लगा हुआ है। बीच-बीच में ढक्कन उठाकर कोई देखता हुआ प्रतीत होता। ..... लेकिन वहां पर कोई आदमी नहीं था !
बीच में ढक्कन जरूर अपने स्थान से उठ जाता था !
ठीक वैसे ही जैसे माताएं बहने अपने चावल आदि को पका है या नहीं है देखने के लिए ढक्कन उठाती हैं !
दूसरे चूल्हे पर दूध एक भगोने में रखा हुआ था ! उसके देखते देखते दूध में उफान आने लगा ! आप सभी लोग जानते होंगे कि दूध में उफान आने के बाद वह ऊपर की तरफ उठता है और यदि उस समय चूल्हे की आंच को कम न किया जाए तो दूध उबल कर बर्तन से बाहर जमीन पर गिर जाता है।

उस चूल्हे के पास कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन दूध के उबलते ही उसके नीचे की लकड़ी किसी ने बाहर की तरफ खींच ली और उबला हुआ दूध नीचे बैठ गया ।

यह सब देख कर वह आदमी सर पर पांव रखकर भागा ! बड़ी मुश्किल से वह अपने घर के दरवाजे तक पहुंचा और वही बेहोश हो गया . उसके बाद जब उसे होश आया तो उसने सभी लोगों को यह घटना सुनाई !

कुछ लोग भूत बंगले का रहस्य जानने के लिए रात के समय बंगले में घुसे .. लेकिन वहां से वापस आने के बाद उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई और वे पागलों की तरह सड़कों पर घूमने लगे ।

रात को उस भूत बंगले से अजीब अजीब सी रोशनी भी दिखाई देती थी !
ऐसा लगता जैसे आग जल रही हो ....
इसके अलावा घुंघरू और पायल की आवाज भी सुनाई देती !

जैसे कोई महफिल सजी हुई हो और तवायफ नाच रही हो !
यह सब देखने जानने के बाद अधिकांश लोग उस भूत बंगले की ओर जाने से डरते थे !

लेकिन वनराज और भुतहा बाबा में अच्छी बनती थी !
इसके पीछे भी एक अजीब कहानी थी.....
भुतहा बाबा से वनराज की मुलाकात भी बड़े अजीब से हालात में हुई थी.....

कुछ साल पहले की बात थी.....
वनराज का ज्यादातर समय अपनी अय्याशी और बाकी कारनामों में बीतता था . ऐसे में उसे पता भी नहीं चलता था कि उसके घर में क्या हो रहा है
सब कुछ नौकरों के भरोसे चल रहा था। .....

ऐसा कहा जाता है कि
“राजा लता और स्त्री यह तीनों जो उनके करीब लगातार बना रहता है उसी के साथ हो जाते हैं....”
इसका थोड़ा विश्लेषण करू तो

पहला है राजा या आज के सन्दर्भ में राजनेता....

राजा का जो सबसे करीबी दरबारी होता है जो राजा का मुंह लगा होता है उसकी कही बातों को राजा सबसे ज्यादा तवज्जो देता है।
राजनेताओं के साथ जो अधिकारी लगातार बने रहते हैं उनकी बातों पर अधिकांश राजनेता आँखमूंदकर विश्वास करने लगते हैं .

दूसरा है लता या बेल
लता अर्थात बेल को उसके आसपास जो झाड़ी पेड़ रस्सी या कोई भी चीज दिखाई देती है वह उसके साथ लिपटकर आगे बढ़ती चली जाती है !
यह प्रकृति का सामान्य नियम है जिसे आप लोगों ने भी देखा होगा .....

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण है स्त्री !!!

आप लोगों ने भी इस प्रकार के कई किस्से पढ़े होंगे जिसमें बड़े धन्ना सेठ की पत्नी घर के ड्राइवर के साथ या किसी उच्च अधिकारी की पत्नी घर के नौकर के साथ भाग गई हो !!!!

इसके पीछे कारण यह होता है कि जो व्यक्ति स्त्री के पास होता है वह उसकी भावनाओं को अच्छे से समझता है !
स्त्री सहज ही भावुक होती है और जो उसकी भावनाओं को समझता है उसी को वह अपना मान लेती है !
फिर उसके सामने धन ! यश !! प्रतिष्ठा !!!
यह कुछ भी मायने नहीं रखता.....

इस प्रकार के अनेक उदाहरण इतिहास में मौजूद है।

तो हुआ यह कि वनराज की बहन वनजा और घर का नौकर मंगल दोनों लापता थे !

यह वनराज के लिए नाक का सवाल था !
उसने अपने कारिंदों को चारों तरफ दौड़ाया !
उन्होंने बनारस का चप्पा चप्पा छान लिया , लेकिन ना तो वनजा का पता चला और ना ही मंगल का !!

उसे किसी प्रकार दोनों का पता नहीं चल पा रहा था.....

गंगा नदी का घाट सभी का सहारा होता है। बनारस के लोगों की परेशानी का हल निकलने का सबसे उपयुक्त स्थान !

वनराज भी गंगा नदी के तट पर बैठा हुआ था !!

भुतहा बाबा अक्सर गंगा नदी के तट पर नंग धडंग पड़ा रहता था !

उसका प्रमुख अड्डा था मणिकर्णिका घाट !!

उस शाम वनराज एकदम परेशान घाट पर बैठा हुआ था !

तभी.....

भुतहा बाबा उसके सामने से गुजरा !

वनराज की तरफ देखकर वह खिल खिलाकर हंसा और बोला -लड़की ढूंढ रहा है ?

वनराज को लगा कि बाबा उसका मजाक उड़ा रहा है !

उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

कोई वनराज का मजाक उड़ा दे !

उसे देखकर हंस दे !

यह तो बर्दाश्त से बाहर की बात थी !

वनराज का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया।

उसने मयान से अपनी तलवार निकाली और बाबा की गर्दन को निशाना बनाकर चला दिया.....
वनराज का वार इतना जोरदार था कि बाबा की गर्दन कट कर अलग हो जानी थी.....
लेकिन जो हुआ.....
उसके बाद वनराज की आत्मा भी थरथरा गई।

क्योंकि .....
तलवार तो गर्दन के आर पार हो गई लेकिन भुतहा बाबा की गर्दन तो पहले की तरह ही थी !
उसका सर उसके धड़ पर ही जमा हुआ था !
उस पर कोई चोट का निशान दिखाई नहीं दे रहा था.....

यह देखकर वनराज की समझ में आ गया कि बाबा सामान्य आदमी नहीं है !
तलवार फेंककर उसने उसके पांव पकड़ लिए ....

बाबा भी उस दिन मस्ती में था, बोला - लड़की ढूंढने में मैं तेरी मदद करूंगा ! बदले में क्या देगा ?

वनराज बोला - मैं आपके रहने खाने की व्यवस्था कर दूँगा .

बाबा ने पूछा - कब तक ?

वनराज बोला - जब तक आप जीवित रहोगे !

बाबा ठठाकर हंस दिया, बोला - वादे से मुकरेगा तो नहीं !

वनराज बोला - "मर्द की जात एक ही बात", जबान दिया तो मुकरुँगा नहीं !

बाबा मुस्कुराया और बोला - लड़की तो तेरे घर में ही है !

यह सुनकर वनराज मन ही मन भुनभुनाया !

उसे लगा कि उसने गलत आदमी से बात कर ली .

वनराज वहां से चांदनी महल की ओर चला गया !

देर रात घर पहुंचा तो पता चला शाम को एक नंगा बाबा दौड़ता हुआ आया और घर के पिछवाड़े में बने सूखे कुएं में कूद गया !!

सारे लोग उस कुएं की तरफ दौड़े !

अंदर अंधेरा था इसलिए कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था !

जब तक मशाल की व्यवस्था की गई तब तक कुए से बाबा निकलता हुआ दिखाई दिया !!
उसके कंधे में वनजा पड़ी थी !!!
इस चमत्कार के बाद वनराज बाबा का मुरीद हो गया !

वनराज जबान का पक्का था । बाबा के लिए राशन की व्यवस्था वनराज बराबर कर देता था । वनराज ने उसे रहने के लिए चांदनी महल भी देना चाहा लेकिन बाबा को भूत बंग्ला ज्यादा पसंद था । इसलिए वह वही रहने लगा. .....
वनराज की समस्या हल हो गई थी और उसके पास ऐसे भी ढेर सारे काम थे तो कभी कभार बाबा से मुलाकात हो जाती दोनों अपने अपने ढर्रे पर चलते रहे !
चाँद बेगम प्रकरण के बाद जब एक एक करके दस बारह नौकर मर गए तो वनराज को बाबा की याद आई और उसने उसे बुलवा लिया.....

होने को तो बाबा इंसान था ।
लेकिन भूतों के साथ रहते रहते वह भी भूतों के जैसा ही हो गया था ।
वनराज के बुलावे पर वह चांदनी महल पहुंचा ।

समस्या के बारे में बताने से पहले ही वह सारी बात जानता था फिर भी उसने नौकरों की बात सुन ली और सभी को एक मोटी गाली दी और बाहर निकल जाने के लिए कहा ....

सारे नौकर वनराज की ओर देखने लगे !
वनराज ने सर हिलाकर इशारा किया और सारे नौकर महल से बाहर हो गए महल के अंदर केवल वनराज और बाबा बच गए ....

बाबा भोला - वनराज तेरे काले कारनामे बहुत लंबे हैं . तुझे इसका परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा यह आखरी बार है जब मैं तेरा काम कर रहा हूं . इसके बाद मुझसे किसी प्रकार की उम्मीद मत रखना .....
यह सुनकर वनराज थोड़ा विचलित तो हुआ, लेकिन उसे वर्तमान परेशानी से निजात पाना ज्यादा जरूरी था।
उसने बाबा की बात को टालते हुए समस्या का समाधान करने की प्रार्थना की।
बाबा ने वनराज से कहा - मुझे अकेला छोड़ दो !

चाँद बेगम की आत्मा को भुतहा बाबा ने अपने वादे के अनुसार एक बोतल में कैद कर दिया और उसे अपने साथ भूत बंगले में ले गया ....
इसके साथ चांदनी महल वापस सामान्य हो गया .
वनराज कीअय्याशियां फिर चालू हो गयी .....

उधर डॉक्टरों की राय पर मुख्तार के घर वाले उसे घर ले आए । वनराज ने हर महीने उसके इलाज के लिए धन की व्यवस्था कर दी जिसे लेने के लिए उसका खास नौकर बिलावल जाता था.....
मुख्तार जितना क्रूर बाहर था उससे कहीं ज्यादा क्रूर अपनी पत्नी के साथ था !
पत्नी बहुत सीधी-सादी महिला थी और उससे बेहद खौफ खाती थी !
उसने काफी दिनों तक उसका ध्यान रखा !
बिस्तर पर पड़ा होने के बाद भी मुख्तार की आदत नहीं गई थी !
अब वह शरीर से कुछ भी करने में असमर्थ था इसलिए हमेशा गाली गलौज करता रहता, ताना देता रहता कि तू बाहर गुलछर्रे उड़ाना बंद कर इस घर से निकल जा ।

इतना सब करने के बाद मुख्तार के मुंह से निकलने वाली गालियां और दुर्वचन सहन करना असंभव था और 6 महीने के बाद वह भी घर छोड़ कर चली गई !

अब उसकी देखभाल के लिए केवल उसका नौकर बिलावल था ।
उसे गंभीर कुष्ठ रोग हो गया था उसके शरीर से दुर्गंध आने लगी थी और उसके पास खड़े रहना भी मुश्किल हो गया था । बिलावल भी उसकी देखभाल करते करते परेशान हो चुका था । उसने मुख्तार की सेवा तीमारदारी करने का जिम्मा उठाया था जिसके बदले वनराज उसे पैसे देता था । वह एक हिजड़ा था जिसे सारी दुनिया और मुख़्तार ने भी बहुत अपमानित और प्रताड़ित किया था ।

पत्नी के जाने के बाद उसे आटे दाल का भाव पता चलने लगा, क्योंकि वह इतनी सारी गालियों को सुनने के बाद भी मुख्तार की सेवा करती थी और उसकी साफ-सफाई का भरपूर ध्यान रखती थी।

हफ्ते भर के अंदर बिलावल परेशान हो गया। मुख्तार की गंदगी साफ करने के बाद भी उसको गालियां ही सुननी पड़ती थी। कई बार उसका दिल करता कि एक पत्थर उठाकर मुख्तार के सर पर फोड़ दें और झगड़ा टंटा ही खत्म हो जाए। .....

लेकिन वनराज के पैसों का ध्यान आते ही वह अपने इस विचार को त्याग देता था। पत्नी के चले जाने से अब बिलावल को मुख्तार की साफ-सफाई का जिम्मा भी लेना पड़ा !

हफ्ते भर में ही वह उससे उकता गया और उसने उसके लिए दूसरा उपाय खोज लिया !

उसने एक भंगी को इस कार्य के लिए नियुक्त कर दिया ।

भंगी 2 दिन में एक बार आता और पूरे 2 दिन तक मुख्तार अपने ही मल मूत्र में लिपटा हुआ पड़ा रहता। धीरे-धीरे उसके शरीर की दुर्गति होने लगी ! उसे गंभीर कुष्ठ रोग भी हो गया। जिससे शरीर से मांस गलगल कर गिरने लगा।

इस स्थिति में भंगी भी उसे हाथ नहीं लगाता था और अपने झाड़ू से उसकी सफाई कर देता था ।
इसमें परेशानी ना आए इसलिए भंगी ने मुख्तार को पत्थर पर नंगे ही लिटाना प्रारंभ कर दिया ताकि पानी आराम से बहकर निकल जाए।

इस घटना को लगभग आठ दस महीने हो चुके थे मुख्तार लगभग मरण शैय्या पर पहुंच चुका था . घोड़े पर सवारी करने वाला अनेक महिलाओं के शरीर का जबरदस्ती सुख भोगने वाला व्यक्ति अपने ही मल मूत्र में लिपटा पड़ा था .....
संभवतः यह प्रकृति का न्याय था .....
उसकी इतनी दुर्गति हो चुकी थी कि वह स्वयं इच्छा रखने लगा था कि किसी प्रकार से ही उसकी मृत्यु हो जाए !
लेकिन.....
मृत्यु भी तो अपने समय पर ही आती है।

बिलावल चाहता था कि वह किसी तरह जिंदा रहे ताकि उसे पैसा मिलता रहे ,लेकिन होनी को कोई नहीं टाल सकता।

एक दिन मुख्तार निपट गया। ....

इस बात से बिलावल को गहरा सदमा पहुंचा !
इसलिए नहीं कि उसे मुख्तार से कोई प्रेम था!!
बल्कि इसलिए कि उसकी आमदनी खत्म होने जा रही थी !!

यह कुछ कुछ ऐसा ही था जैसा सरकारी नौकरी से रिटायरमेंट के बाद पेंशन प्राप्त करने वाले व्यक्ति के बेरोजगार और नालायक बच्चे सोचते हैं और उसके जिंदा रहने की दुआ करते हैं।

उसने सोच विचार करके योजना बनाई !
मुख्तार के शरीर से आ रही बदबू और उसकी अवस्था को देखकर उसके साथियों ने आना 6 महीने पहले ही छोड़ दिया था।

बिलावल के द्वारा ही मुख्तार की खबर चांदनी महल तक पहुंचती थी !

उसने सोचा कि क्यों ना इस मौत की खबर को छुपा दिया जाए और वनराज से पैसे प्राप्त करते रहें । यह

सोचकर उसने मुख्तार को उसी झोपड़ी में गड्ढा करके दफना दिया और उसके स्थान पर एक आदम कद आकृति बनाकर बिस्तर पर लिटा दिया और उसे कपड़े से ढक कर रखने लगा । भंगी को भी उसने बुलाना बंद कर दिया।

कुछ महीनों तक ऐसा चलता रहा लेकिन फिर एक दिन शराब के नशे में भंगी ने हकीकत का खुलासा कर दिया।

शराबियों की महफिल में कई बार इस प्रकार के राज खुल जाते हैं इसलिए प्राचीन काल से ही खुफिया विभाग शराब के ठेकों पर खास नजर रखता रहा है।

वह जिस महफिल में बैठा था उसमें एक वनराज का खबरी भी था ! उसने खबर चांदनी महल तक पहुंचा दी।

कुछ दिन बाद बिलावल को वनराज से पैसे लेने के लिए जाना था । वह पूरी तैयारी के साथ चांदनी महल पहुंच गया। सबसे पहले उसने वनराज को दंडवत

प्रणाम किया और हाथ फैला कर उसके सामने बैठ गया !

वनराज ने पूछा - अब मुख्तार कैसा है ?

बिलावल - पहले जैसा ही है मालिक ! कोई खास सुधार नहीं है।

वनराज - तुम उसकी देखभाल अच्छे से कर रहे हो ना ?

बिलावल - बिल्कुल मालिक कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहा।

बिलावल के इतना कहते ही वनराज के जूते की ठोकर उसके मुंह पर पड़ी।

वह उछलकर पीछे की तरफ गिर गया।

उसके बाद वनराज के कारिंदे उस पर टूट पड़े इतनी पिटाई हुई कि उसकी खाल उधड गई। वह रहम की भीख मांगता है लेकिन उन लोगों ने उसे तब तक नहीं छोड़ा जब तक वह बेहोश नहीं हो गया !

वनराज बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था कि किसी ने उससे झूठ बोल कर पैसे ले लिए !

वह इतना क्रोधित था कि उसने बिलावल को जिंदा चांदनी महल में पीछे की दीवार में चुनवा दिया।

बिलावल ने रहम की भीख मांगी !
रो रो कर भीख मांगी !!
लेकिन वनराज के शब्दकोश में जो शब्द था ही नहीं उस पर विचार कैसे होता।

बिलावल ने मरते मरते उसे श्राप दे दिया - तू नपुंसक हो जाएगा ! तेरा वंश खत्म हो जाएगा तू निःसंतान मरेगा !!

कहा जाता है कि किसी की आह नहीं लेना चाहिए ! खासतौर से किसी हिजड़े की आह बिल्कुल नहीं लेना चाहिए !!
क्योंकि उनकी बद्दुआ भगवान भी स्वीकार करता है ऐसा माना जाता है !!!

आदमी बहुत ज्यादा दुखी होता है या उसे बहुत ज्यादा प्रताड़ित किया जाता है तो उसकी आत्मा तक कलप जाती है।

दरअसल ऐसा माना जाता है कि तीव्र युगल संबंधों के क्षण में और भयंकर दुख के क्षण में अचानक कुंडलिनी में एक स्पंदन आता है और क्षण के सौवें हिस्से में एक

स्थिति ऐसी बनती है जब कुंडलिनी पूरी तरह से चैतन्य हो जाती है और उस समय किसी भी प्रकार का श्राप, आशीर्वाद ,भाव या इच्छा अगर मन से निकलती है तो वह अवश्य पूर्ण हो जाती है।

यह कुछ कुछ वैसा ही था.....

बिलावल की बद्दुआ अपना काम कर चुकी थी !

बिलावल ने उस दीवार में चीख चीख कर अपनी जान दे दी।

सब कुछ सामान्य चल रहा था !

वनराज की अय्याशियां भी पहले की तरह ही चल रही थी !

वह बिलावल की बात को भूल चुका था .

चांद बेगम की आत्मा भुतहा बाबा के सौजन्य से कैद में थी। इस प्रकार से वनराज सभी प्रकार से सुरक्षित हो गया और उसकी अयाशियां पहले की तरह ही जारी थी।

चांद बेगम की जगह एक दूसरी तवायफ रानी बाई ने ले ली थी !

सभी सिलसिले पहले की तरह बदस्तूर जारी थे .

चार छह महीने में वनराज बिलावल को भूल चुका था और उसकी बद्दुआ को भी !

लेकिन जो होने वाला था .....
वह अजीब भी था और वनराज की जिंदगी को बदलने वाला भी.....

वनराज की पत्नी सुहागिनी गर्भ से थी ,
जब बिलावल की हत्या हुई उस समय उसे 2 महीने का गर्भ था ।
छह महीने बाद जब बच्चा आठवें महीने में था तभी सुहागिनी का प्रसव हो गया !

ऐसा माना जाता है कि समय से पहले पैदा हुए बच्चे कमजोर होते हैं । इसमें एक मान्यता यह भी है कि सातवें महीने का जो बच्चा पैदा होता है वह कमजोर होता है लेकिन बच जाता है।
वही आठवें महीने में पैदा होने वाला बच्चा आमतौर पर बड़ी मुश्किल से बचता है। सुहागिनी का बच्चा आठवें महीने में पैदा हुआ था ।
वनराज के लिए यह बड़ी खुशी की बात थी ।

उसका वारिस पैदा हो चुका था लेकिन यह ख़ुशी ज्यादा दिनों तक नहीं रही। पैदा होने के समय से ही बच्चे को पीलिया था। काफी कोशिशें करने के बावजूद डेढ़ महीने का होते-होते बच्चा भगवान के पास चला गया।

सुहागिनी के ऊपर जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। एक तो विवाह के आठ साल के बाद गर्भ बैठा था और वह भी बालक !

उसके बावजूद उसका नहीं बच पाना। .... सुहागिनी को बहुत अंदर से तोड़ गया !

उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई !

धीरे-धीरे यह हालत हो गई कि वह पागलों जैसी हरकतें करने लगी !

अपने मृत बच्चे से वह न जाने क्या-क्या बातें करती !

कभी दीवाल पर सर पटकती ....

ऐसा ही चलता रहा।

बच्चे के गुजर जाने के 3 महीने के बाद उसका मानसिक संतुलन बुरी तरह बिगड़ चुका था और उसी अवस्था में एक दिन उसने कुएं में छलांग लगा दी और भगवान को प्यारी हो गई ।

वनराज दुखी तो हुआ लेकिन वंश आगे चलाना जरूरी था और इसके लिए विवाह भी जरूरी था ।

वनराज बहुत बड़ा जमींदार था ! तो जाहिर है बहुत सारे लोग उससे रिश्ता बनाने के लिए आते थे ! वनराज के लिए लगातार रिश्ते आने लगे। वनराज की उम्र उस समय लगभग 40 साल के आसपास हो चुकी थी। काफी खोजबीन के बाद सोलह साल की लीला देवी के साथ उसका विवाह संपन्न हो गया। शुभ मुहूर्त में दोनों का विवाह संपन्न हो गया ।

विवाह की पहली रात्रि थी.....

लीला को सजाकर कमरे में बैठा दिया गया था ।

रात गहराने के साथ वनराज कमरे में आया ।

पूरा कमरा चमेली के फूलों से सजा हुआ था और सुहाग सेज पर लीला सिमट कर बैठी हुई थी !

लीला के लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था । उसे सिर्फ वही मालूम था जो बहनों भाभियों ने बताया था ! बलराज के लिए यह रोज की बात थी !

कमरे में आने के बाद वनराज ने मुंह दिखाई की रस्म अदा की और उसके बाद वस्त्र केले के छिलकों के तरह निकलते चले गए !

लीला के सौंदर्य का रसपान करने के बाद वनराज ने आगे की कार्यवाही के विषय में विचार किया लेकिन उसके शरीर ने उसका साथ नहीं दिया !

काफी देर तक प्रयास करने के बाद जब कुछ भी नहीं हुआ तो वह पलट कर सो गया ! उसने सोचा कि संभवत थकान की वजह से ऐसा हो गया होगा !

एक हफ्ते तक उसने प्रयास किया लेकिन नतीजा सिफर ही रहा ।

मन में इच्छा और कल्पना के घोड़े दौड़ते लेकिन उसे अंजाम तक पहुंचाने के लिए जो शारीरिक शक्ति प्रकट होनी चाहिए वह नहीं हो पा रही थी ।

उसने अपने पास उपलब्ध दवाओं का सेवन भी किया ,लेकिन कोई विशेष लाभ नहीं हुआ !

यह 15 दिन तक ऐसा ही चलता रहा तो उसने वैद्यराज माधव को बुलाया । माधव वनराज का खानदानी वैद्य था और विशेष रुप से वाजीकरण की औषधियों में उसे महारत हासिल थी ।

आयुर्वेद में एक महत्वपूर्ण अंग वाजीकरण भी माना गया है। वाजीकरण स्त्री-पुरुष संबंधों में आने वाली कमजोरी का इलाज करने की विधा है । यह एक महत्वपूर्ण विषय है , इसलिए आयुर्वेद इसके विषय में काफी विस्तार से जानकारी प्राचीन काल से देता रहा है । राजा महाराजा जिनके यहां कई कई रानियां हुआ करती थी वह कई औषधियों का प्रयोग करते थे । वर्तमान काल में विवादित संत आसाराम बापू के वैद्य ने भी अफीम तथा अन्य कई प्रकार की औषधियों के मिश्रण से इस प्रकार की बाजी करण औषधि बनाने का उल्लेख अपने बयान में किया था । यह एक समयसाध्य मगर सफल विद्या है और माधव इस का जानकार था । उसने कई प्रकार की गोलियां बनाकर वनराज को दे रखी थी । जब वनराज ने बताया कि उनसे भी कोई औषधि उसे लाभ नहीं प्रदान कर पाई तो उसे आश्चर्य हुआ क्योंकि उनमें से कई तो ऐसी औषधियां थी जो काफी प्रभावशाली असर दिखाती थी ।

खैर.....

माधव को बलराज की समस्या का समाधान ढूंढना था !

इसलिए उसने अपने ग्रंथों को खंगाला और उसके अंदर से एक विशेष उपाय को खोज निकाला !

उसके आधार पर दवा बनाने में उसे 3 दिन का समय लगता उसने वनराज को यह जानकारी दी। वनराज मरता क्या न करता वाली स्थिति में था । इसलिए उसने सहमति प्रदान कर दी । तीन दिन तक अथक प्रयास करने के बाद माधव ने एक विशेष गोली तैयार कर दी । जिसे गर्म दूध के साथ उसे सेवन करना था ।

वनराज ने उस औषधि का सेवन किया और पूरे उत्साह के साथ पुनः लीला के कक्ष में पहुंचा..... लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात रहा !

तीनों दिन ऐसी ही स्थिति रही !

चौथे दिन वनराज ने माधव को बुलवा भेजा !

माधव इनाम मिलने की संभावना से मुस्कुराता हुआ आया !

वनराज के चेहरे को देखकर वह समझ गया कि इस दवाई ने भी काम नहीं किया है।

वनराज ने सारी बात बताई।

माधव की समझ में नहीं आया कि ऐसा कैसे हो सकता है।

वह जानता था कि यह किसी गंभीर समस्या का आगाज है लेकिन वनराज को वह ऐसी कोई कड़वी बात नहीं कहना चाहता था । इसलिए उसने 10 दिन का समय और मांगा ,ताकि वह ग्रंथों का अध्ययन करके कुछ और विशेष प्रकार की औषधि अगर संभव हो तो उसका निर्माण कर सकें।

अपने पूर्वजों द्वारा लिखे गए ग्रंथों को खंगाल कर उसने एक विशेष और सटीक नुस्खा ढूंढ निकाला । इस औषधि में पारे का इस्तेमाल होता था ।

जैसा कि आप लोग जानते होंगे कि आयुर्वेद में औषधियों के रूप में पारे का प्रयोग भी किया जाता है । पारा एक जहरीली धातु है अगर उसका सेवन सीधे कर लिया जाए तो वह शरीर के अंदर रक्त की नलियों को फाड़ देता है । उस में से खून बह कर व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है ।

इसी पारे का शोधन करके आयुर्वेद के विशेषज्ञ औषधियों का निर्माण भी करते हैं और उससे कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं । ऐसी ही एक औषधि का नुस्खा उसे प्राप्त हुआ था ।

पारे से औषधि बनाना एक जटिल कार्य है और साथ ही इसमें थोड़ी भी भूल होने से अनेक परेशानियां आ सकती हैं , इसलिए माधव पारे से बने हुए औषधियों के इस्तेमाल से बचने की कोशिश करता था । यहां परिस्थितियां जटिल थी और उसके पास कोई रास्ता नहीं था ।

माधव ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया लेकिन होनी को कोई नहीं टाल सकता.....

पारद शोधन की प्रक्रिया में हड़बड़ी और डर की वजह से थोड़ी कमी रह गई और पारा उस प्रकार से पूर्ण शोधित नहीं हो पाया जैसा कि उसे किया जाना चाहिए था।

आत्मविश्वास में चीजें अच्छी होती हैं !

लेकिन अति आत्मविश्वास में कई बार चीजें गड़बड़ भी हो जाती है।

माधव को अपने विद्या पर आत्म विश्वास ही नहीं अति आत्मविश्वास भी था। इसके अलावा वनराज के लिए जल्दी से जल्दी औषधि बनाने की हड़बड़ी भी थी।

इन दोनों चीजों के चलते वह एक गलती कर गया और पारा अपने पूर्ण शोधित अवस्था में आने से पहले ही उसने उसे औषधि में मिला दिया।

यह एक रामबाण किस्म का नुस्खा था जिसकी एक खुराक लेनी थी और उसके बाद 3 दिनों तक केवल दूध का सेवन करना था और उसके बाद दूसरी खुराक और फिर से 3 दिनों तक केसर मिले दूध का सेवन फिर तीसरी खुराक और फिर से 3 दिनों तक शिलाजीत युक्त दूध का सेवन !
इस प्रकार से यह 9 दिन का प्रयोग था । जिसके बाद सब कुछ सही हो जाना चाहिए था । वनराज के पास कोई दूसरा उपाय नहीं था। इसलिए उसने इसे भी स्वीकार कर लिया।

तीसरी खुराक लेने के बाद वनराज को अपने शरीर में थोड़ा सा परिवर्तन जैसा महसूस हुआ !

माधव ने वनराज को पहले ही सचेत कर दिया था कि किसी भी स्थिति में अंतिम खुराक लेने के तीन दिन के

पहले किसी भी प्रकार की कोशिश जानलेवा हो सकती है।

उस समय तो वनराज ने इस बात को मान लिया था।

लेकिन !

काफी समय तक अपने इच्छित कार्य से दूर रहने वाला व्यक्ति जैसे ही उस इच्छित कार्य को करने में सक्षम महसूस करता है.....

तो वह तुरंत उसमें लग जाता है !

वनराज के साथ भी ऐसा ही हुआ !

तीसरी खुराक लेने के बाद उसी रात्रि में वह लीला के साथ था !

लेकिन जैसा कि मैंने आपको पहले ही कहा था कि औषधि में कुछ कमी रह गई थी !

कुछ वनराज के द्वारा की गई अवहेलना का असर भी रहा होगा !

उसके अंग से खून निकलने लगा ।

यह देखकर लीला भी घबरा गई ।

रात को ही माधव को बुलावा भेजा गया ।

माधव तुरंत पहुंच गया, परीक्षण करते ही उसे बात समझ में आ गई कि उसकी औषधि ने कुछ गड़बड़ कर दिया है .....

लेकिन एक होशियार वैद्य की तरह उसने सारा ठीकरा वनराज के ऊपर फोड़ दिया और कहा - मालिक ! आपने हड़बड़ी करते सब गड़बड़ कर दिया है ! अब तो आपकी जान को ख़तरा हो गया है ।

अपनी जान पर खतरा सुनकर सब लोग डर जाते हैं । वनराज की भी हालत खराब हो गई थी । उसने माधव के सामने अपनी जान बचा लेने का आग्रह किया ! माधव ने मन ही मन सोचा कि जान बच गयी ! अगर वनराज गुस्से में आ जाता तो यह पक्का था कि उसे कोई नहीं बचा सकता था।

उसने फिर सारे ग्रंथों को खंगाल कर इसकी औषधि ढूंढ निकाली.....

लगभग 10 दिनों के इलाज के बाद खून आना बंद हो गया ! उसकी जान बच गयी थी।

लेकिन.....

वनराज की बीमारी वैसी की वैसी बनी रही , उसकी समस्या का समाधान नहीं हुआ !
एक तरह से वह नपुंसक हो गया था !
माधव के पास इससे बेहतर कोई दवा नहीं थी और जो घटित हो गया था उसके बाद वह किसी प्रकार का रिस्क भी नहीं लेना चाहता था।
इसलिए उसने वनराज को कह दिया अब आप औसधियों का सेवन ना करें क्योंकि इनकी गर्मी की वजह से आपके मस्तिष्क पर असर पड़ सकता है और आपकी जान को भी खतरा हो सकता है।
यह सुनकर वनराज मन मसोसकर रह गया!

वनराज के पास एक यौवनांगी पत्नी थी।
जिसे भोगने के लिए वह स्वतंत्र था , लेकिन उसका स्वयं का शरीर इस योग्य नहीं था कि वह उसे भोग सके !
यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे सामने में 100 प्रकार की मिठाईयां रखी हुई हो और आप स्वयं शुगर के रोगी हो !
इस दर्द को अपने से वह पाठक जरूर महसूस कर पाएंगे जिन्हें शुगर की बीमारी हो और मिठाई खाने के शौकीन रहे हो !

समय आगे बढ़ता चला गया और वनराज की स्थिति वैसी ही बनी रही !
वह किसी प्रकार की औषधि का प्रयोग करता तो फिर से रक्त आना प्रारंभ हो जाता था ,इसलिए धीरे-धीरे उसने औषधियों का सेवन करना बंद कर दिया।
मजबूरी में ही सही लेकिन अब उसने इस बात को स्वीकार कर लिया कि वह अब पूर्णत: नपुंसक हो चुका है।

यह स्वीकार करना बहुत मुश्किल होता है।
खास तौर से किसी पुरुष के लिए और वह भी ऐसे पुरुष के लिए जिसने इस क्षेत्र में बहुत उछल कूद मचाई हो।
धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता गया और वनराज का शरीर भी कमजोर पड़ने लगा !
उसके कारिंदे अभी कर वसूली का काम करते थे ।
डर अभी भी बाकी था इसलिए कर भी बराबर आता रहता था।

एक उक्ति है :-
अशक्तस्तु भवेत् साधुः।
ब्रह्मचारी च निर्धनः।

व्याधिष्ठो देवभक्तश्च।

वृद्धा नारी पतिव्रताः।

अर्थ यह कि

जो शरीर से कमजोर होता है वह अपने आप को सज्जन दिखाने की कोशिश अवश्य करता है। वह प्रतिरोध करने की या किसी से मुकाबला करने की स्थिति में नहीं रहता इसलिए वह इस बात को बार-बार बताता रहता है कि वह बेहद सज्जन आदमी है। हम तो भैया सीधे साधे हैं।

इसी प्रकार से जिस व्यक्ति के पास आय का कोई उपाय नहीं होता वह स्त्री से बचने की कोशिश करता है। वह अपने आपको कई बार ब्रह्मचारी बताने की भी कोशिश करता है। इसके पीछे कारण यह होता है कि वह पत्नी का खर्च ! परिवार का खर्च उठा नहीं सकता और विवाह से बचने के लिए अपने आप को ब्रह्मचारी घोषित करने से भी नहीं चूकता !

जो व्यक्ति रोग ग्रस्त हो जाता है अर्थात जिसे कोई ऐसी बीमारी हो जाती है जो जटिल हो तो वह अपना अधिकांश समय ईश्वर भक्ति में बिताता है।
जब चिकित्सक जवाब दे देते हैं तो फिर सबसे बड़े चिकित्सक भगवान की शरण में जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता और सभी लोग उसी दिशा में आगे बढ़ते हैं !

चौथी बात थोड़ी सी चुभने वाली है लेकिन यह भी एक वास्तविक स्थिति है।
जब स्त्री युवा होती है तो बहुत सारे लोग उसके प्रति आकर्षित होते हैं। प्रेम प्रसंग भी युवावस्था में ही सामने आते हैं। विवाहित हो या अविवाहित हो युवा स्त्री प्रत्येक पुरुष को आकर्षित करती है। वह उसे तब तक ताडता रहता है जब तक वह नजरों से ओझल नहीं हो जाती।

जो पुरुष है वह इस बात को समझते होंगे और जो महिलाएं हैं उन्होंने इस बात को अवश्य अनुभव किया होगा। यह एक सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो आप अपने दैनिक जीवन में देख सकते हैं !

वही स्त्री जब उम्र दराज हो जाती है !
वृद्धा हो जाती है तो कोई भी उसकी तरफ आकर्षित नहीं होता है !
परिस्थितियां बदल जाती हैं और पुरुष उसे एक नजर भी देख ले तो यह भी बहुत ज्यादा होता है। ऐसी स्थिति में वह अपने पति के प्रति ज्यादा निष्ठावान हो जाती है।
खैर.....

आपने देखा होगा , फ़िल्मी डॉक्टर भी फिल्मों में यही कहते हैं कि अब दवाओं का मामला खत्म हो गया है और दुआ कीजिए कि कुछ अच्छा हो जाए।
कुछ ऐसी ही स्थिति वनराज की भी हो चुकी थी। उसे पता चल चुका था कि अब मेरा मामला खत्म हो चुका है। जीवन में उसने घनघोर पाप किए हुए थे।

इतना सब हो जाने के बाद उसे बिलावल की बद्दुआ याद आई।
उसे समझ में आया कि किसी को पीड़ित कर देने से उसकी आह निकलती है और वह आह किसी साम्राज्य को तबाह कर देने का भी काम कर जाती है।

बड़े से बड़ा पापी !

बड़े से बड़ा दुष्ट भी कभी-कभी जीवन में ऐसी स्थिति में आ जाता है। जब कोई घटना या कोई प्रसंग ऐसा घटित होता है जिसके बाद वह अपने जीवन की दूसरी पाली की ओर बढ़ता है। उसका सारा स्वरूप ही बदल जाता है।

जीवन के प्रति उसका नजरिया भी बदल जाता है।

वनराज के साथ भी कुछ ऐसा ही हो चुका था।

उसने धीरे-धीरे धर्म-कर्म के कार्य करना भी प्रारंभ कर दिया। उसका काफी समय अब पूजा-पाठ में बीतने लगा। इसके अलावा वह मंदिरों के चक्कर भी लगाता रहता। तीर्थ यात्राएं भी करने लगा।

उसमें आए इस अभूतपूर्व परिवर्तन को लोगों ने नई पत्नी की महानता समझा और सभी उसकी तारीफ करते नहीं थकते थे।

सब यह मानते थे कि उसकी वजह से वनराज बदला है।

उसने एक जानवर को इंसान बना दिया , लेकिन इस

सारे मामले की सच्चाई केवल वनराज और लीला के अलावा वैद्यराज माधव ही जानता था और तीनों अपने अपने कारणों से इस मामले पर मौन थे।

वनराज अपनी कमजोरी किसी को बता नहीं सकता था !

वैद्यराज वनराज के डर से इस रहस्य को नहीं खोल सकता था !
और.....

लीला का इतना महिमामंडन हो चुका था कि वह उस आभामंडल को तोड़ना नहीं चाहती थी।

लेकिन !
युवावस्था और शारीरिक आवश्यकताएं अपनी जगह पर मौजूद रहती हैं।

वनराज अब लगभग 45 वर्ष का हो चुका था और लीला भी 20-22 साल की हो चुकी थी।
शरीर की वासनाएं और कामनाएं अपनी जगह पर कायम रहती है और वह मन को मथती रहती है !
इसलिए कामदेव को मन्मथ भी कहा जाता है !

अर्थात एक ऐसा देवता जो मन को मथ दे या मन के अंदर विक्षेप पैदा कर दे।
लीला भी इससे अछूती नहीं थी।

वनराज का सबसे पुराना नौकर था मनोहर !
मनोहर वनराज के दूर के रिश्ते का भाई था । आर्थिक रूप से बेहद कमजोर परिवार का होने की वजह से मनोहर वनराज के यहां काम करता था। मनोहर की उम्र लगभग 50 वर्ष की थी। वह हट्टा कट्टा और बलिष्ठ शरीर का स्वामी था। काम करने वाले लोगों के शरीर आमतौर पर ऐसे ही मजबूत हुआ करते हैं।

वह वनराज की हवेली में रहता था। उसकी पत्नी का देहांत हो चुका था। उसका एक बेटा था जो अंग्रेजों की फौज में सिपाही था। दो बेटियां थी जिनकी शादी हो चुकी थी। सभी अपने अपने जगह पर सेटल हो चुके थे और मनोहर भी अपने बचे हुए समय को वनराज की सेवा में गुजारने की मानसिकता के साथ यही रह रहा था।
लीला के अंदर मां बनने की इच्छा प्रबल होती जा रही थी ! यह उसके जीवन की सबसे बड़ी कमी बन गई थी।

रिश्तेदार और जान पहचान वाले भी लगातार उसके ऊपर इसके लिए दबाव बनाते रहते थे। वह उन्हें वनराज की स्थिति के बारे में बता नहीं सकती थी और इस बात से पूरी तरह वाकिफ थी कि वनराज उसे संतान देने की स्थिति में नहीं है।

वनराज धीरे-धीरे कमजोर होता जा रहा था और ऐसी स्थिति में लीला की जिम्मेदारियां भी बढ़ती जा रही थी। महिला होने के कारण वह बहुत सारे कार्य नहीं कर पाती थी और ऐसे में मनोहर उसका प्रमुख सहयोगी बन गया था।
मनोहर बेहद सज्जन किस्म का प्राणी था। वह वनराज का विश्वासपात्र तो था ही अब धीरे-धीरे वह लीला का भी विश्वास पात्र बन गया था। वनराज का ज्यादातर समय अब पूजा-पाठ और अन्य कार्यों में लगा रहता ....

स्त्रियों के साथ एक बात यह होती है कि वह बहुत ज्यादा किसी बात को छुपा कर नहीं रख पाती है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है जो सभी जगह लागू होता है।

कोई तथ्य या जानकारी किसी स्त्री के पास अगर है तो साल 2 साल 4 साल में यह पक्का है कि वह किसी न किसी से वह बात अवश्य बताएगी।

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि लता , राजा और स्त्री , जो उनके करीब ज्यादा समय तक रहता है उसके ऊपर विश्वास करके उन्हें अपनी बातें भी बता देते हैं।
मंदिरा भी लीला की करीबी बन चुकी थी .....
लीला ने अपनी समस्या के बारे में मंदिरा को बताया ।
मंदिरा लगभग तीस पैंतीस वर्ष की महिला थी । जो वनराज के हवेली में दासी का कार्य करती थी ।
यह बात सुनकर मंदिरा आश्चर्यचकित रह गई । वनराज उसे भी किसी गांव से उठा कर लाया था और घर के काम पर लगा दिया था ।
युवावस्था में घर के काम के अलावा उसे वनराज की वासनापूर्ति भी करनी पड़ती थी ।

वनराज की ऐसी स्थिति की वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी क्योंकि उसने वनराज का जो स्वरूप देखा था , वह किसी कामुक दरिंदे के जैसा था.....

वैसा पुरुष नपुंसक हो सकता है .....
यह बात उसके लिए सोच से परे थी । अब उसकी स्वयं की पत्नी इस रहस्य का उद्घाटन कर रही थी तो उसमें शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।

यह सुनकर उसे आनंद भी आया..... क्योंकि बलराज की वजह से उसे अपना घर परिवार सब छोड़ना पड़ा था।
उसे संतोष हुआ कि भगवान के घर देर है लेकिन अंधेर नहीं है।

उसे लगा की लीला की तो कोई गलती नहीं है .....
और मां बनना तो एक सहज स्वाभाविक इच्छा है। जैसा कि आप लोग जानते हैं कि संतान के लिए स्त्री पुरुष का संबंध होना जरूरी होता है। स्त्री पुरुष दोनों स्वस्थ और संतानोत्पत्ति की क्षमता से युक्त होंगे तभी संतान का जन्म हो पाएगा।

मेडिकल साइंस में 20 से 30 वर्ष की अवस्था को किसी स्त्री के लिए संतान उत्पत्ति का सर्वश्रेष्ठ समय माना गया

है । यदि इस काल में संतान की उत्पत्ति ना हो पाए तो 30 के बाद संतान उत्पत्ति में थोड़ी दिक्कतें आती है ।

मंदिरा ने लीला को नियोग का सहारा लेने की सलाह दी ।
नियोग एक व्यवस्था है ! जिसके तहत यदि पुरुष संतानोत्पत्ति में असमर्थ हो या स्त्री विधवा हो जाए तो परिवार के किसी सक्षम पुरुष की सहायता से वह गर्भ धारण करती है। महाभारत में इस प्रकार के प्रकरण आपने अवश्य पढ़े होंगे ।
यह व्यवस्था प्राचीन काल में हर जगह विद्यमान थी । वर्तमान समय में भी यह होता है लेकिन दबे छुपे तरीके से ।

इसका मेडिकल अल्टेरनेटिव है आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन या कृत्रिम गर्भाधान ।
इस प्रक्रिया में किसी स्वस्थ पुरुष के वीर्य को कृत्रिम माध्यम से स्त्री के गर्भाशय तक पहुंचा दिया जाता है और उस के माध्यम से संतान की उत्पत्ति होती है।

इस विषय में मंदिरा की बात सुनकर लीला ने पहले तो उसे फटकार दिया ।
लेकिन बाद में सोच विचार करने पर उसे वह बात सही लगी !

काशी का मणिकर्णिका घाट !
जिसे महा शमशान भी कहा जाता है !
इस महाशमशान में रोज लगभग 200 से अधिक शवों का दाह संस्कार होता है ।
ऐसा समझ लीजिए कि यहां सारे समय चिताएं जलती रहती है ।
बाकी श्मशान में दिन के समय ही दाह संस्कार होता है और रात में दाह संस्कार निषेध माना जाता है !
मणिकर्णिका घाट ऐसा शमशान है जहां पर दिन रात दोनों समय मे चिताए जलती हुई दिखाई दे जाएंगी ।
इसीलिए इसे महा शमशान कहा जाता है ।

मणि = रत्न , कर्णिका = कान !
मणिकर्णिका का मतलब होता है कान की बाली ! या कान में पहनी हुई मणि ।

इस महाशमशान को यह नाम मिलने के पीछे भी एक कथा है ।
ऐसा कहा जाता है कि महादेव और पार्वती यहां पर स्नान करने के लिए आए थे ।
इसी घाट में देवी पार्वती का कर्णफूल या कान की बाली गिर गई थी जिसकी वजह से इसका नाम मणिकर्णिका घाट पड़ा ।

काशी प्राचीन काल से ही हिंदुओं की आस्था का केंद्र रहा है ।
हिंदू धर्म में सबसे उच्च स्थिति मोक्ष की मानी जाती है, अर्थात मृत्यु के बाद उस परम तत्व में विलीन हो जाने की स्थिति !
सभी की आकांक्षा रहती है कि मृत्यु के पश्चात उसे किसी अन्य योनि में न भटकना पड़े और वह परमात्मा के सानिध्य में चला जाए । ऐसी मान्यता है कि मणिकर्णिका घाट में जिस शव का दाह संस्कार किया जाता है वह सीधे मोक्ष को प्राप्त हो जाता है । भगवान शिव उसे अपने सानिध्य में ले लेते हैं । इसी मान्यता के चलते मणिकर्णिका घाट पर आसपास के क्षेत्रों से शव

आते रहते हैं और उनका निरंतर दाह संस्कार होता रहता है ।

यह घाट बहुत विशाल क्षेत्र में नहीं बना हुआ है फिर भी जब आप यहां पर पहुंचते हैं तो आपको जीवन की नश्वरता का आभास अवश्य होगा !
लगातार जलती हुई चिताएं आपको यह एहसास अवश्य दिला देंगे कि अंत में बिना कुछ लिए खाली हाथ जाना है !
यहां तक कि कफन का वस्त्र तक आपके शरीर से निकाल दिया जाएगा !!
और आप उसी अवस्था में वापस जाएंगे जिस अवस्था में इस पृथ्वी में मां के गर्भ से अवतरित हुए थे !!!
इसे मसानी बैराग कहा जाता है !
यह बैराग या वैराग्य की वह स्थिति है जब आप अपने किसी रिश्तेदार या मित्र को जलाने के लिए शमशान ले जाते हैं ।
उस समय कुछ क्षणों के लिए हमारे अंदर यह भाव आता है कि जीवन की और इसके लिए किए जाने वाले

तमाम प्रयासों और दुष्प्रयासों की कोई अहमियत नहीं है !

जो कुछ कमाएंगे सब कुछ यहीं छोड़ कर जाना है ! फिर हम बेवजह इतना प्रयास क्यों कर रहे हैं ।

यह बैराग की स्थिति कुछ क्षणों के लिए ही रहती है । जैसे ही आप शमशान की सीमा से बाहर निकल जाते हैं यह वैराग्य फिर से ठंडा पड़ जाता है और हम वापस अपने जीवन में लौट जाते हैं !

जिसे माया भी कहा जाता है .....

यानी कुल मिलाकर जीवन का चक्कर वापस सामान्य रूप से चलने लगता है ।

नवरात्रि शुरु होने वाली थी !

शक्ति का पर्व !

जब इस पृथ्वी पर जगदंबा पूर्ण चैतन्य स्वरूप में विचरण करती हैं !

अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए उन पर अपनी अनंत कृपा बरसाने के लिए .. ..

वनराज मणिकर्णिका घाट के पास बैठा हुआ था ।

अपनी पुरानी गलतियों को ! अपनी अय्याशीयों को याद करते हुए ..

जो अब उसके सामर्थ्य से बाहर हो चुका था ।

यहां तक कि वह अपने लिए एक पुत्र उत्पन्न करने में भी असमर्थ था !

उसे एहसास हो रहा था कि अब उसके पास ज्यादा समय नहीं बचा है और मृत्यु से पहले अगर एक पुत्र किसी प्रकार से प्राप्त हो जाए तो वह आराम से मर सकता था ।

यही चिंतन करता हुआ वह घाट पर बैठा था , तभी सफेद कपड़ों में एक साधु स्नान करके निकलता हुआ दिखाई दिया ।

मध्यम कद काठी का साधु अत्यंत तेजस्वी दिखाई दे रहा था । उसे देखकर वनराज को ऐसा लगा कि संभवत: यह मेरी समस्या का समाधान कर सकता है ।

वनराज जब से नपुंसक हुआ था तब से वह मंदिर और साधुओं के चक्कर लगाता रहता था ।

जब कोई व्यक्ति समस्या ग्रस्त होता है तो वह अपनी समस्या के समाधान के लिए इधर-उधर चक्कर लगाता रहता है ।

समाज में धूर्त और ठग लोगों की संख्या भी पर्याप्त रहती है । आपने रेल के डिब्बे में लगे हुए बाबा बंगाली, मियां, तांत्रिक सम्राट जैसे विज्ञापनों को जरूर देखा होगा । जिसमें यह लिखा रहता है कि 24 घंटे में संबंधित व्यक्ति का वशीकरण और मारण संपन्न कर दिया जाएगा !
वह भी गारंटी के साथ !!!

अब सोचने वाली बात यह है कि अगर फोन के माध्यम से ही केवल 24 घंटे में वह किसी भी व्यक्ति का वशीकरण करने में सक्षम है तो .....
इस प्रकार से दुकान खोलने की बजाय उसे किसी बड़े सेठ जैसे टाटा बिरला या अंबानी का वशीकरण कर लेना चाहिए ।
इसके बाद आराम से बैठकर उनकी अकूत संपदा का उपयोग करना चाहिए ।

इसमें किसी प्रकार का झंझट ही नहीं रहेगा केवल एक बार प्रयोग करो और जिंदगी भर मजा करो ।

वास्तव मे उनके पास ऐसी कोई शक्ति नहीं होती है और वे ऐसा करने में सक्षम नहीं रहते हैं ।
कोई भी 24 घंटे में किसी का वशीकरण नहीं कर सकता है ।
केवल लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए इस प्रकार के विज्ञापन डाले जाते हैं ।
जब आप फोन करते हैं तो आपको शब्द जाल में फंसा कर आपकी जेब ढीली कर ली जाती है ।
जो व्यक्ति समस्या में घिरा हुआ होता है वह इस प्रकार के सामान्य लॉजिक को भी नहीं लगाता । उसे लगता है कि यह मेरी समस्या का समाधान कर देगा और फिर वह उसके झांसे में आ जाता है ।
वह अपना धन भी लुटा देता है और उसका कोई काम भी नहीं होता ।

वनराज की समस्या भी ऐसी थी कि वह बता भी नहीं सकता और छुपा भी नहीं सकता वाली स्थिति में जी

रहा था । उसे किसी भी प्रकार से इस समस्या से बाहर निकलना था ।

सभी को यह मालूम रहता है कि स्त्री और पुरुष के संबंध के बिना संतान का उत्पन्न होना नामुमकिन है । यहां तो वनराज कुछ भी करने में अक्षम हो चुका था । ऐसी स्थिति में संतान की उत्पत्ति तभी हो सकती थी जब लीला किसी सक्षम पुरुष के सानिध्य में होती ।

यह बात वनराज भी जानता था लेकिन उसे स्वीकार करना उसके पुरुषत्व पर चोट लगने जैसा था ।

इसलिए वह इधर-उधर भटकता रहता अपनी समस्या के समाधान के लिए ।

इस चक्कर में कई प्रकार की औषधियां और कई प्रकार के प्रयोग करता रहता था ।

लेकिन..

किसी भी प्रयोग का असर नहीं हुआ था ।

फिर भी उसने हार नहीं मानी थी और लगातार प्रयास करते रहता था ।

जहां भी उसे किसी सिद्ध के होने का पता चलता !

उसके पास चक्कर लगाने जरूर जाता ।

इस साधु को देख कर भी उसे लगा कि वह उसकी समस्या का समाधान कर सकता है। उसने आगे बढ़ कर उसके पांव पकड़ लिए।

साधु ठिठककर खड़ा हो गया !

उसने कहा - वनराज ! उठो।

इससे पहले वनराज ने साधु को नहीं देखा था लेकिन उसके मुंह से अपना नाम सुनकर उसे आश्चर्य हुआ कि वह साधु उसका नाम कैसे जानता है ?

वनराज उठ कर खड़ा हो गया।

साधु ने कहा - इस जीवन में जो जो कुकर्म तुमने किए हैं वह इतने ज्यादा हैं कि तुम्हारी इच्छा सामान्य ढंग से पूरी नहीं हो सकती।

वनराज को लगा कि यह अवश्य उसकी इच्छा की पूर्ति करने में सक्षम है ऐसी स्थिति में उसने साधु से पूछा - बाबा कुछ तो मार्ग होगा।

साधु - वनराज मार्ग तुम भी जानते हो। धरती उपजाऊ हो और बीज खराब हो तब पौधा नहीं उगता है।

कमी तुम में है। तुम्हारी पत्नी तो गर्भाधान में सक्षम है

। तुम्हारी कमी ठीक नहीं हो सकती । ऐसी स्थिति में नियोग ही एकमात्र विकल्प है ।
तुम्हारी पत्नी को पुत्र प्राप्त होगा लेकिन मार्ग यही रहेगा और उसका समय आ गया है । अगले वर्ष तुम्हारे घर में तुम्हारा वारिस खेलेगा ।

वनराज ठिठककर खड़ा रहा ।
उसका मन इस वास्तविकता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो रहा था ।

साधु ने कहा - नवरात्रि आने वाली है ।
इस नवरात्रि में जितने शव मणिकर्णिका घाट पर आए उनके दाह संस्कार का खर्च तुम उठाओ !
और सप्तमी का जो महा नृत्य का आयोजन है उस में आने वाली सभी नगरवधूओं को दान दक्षिणा देकर तृप्त करो ।
महादेव की कृपा से तुम्हारी इच्छा पूर्ति का कोई न कोई माध्यम अवश्य निकल जाएगा ।

वनराज ने वैसा ही किया । नवरात्रि काल में जितने भी शव मणिकर्णिका घाट पर आए उनके लिए दाह संस्कार की व्यवस्था वनराज ने करवा दी ।
वह आश्चर्यचकित था ! क्योंकि उस नवरात्रि में जितने शव आए वह सामान्य से काफी ज्यादा थे । कुल मिलाकर 1008 शव उस पूरी नवरात्रि में मणिकर्णिका घाट में जले.. .. ..

मणिकर्णिका घाट कई मायनों में विचित्र है !
यह संभवत इकलौता है शमशान है जहां पर होली खेली जाती है और वह भी मसान के भस्म की .. .. ..
इतना ही नहीं .....
चैत्र नवरात्रि की सप्तमी को यहां पर महा श्मशान में नगरवधूओं का नृत्य संपन्न होता है !
वह भी बड़े व्यापक स्तर पर !
नगरवधू का समाज में बहुत सम्मानजनक स्थान नहीं होता लेकिन अगर आप थोड़ी गंभीरता से इस बात पर चिंतन करें तो आप पाएंगे कि **कुलवधूओं की सुरक्षा के लिए नगरवधू है** ।

वासना से अंधे हो चुके पुरुषों की अतृप्त वासना का समाधान करती है नगरवधू !
समाज में फैली हुई गंदगी को अपने में समेट लेती है नगरवधू !!

इसलिए मेरे विचार से तो वह सम्माननीय होनी चाहिए !!!
यह और बात है कि समाज उसे हेय दृष्टि से देखता है.. .. .. ..

यह बात बड़ी अजीब लग सकती है लेकिन वास्तव में आज भी चैत्र नवरात्रि की सप्तमी के दिन मणिकर्णिका घाट के महा श्मशान में नगरवधुओं का नृत्य संपन्न होता है !
अब उसका स्वरूप थोड़ा बदल गया है लेकिन नृत्य का कार्यक्रम अभी भी संपन्न होता है ।
इसकी शुरुआत लगभग साढ़े तीन सौ साल पहले हुई थी !

आमेर के राजा सवाई मानसिंह ने यहां पर मसान बाबा जो कि उनके आराध्य हैं उनका भव्य मंदिर बनाया था

। मंदिर बनने के बाद जब उसका उद्घाटन होता है तो विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है । पूजन की और इस प्रकार के निर्माण की पूर्णता के लिए अपने आराध्य को आनंद विलास समर्पित किया जाता है । आनंद विलास का मतलब होता है नृत्य और संगीत के द्वारा उनके प्रति अपनी श्रद्धा और उनके मंदिर के निर्माण से हमारे अंदर पैदा हुए उल्लास कि उन्मुक्त अभिव्यक्ति का एक प्रक्रम !

अब मसान बाबा का मंदिर मसान में बना हुआ था । ऐसी स्थिति में सवाई मान सिंह जी के द्वारा प्रसिद्ध कलाकारों को जब आमंत्रण दिया गया तो उन्होंने मसान में गायन और नृत्य को शास्त्र के विरुद्ध बताते हुए अपनी असमर्थता जाहिर कर दी और आने से इंकार कर दिया ।

ऐसी स्थिति में राजा के पास कोई और विकल्प नहीं बचा था क्योंकि नृत्य संगीत का कार्यक्रम तो करना अनिवार्य था !
तब उन्होंने नगर वधुओं के पास संदेश भेजा कि इस कार्यक्रम में वे अपनी उपस्थिति दें !

जिसे नगरवधूओं ने स्वीकार कर लिया । तब से यह परंपरा चली आ रही है ।

ऐसा माना जाता है कि वे यहां पर नृत्य करके भगवान भोलेनाथ महाशमशान बाबा से प्रार्थना करती हैं कि जिस प्रकार का जीवन उन्हें इस जन्म में मिला है अगले जीवन में उन्हें ऐसा जन्म ना मिले !
इस प्रकार से कलंकित ना होना पड़े !
या यूं कह लीजिए कि जीवन की सबसे विकृत अवस्था से गुजर जाने के बाद अपने आपको जीवन मुक्त कर देने की प्रार्थना के साथ वे यहाँ आती हैं और स्वच्छंद भाव से यहां पर बाबा मसान के सम्मुख अपना नृत्य प्रस्तुत करती हैं ।
उस सप्तमी को भी वैसा ही घटित हुआ !
सुंदर सुंदर नगरवधूएं वहाँ नृत्य करने के लिए उपस्थित हुई और अत्यंत उन्मुक्त भाव से उन्होंने अपना नृत्य संपन्न किया ।
सभी को वनराज ने अपनी तरफ से कुछ न कुछ भेंट प्रदान की !

साधु के कहे अनुसार सब के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद भी लिया ।
उन सभी ने वनराज को अपना आशीष प्रदान किया ।

यहां एक बात गौर करने की है कि गणिकाओं का हमारे धर्म में विशेष महत्व रखा गया है । कई प्रकार के आयोजनों में उनकी उपस्थिति उत्तम फल देने वाली मानी जाती है । इसके अलावा जो नव दुर्गा की प्रतिमाएं बनती है उसमें एक अनिवार्य सामग्री नगरवधू के निवास के सामने की मिट्टी भी होती है । इसके अलावा राजमहल के सामने की मिट्टी और इस प्रकार की कुछ विशेष स्थानों की मिट्टी का भी प्रयोग इस प्रकार के मूर्ति निर्माण में किया जाता है ।
इससे आप उनका महत्व समझ सकते हैं ।
एक प्रकार से उन्हें देवी का स्वरुप ही माना जाता है । जो इस जगत की विकृतियों को शांत करने के लिए निरंतर प्रयासरत होती है ।
इसलिए उनका संतुष्ट होकर आशीर्वाद प्रदान करना कई प्रकार के दोषों का निवारण करता है ।

वनराज इसी प्रकार के दुष्कर्मों का भागी था और उसके जीवन में कुछ बेहतर होने के लिए यह आवश्यक था कि उनका आशीर्वाद प्राप्त हो सके ।

लीला का सारा कार्य मनोहर के सहयोग से अच्छे ढंग से चल रहा था । वह उसकी हर बात को पत्थर की लकीर की तरह मानता था । उसके जीवन में भी अब कुछ और लक्ष्य नहीं था । इसलिए वह पूरी तरह से वनराज और लीला के प्रति समर्पित होकर सभी कार्य करता था ।

मंदिरा के द्वारा नियोग के विषय में कहे जाने के बाद से लीला भी उस विषय पर काफी गंभीरता से सोच विचार कर रही थी ।

उसे भी एहसास हो चुका था कि वनराज बहुत दिन तक जीवित रहने वाला नहीं है । ऐसी स्थिति में वारिस का होना जरूरी हो जाता है ।
वह चाहती थी कि उसे बांझ घोषित करके दूसरी स्त्री से विवाह कर लेने से पहले वह कुछ ऐसा कर दे जिससे वनराज भी मजबूर होकर उसे स्वीकार करने को विवश

हो जाए । इसके लिए मंदिरा का सुझाव उसे बहुत सही लगने लगा था ।

मंदिरा के नियोग के प्रस्ताव पर जब लीला को सहमति सी होने लगी तो उसने मंदिरा से फिर से इस विषय पर चर्चा की ।

मंदिरा समझ गई की लीला इसके लिए तैयार है ।

यह वनराज से संबंधित विषय था । इसलिए गोपनीयता बनाए रखना जरूरी था । कुछ ऐसा होना चाहिए था ताकि न वनराज को पता चले ना किसी और को पता चले । यह राज मंदिरा और लीला के बीच में गोपनीय बना रहे ।

मंदिरा ने इसका मार्ग ढूंढ निकाला ।

अगर स्त्री युवा हो और पुरुष अक्षम हो तो धीरे-धीरे ऐसी परिस्थितियां बन जाती है कि स्त्री अपने लिए कोई न कोई मार्ग निकाल लेती है कई बार इसका पता चल जाता है और अधिकांश मामलों में यह गोपनीय ही रह जाता है ।

मंदिरा बेहद व्यावहारिक महिला थी । उसने लीला की समस्या के समाधान के लिए मनोहर को चुना । मनोहर के साथ उसके संबंध पहले से बने हुए थे । शारीरिक आवश्यकताएं स्त्री-पुरुष को परेशान करती हैं । फिर उसकी पूर्ति के लिए कोई न कोई मार्ग निकल ही जाता है । मंदिरा के पास भी ऐसा ही मार्ग उपलब्ध था और वह मार्ग था मनोहर !

मनोहर शारीरिक रूप से हट्टा कट्टा और सक्षम व्यक्ति था । नौकरों के कमरे अक्सर एक साथ होते हैं । मंदिरा और मनोहर के कमरे अगल-बगल लगे हुए थे । मौका देखकर आधी रात के बाद जब सब सो जाते तब मनोहर मंदिरा के कमरे में आ जाता और बाकी रात दोनों साथ गुजारते थे ।

समाज मे तीन वर्ग होते हैं ।

उच्च वर्ग मध्यमवर्ग और निम्न वर्ग ।

यह मैं आय के आधार पर कह रहा हूं ।

जितने प्रकार के नैतिक सामाजिक बंधन आदि होते हैं उन सबको निभाने का उत्तरदायित्व मध्यम वर्ग का होता है ।

चार लोग क्या कहेंगे ?

से लेकर

समाज क्या कहेगा ?

जैसे कई प्रकार के बंधन मध्यमवर्ग अपने ऊपर लाद कर चलता है ।

जो उच्च वर्ग या उच्च आय वर्ग का व्यक्ति होता है उसके पास इतना धन और सामर्थ्य होता है कि उसके कार्यों पर कोई ना तो हस्तक्षेप करने का प्रयास करता है और ना ही उस पर उंगली उठाने का प्रयास करता है क्योंकि उसका कोई औचित्य नहीं होता । वह अपने हिसाब से जीता है । उनके बीच के संबंधों में भी खुलापन ज्यादा होता है । वह भी दिन भर कसकर काम करते हैं और शाम को बार में या क्लब में शराब के जाम के साथ अपने आप को मदहोश करते हैं और फिर रात रंगीन करने के बाद सो जाते हैं ।

यदि निम्न आय वर्ग के लोगों को देखें तो उनकी भी दिनचर्या कुछ कुछ वैसी ही होती है । दिन भर वे हड्डी तोड़ मेहनत करते हैं । शाम होते-होते उनकी हालत ऐसी हो जाती है कि शरीर के अधिकांश अंगों में दर्द

हो जाता है । उस स्थिति में वह भी देसी शराब की मदद लेते हैं । उसके बाद जब मस्तिष्क थोड़ा सुन्न होने लगता है तो उपलब्ध साथी के साथ शारीरिक सुख लेने के बाद गहरी नींद में सो जाते हैं फिर अगली सुबह वही सब चालू हो जाता है ।

मनोहर भी रात को शराब पीता !
मंदिरा भी उसका साथ देती फिर उन की क्रीडाएं प्रारंभ होती ।

मंदिरा ने यह उपाय निकाला था कि नशे में आ जाने के बाद उसके स्थान पर लीला चली जाएगी और इस प्रकार से मनोहर की जानकारी मे आए बिना लीला का काम भी पूरा हो जाएगा ।

लीला इस बात के लिए राजी हो गई ।

उस समय घूँघट प्रथा चलती थी और इतनी उन्मुक्तता नहीं थी इसलिए मनोहर को भी पता नहीं चल पाया । लगभग एक महीने तक दूसरे तीसरे दिन इस प्रकार की क्रियाएं चलती रही और लीला गर्भ से हो गई ।

दो महीने के बाद उल्टियाँ प्रारंभ होने लगी तो वनराज को इसके बारे में पता चला । हवेली में खुशी की लहर फैल गई । वास्तविकता के बारे में केवल 3 लोगों को पता था ।

मंदिरा , लीला और संभवत: मनोहर !

वनराज वास्तविकता जानता था लेकिन कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था इसलिए उसने होनी को स्वीकार कर लिया। यदि साधु ने उसे इस संबंध में पहले ही जानकारी ना दी होती तो शायद उसके गुस्से का निशाना लीला बनती और पता नहीं क्या-क्या होता ?

इतने लंबे समय तक अलग-अलग जगहों में घूम लेने के बाद वह भी इस वास्तविकता से अवगत हो चुका था कि कोई और उपाय संभव नहीं है ।
उसकी मानसिक स्थिति और शारीरिक स्थिति दोनों की गिरती हुई हालत ने भी उसे समझौता करने के लिए विवश कर दिया था ।

उसने एक दो बार लीला से पूछताछ करने का प्रयास किया लेकिन लीला ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया ।
जमींदारी का सारा काम अब वही देखती थी ,उसकी भाव भंगिमा देखकर वह समझ गया कि ज्यादा बात को तूल देने से मामला बिगड़ सकता है ।
इसलिए धीरे-धीरे वह शांत हो गया ।

बच्चे का नाम रखा गया लीलाधर ।
लीलाधर वनराज से उल्टे स्वभाव का था शांत और गंभीर । समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया और लीलाधर 15 वर्ष का हो गया । उधर वनराज की स्थिति वैसी ही बनी हुई थी वह परिस्थितियों के आगे मन मसोसकर रह जाता था ।
लीलाधर को देख कर उसे खुशी भी होती और अपनी कमजोरी का एहसास भी...

एक ऐसा व्यक्ति जिससे पूरा इलाका काँपता था !
जो न जाने कितनी स्त्रियों के साथ अत्याचार कर चुका था !!

वह एक ऐसी स्थिति में था जहां पर उसे रोज-रोज मरना था !!!

उसके सामने उसी की पत्नी के गर्भ से किसी और के द्वारा उत्पन्न हुआ बालक मौजूद था ।
जिसे वह अपना पुत्र मानने को विवश था ।
यह बात उसे अंदर ही अंदर कचोटती थी लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सकता था ।

कभी-कभी वह चांदनी हवेली जाता और पुराने दिनों को याद करता हुआ वहीं बैठा रहता ! लेकिन अब सिर्फ यादें ही बाकी थी बाकी सब समाप्त हो चुका था ।

एक दिन भुतहा बाबा का देहांत हो गया ।
भुतहा बाबा की मृत्यु के साथ ही उसके द्वारा सिद्ध किए गए सारे भूत भी स्वतंत्र हो गए ।
अब वे अपनी इच्छा से कहीं भी जाने के लिए स्वतंत्र थे ।

उनमें से एक चांद बेगम की आत्मा भी थी ।

उसने मुख्तार से अपना बदला तो ले लिया था लेकिन उसका जिम्मेदार वह वनराज को भी मानती थी और उसका इंतकाम बाकी था ।

भुतहा बाबा अपने द्वारा सिद्ध किए भूतों को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए अलग-अलग प्रकार के अनुष्ठान करता रहता था और उन्हें विभिन्न प्रकार के भोग भी समर्पित करता था । उन क्रियाओं के माध्यम से अब चांद बेगम की आत्मा या भूतनी कह लीजिए, ज्यादा शक्तिशाली हो चुकी थी और उसका लक्ष्य बन गया था वनराज !

अधिकांश भूत स्वतंत्र होने के बाद उसी भूत बंगले में रहने लगे, लेकिन चांद बेगम ने चांदनी हवेली को अपना घर बना लिया । अब वहां पर पहले जैसी रौनक नहीं थी । शहर से थोड़ा दूर बसा होने की वजह से लोगों का आना जाना भी कम था । चौकीदार के अलावा वहां पर केवल वनराज का ही आना जाना होता था वह भी महीने में एकाध बार ।

भुतहा बाबा की मौत के लगभग 15 दिन के बाद वनराज एक दिन चांदनी हवेली पहुंचा ।

चांद बेगम का इंतजार खत्म हुआ !

वह वनराज के साथ लग गई और धीरे-धीरे उसने वनराज को अंदर से खोखला करना चालू कर दिया । उसकी प्राणशक्ति को खींच खींच कर चांद बेगम तो ताकतवर होती चली गई लेकिन वनराज लगातार कमजोर होता चला गया और हड्डी के ढांचे जैसा दिखने लगा ।

उसी अवस्था में एक दिन उसकी आंखों की रोशनी चली गई ।

यह कैसे गई ? इसके बारे में केवल चांद बेगम को ही पता था ।

इतना सब करने के बाद जब वनराज विवश अवस्था में घूमने लगा तो चांद बेगम की आत्मा को शांति मिली और उसने चांदनी महल के अंदर ही अपना डेरा बना लिया ।

उसके साथ माला और कुछ और मृत आत्माओं की मौजूदगी थी और इनके अलावा मरे हुए नौकरों में से

एक की आत्मा भी उसके साथ ही मौजूद थी । चांद उनमें सबसे शक्तिशाली थी इसलिए सारे लोग उसे अपना मुखिया मानते थे ।

वनराज की आंखें जा चुकी थी , और उसी अवस्था में लगभग दो-तीन साल बिस्तर मे पड़े रहने के बाद वह अपनी मौत मर गया ।

उसके मरने के बाद लीलाधर ने जिम्मेदारी संभाली । वह भी धीरे धीरे मनोहर के साथ सारे काम सीखता चला गया । लीलाधर शुरु से ही भगवान को मानने वाला और सज्जन किस्म का व्यक्ति था । उसने धीरे-धीरे समय के साथ अन्य व्यवसाय भी प्रारंभ किए और बाबा विश्वनाथ के आशीर्वाद से धीरे धीरे अपना व्यवसाय आगे बढ़ाता चला गया ।

चांदनी महल और उसके पीछे के हिस्से में दफनाए हुए शवों की वजह से किसी ने भी चांदनी महल को लेने में दिलचस्पी नहीं दिखाई और वह धीरे-धीरे खंडहर होता चला गया । गलती से अगर वहां कोई चला जाता तो उसके साथ अजीब अजीब सी घटनाएं होती ।

जिसके चलते चांदनी महल और भूत बंगला दोनों ही लोगों के लिए अस्पृश्य होते चले गए ।
लीलाधर उस ओर कभी जाता ही नहीं था ।
उसी की तीसरी पीढ़ी का वारिस है फौजदार ।
फौजदार बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि का स्वामी और राजनीति में रुचि रखने वाला था ।
उसने धीरे-धीरे स्थानीय राजनीति में अपनी पैठ बना ली और विधायक बन गया था । इसके अलावा भी कई प्रकार के खानदानी व्यवसाय थे जो चलते रहते थे इसलिए पैसे की कोई कमी नहीं थी ।
चांदनी महल के विषय में वह भी जानता था लेकिन वह इन सब बातों पर विश्वास नहीं करता था । एक बार जब वह वहां पहुंचा तो वनराज के शयनकक्ष को देख कर उसे सरस्वती को वहां पर बसाने का विचार आया और उसने उस शयनकक्ष को नए सिरे से रिनोवेट करवा दिया ।

वह काफी अच्छी हालत में था अब जब फौजदार चांदनी महल आता तो उसी कमरे में सरस्वती उससे मिलती थी । बाकी समय में वह कमरा बंद रहता था ।

यह वही कमरा था जिसके अंदर जाने से मुझे गिरधारी ने मना किया था ,,,,,,,

वनराज का पुत्र लीलाधर अच्छे स्वभाव का स्वामी था और उसने वनराज के द्वारा उल्टे सीधे तरीकों से अर्जित की गई संपत्ति का अच्छे कार्यों में उपयोग करना प्रारंभ कर दिया ।

उसे भी उसके पिता द्वारा किए गए दुष्कर्म की जानकारी लोगों से प्राप्त होती रही । उसके गुरु ने उसे वनराज की संपत्ति का एक हिस्सा दान पुण्य के कार्यों में खर्च करने की सलाह दी थी ताकि उसके द्वारा किए गए दुष्कर्म का प्रभाव कम हो और परिवार में उन्नति रह सके ।

गुरु ने उसे यह भी बताया था कि वनराज के द्वारा स्त्रियों पर किए गए अत्याचारों का संतुलन तभी हो सकता है जब उनके लिए कुछ अच्छा कार्य किया जाए ।

उनके द्वारा दी गई सलाह के अनुसार वह हर साल अपने पिता के नाम से कम से कम 11 गरीब कन्याओं का विवाह अपने खर्चे पर संपन्न करवाता था । उसकी विधवा लीला को भी वनराज के कुकृत्यों की जानकारी

थी इसलिए वह भी उसकी आत्मा की शांति के लिए विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान करवाती रहती थी ।

वनराज के कुकर्मों के कारण उसे मृत्यु के बाद पिशाच योनि प्राप्त हुई ।

वनराज ने मृत्यु के पहले अनेक साधू सन्यासियों और योगियों का सानिध्य प्राप्त किया था और उन्हें अपने स्तर पर हर प्रकार से संतुष्ट करने की कोशिश भी की थी । जिसके बदले में उसे उनका आशीर्वाद भी मिला था । इन सब ने उसके पैशाची कर्मों को शांत करने में मदद अवश्य की थी लेकिन कर्म फल के रूप में उसे पिशाच योनि प्राप्त हुई थी ।

कहा जाता है कि

एक घड़ी आधी घड़ी ,आधी की पुनि आध ,
तुलसी संगत साधु की ,कटे कोटि अपराध।

इस मे महाकवि तुलसी दास जी कहते हैं कि साधु पुरुष की अल्प समय के लिए भी प्राप्त संगत से हमारे करोड़ों अपराध नष्ट हो जाते हैं ।

पैशाची कर्मों में लिप्त व्यक्ति भी अगर अपने अपराधों का प्रायश्चित करता हुआ सात्विक कर्मों में लिप्त होता है तो उसे मिलने वाले दंड में कमी हो जाती है । कुछ ऐसा ही वनराज के प्रकरण में भी हुआ था ।

इतना बताते बताते कपालिनी अचानक शांत हो गई । मैं समझ गया कि कोई आने वाला होगा । क्योंकि वैसी अवस्था में ही कपालनी अचानक से शांत हो जाती है ।

तब तक गिरधारी नींबू लेकर आ चुका था ।
तंत्र प्रयोगों में बलि का महत्व रहता है ।
सात्विक बलि के रूप में नींबू एक सर्वमान्य विकल्प है इसके अलावा कुम्हड़े की बलि भी आवश्यकता पड़ने पर दी जाती है लेकिन अधिकांश कार्यों में नींबू की बलि पर्याप्त होती है ।

मैंने उसे बाहर भेज दिया और सख्त ताकीद कर दी कि कोई भी व्यक्ति इस तरफ ना आए । मेरी बात मान कर उसने ऊपर आने की सीढ़ी पर लगा हुआ दरवाजा उढका दिया ।

जब से मैंने साधना के क्षेत्र में प्रवेश किया है तब से जब भी मैं बाहर निकलता हूं तो मेरे पास एक थैला अवश्य होता है । उस थैले में कुछ न्यूनतम आवश्यकता वाली सामग्रियां हमेशा पड़ी रहती है । जिसमें चावल के दाने, काली मिर्च के दाने, कुछ पांच मुखी रुद्राक्ष और कुछ अन्य सामग्रियां रहती है । वह थैला मेरे पास उस समय मौजूद था । मैंने उसमें से चावल के आटे को निकाला और उससे यंत्र का निर्माण प्रारंभ कर दिया ।

प्रेत आत्माओं की समस्या के निवारण के लिए कई प्रकार की विधियां प्रचलित है । उसमें जो सबसे अच्छी विधि है वह यह होती है कि संबंधित प्रेतात्मा अगर मुक्ति चाहती हो तो उसके लिए आवश्यक अनुष्ठान करके पूजन आदि करके उसे मुक्त कर दिया जाए । ऐसी स्थिति में जहां एक ओर प्रेत बाधा समाप्त होती है वही उसका आशीर्वाद भी प्राप्त होता है जिससे जीवन में आगे मदद मिलती रहती है ।

मैं यह चाहता था कि वहां उपलब्ध आत्माएं अगर इस प्रकार की कोई इच्छा व्यक्त करती हैं तो उस इच्छा को पूर्ण करके परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का प्रयास

करूँ । इसके लिए आवश्यक था कि उनका आह्वान किया जाए ।

आत्माओं के आह्वान के लिए अनेक विधियां प्रचलित है । जिसमें से कुछ विधियां जो सरलता से नेट आदि पर उपलब्ध है उसे प्लेन चिट या उईजा बोर्ड कहते हैं । इस प्रक्रिया में जब किसी आत्मा का आह्वान किया जाता है और प्लेन चिट बोर्ड के ऊपर पेंसिल फसाकर या उईजा बोर्ड में कटोरी के ऊपर उंगली रखकर अपने सवालों के जवाब प्राप्त किए जाते हैं ।

इसके अलावा किसी व्यक्ति को माध्यम बनाकर भी उसके द्वारा आत्मा का आह्वान किया जा सकता है । इसमें माध्यम के रूप में वे लोग चुने जाते हैं जिनको अशरीरी शक्तियों की अनुभूति आसानी से हो जाती है । या स्पष्ट शब्दों में कहूं तो जिनको भूत प्रेत दिखाई देते हैं, ऐसे लोग माध्यम बन सकते हैं ।
कुछ व्यक्ति जो ऐसी शक्तियों को देख सकते हैं और शक्ति संपन्न होते हैं वह अपने शरीर में भी इन आत्माओं का आह्वान कर लेते हैं । या फिर किसी न किसी माध्यम

से उनको अपने सामने उपस्थित करके अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त कर लेते हैं ।

यहां पाठकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि आत्मा हमारे जगत का विषय नहीं है ।

मानव जगत और आत्माओं के जगत के बीच में प्रकृति के द्वारा एक अलिखित रेखा खींची हुई है । जिसकी वजह से दोनों एक दूसरे के इलाकों में नहीं जा सकते और एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सकते । ऐसी प्राकृतिक सीमा का बेवजह उल्लंघन नहीं करना चाहिए । खासतौर से तब तो बिल्कुल नहीं जब आपके अंदर आध्यात्मिक शक्ति कम हो । अगर आप नियमित रूप से पूजा पाठ करते हैं , कोई आपका इष्ट है, जिसका मंत्र जाप या साधना आप निरंतर करते रहते हैं , विशेष रूप से हनुमान जी या महाकाली जैसी उग्र शक्तियों का जाप ! तो आप इस प्रकार के कार्य में प्रयास कर सकते हैं ।

अन्यथा यह जानबूझकर विपत्ति को निमंत्रण देने जैसा कार्य है ।

आत्माओं के आह्वान तक आपका नियंत्रण रहता है ।

कई बार उग्र आत्माएं जब आती है तो इतनी उठापटक मचाती हैं कि कमजोर दिल वाला व्यक्ति डर के मारे बेहोश हो सकता है ! उसका मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है !!

मजाक में इस प्रकार के प्रयोग भूलकर भी ना करें । कई बार ऐसा होता है कि आत्मा आने के बाद वापस जाने को राजी नहीं होती । आपने स्वयं उसे आमंत्रित किया है इसलिए उसके द्वारा किसी भी प्रकार के नुकसान पहुंचाने पर जिम्मेदारी आपकी स्वयं की होती है क्योंकि आपने उस अलिखित सीमा रेखा का उल्लंघन किया है और आप दंड के पात्र हो जाते हैं ।

इसलिए मेरी राय है कि भूल कर भी मजाक में या कर कर देख लेते हैं, वाले मोड में, इस प्रकार की कोशिश ना करें ! अन्यथा गंभीर दुष्परिणाम आपके सामने आ सकते हैं ।

जैसा कि आपको ज्ञात है मैं एक अघोरी हूं ! इसलिए मसानी शक्तियां और आत्माएं मेरे लिए नित्य का विषय है । उनके साथ संपर्क बनाना उनसे बातचीत करना या

उनसे किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त करना मेरे लिए बेहद सहज होता है, लेकिन उसके लिए भी निर्धारित प्रक्रिया पूजा आदि का किया जाना जरूरी है ।

अब मुझे यह ज्ञात करना था कि वह कौन सी शक्तियां हैं, जो इस बच्ची को परेशान कर रही है । मुझे उस स्थान पर अनेक शक्तियों का आभास हो चुका था, इसलिए मैं चाहता था कि एक बार उनसे संपर्क करके समाधान का प्रयास करूँ ।

चावल के आटे से यंत्र बनाने के बाद उस पर चार कोनों में मैंने चार नींबू रख दिया और मध्य में एक विशेष यंत्र को रखकर मैंने वहां उपस्थित आत्माओं का आह्वान करना प्रारंभ कर दिया ।

लगभग आधे घंटे के प्रयास के बाद पहली आत्मा उपस्थित हुई । वह माला की आत्मा थी । उसी की आत्मा बच्ची के साथ खेलती थी जिसे वह दीदी कहती थी । वह एक अत्यंत ही सात्विक आत्मा थी । जिसने जीवन में कुछ भी नहीं देखा था । जिंदगी में किसी का बुरा भी नहीं किया था । हां बहुत सारी भयावह चीखें

की बाधाओं से मुक्ति दिलाता है । इस कुंड का बखान गरुड़ पुराण में भी किया गया है। माना जाता है कि पिशाच मोचन मोक्ष तीर्थ स्थल की उत्पत्ति गंगा के धरती पर आने से भी पहले से है ।

काशी में मेरे एक मित्र पिशाच मोचन में भी थे । उनसे संपर्क करके अगले दिन मैंने उन सभी के लिए पूजन आदि संपन्न करवाया । सारे कर्मकांड संपन्न करने के बाद मुझे लगा कि चांदनी महल की वे सभी आत्माएं मुक्त हो गई ।

इसके बाद बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने के लिए मैं मंदिर पहुंचा ।
मंदिर के बाहर एक अघोरी बाबा बैठे हुए थे मैंने उनको प्रणाम किया और मंदिर में दर्शन करने के लिए जाने लगा !
मेरे मुड़ते ही उनका अट्टहास गुंजा !
साथ ही साथ आवाज आई - अभी और भी बहुत सारे लोग बाकी हैं ! तेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है ।
मैंने पलट कर उनकी ओर देखा तो उन्होंने कहा - जा बाबा के दर्शन करके वापस आ ।

मैं मंदिर में प्रवेश कर गया !
सभी भगवान शिव के सिद्ध क्षेत्रों की तरह ही भगवान काशी विश्वनाथ के दर्शन करने से एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है !
जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता !
मैं उन्हें देखता हुआ शून्य भाव में वही खड़ा रहा ।
उसी अवस्था में लगभग 10 मिनट बीत गए होंगे । वहां से बाहर निकल कर जब मैंने अघोरी बाबा को ढूँढना चाहा तो वह अपनी जगह पर दिखाई नहीं दिया ।

अब मेरे मन में भी हलचल मची हुई थी, क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैंने चांदनी महल की जितनी आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करवाई थी वह शायद पर्याप्त नहीं थी । अन्यथा बाबा के द्वारा इस प्रकार का संकेत प्राप्त नहीं होता ।

बाबा मंदिर के सामने दिखाई नहीं दिया तो मैंने उसे आसपास के इलाकों में भी ढूंढने की कोशिश की लेकिन वह दूर दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था ।
यह बड़ी अजीब सी बात थी ।

मैं मंदिर में प्रवेश कर गया !
सभी भगवान शिव के सिद्ध क्षेत्रों की तरह ही भगवान काशी विश्वनाथ के दर्शन करने से एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती है !
जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता !
मैं उन्हें देखता हुआ शून्य भाव में वही खड़ा रहा ।
उसी अवस्था में लगभग 10 मिनट बीत गए होंगे । वहां से बाहर निकल कर जब मैंने अघोरी बाबा को ढूँढना चाहा तो वह अपनी जगह पर दिखाई नहीं दिया ।

अब मेरे मन में भी हलचल मची हुई थी, क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा था कि मैंने चांदनी महल की जितनी आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करवाई थी वह शायद पर्याप्त नहीं थी । अन्यथा बाबा के द्वारा इस प्रकार का संकेत प्राप्त नहीं होता ।

बाबा मंदिर के सामने दिखाई नहीं दिया तो मैंने उसे आसपास के इलाकों में भी ढूंढने की कोशिश की लेकिन वह दूर दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था ।
यह बड़ी अजीब सी बात थी ।

जैसे बाबा विश्वनाथ अजीब हैं वैसे ही उनकी लीलाएं भी अजीब है !
यह सोचता हुआ मैं वापस होटल की ओर बढ़ गया ।

दीपावली की रात को बाबा के सानिध्य में काशी में रहने का विचार अचानक ही मन में आया था । पहले से कुछ भी तय नहीं था कि दीपावली पर करना क्या है । दीपावली को कालरात्रि भी कहा जाता है । कालरात्रि साधनाओं के लिए अति विशिष्ट रात्रि मानी जाती है । इसके अलावा नवरात्रि और शिवरात्रि की महत्ता के बारे में आप जानते ही होंगे ।

धनतेरस का दिन गिरधारी के चांदनी महल प्रकरण में निकल चुका था ।
चौदस का आधा हिस्सा पिशाच मोचन पर कर्मकांड आदि पूरा करने में निकल चुका था । यानी अगले दिन की तैयारी के लिए मेरे पास केवल कुछ घंटे बाकी थे ।

पिशाच मोचन में किए जाने वाले कर्मकांड के दौरान गिरधारी भी मेरे साथ ही था । पूजा पाठ पूरा हो जाने के बाद गिरधारी को मैंने वापस भेज दिया था । सारी

दीपावली के दिन चार स्थिर लग्न होते हैं जिसमें पूजन संपन्न किया जा सकता है । इसमें सामान्यतः शाम के समय जो मुहूर्त होता है उसी मे लक्ष्मी पूजन संपन्न किया जाता है ।
इसके अलावा एक लग्न या मुहूर्त लगभग अर्ध रात्रि के समय भी आता है । इसमें महालक्ष्मी का पूजन भी किया जा सकता है और यह मुहूर्त महाकाली के पूजन का भी सिद्ध मुहूर्त होता है ।

भारत में कई प्रदेश तंत्र के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं । इसमें सबसे ऊपर का नाम स्त्री देश कामरुप कहे जाने वाले असम राज्य का है । यहाँ के तांत्रिक विशेष रूप से महिला तांत्रिकों का कोई जवाब नहीं होता । वह अद्भुत होती हैं ! और प्रचंड तांत्रिक शक्तियों से संपन्न हुआ करती है । इसी तरह से आदिवासी क्षेत्रों में भी कई उच्च कोटि की तंत्र विद्याएं प्रचलित है । कई अन्य राज्य भी जैसे हिमाचल केरल आदि तांत्रिकों का गढ़ रहे हैं ।

बंगाल भी तंत्र साधना का गढ़ रहा है । विशेष रूप से शक्ति साधनाएं बंगाल में काफी प्रचलित रही है ।
इन मे से कई साधक बनारस में भी आकर बस गए थे ।

दीपावली के दिन चार स्थिर लग्न होते हैं जिसमें पूजन संपन्न किया जा सकता है । इसमें सामान्यतः शाम के समय जो मुहूर्त होता है उसी मे लक्ष्मी पूजन संपन्न किया जाता है ।
इसके अलावा एक लग्न या मुहूर्त लगभग अर्ध रात्रि के समय भी आता है । इसमें महालक्ष्मी का पूजन भी किया जा सकता है और यह मुहूर्त महाकाली के पूजन का भी सिद्ध मुहूर्त होता है ।

भारत में कई प्रदेश तंत्र के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं । इसमें सबसे ऊपर का नाम स्त्री देश कामरुप कहे जाने वाले असम राज्य का है । यहाँ के तांत्रिक विशेष रूप से महिला तांत्रिकों का कोई जवाब नहीं होता । वह अद्भुत होती हैं ! और प्रचंड तांत्रिक शक्तियों से संपन्न हुआ करती है । इसी तरह से आदिवासी क्षेत्रों में भी कई उच्च कोटि की तंत्र विद्याएं प्रचलित है । कई अन्य राज्य भी जैसे हिमाचल केरल आदि तांत्रिकों का गढ़ रहे हैं ।

बंगाल भी तंत्र साधना का गढ़ रहा है । विशेष रूप से शक्ति साधनाएं बंगाल में काफी प्रचलित रही है ।
इन मे से कई साधक बनारस में भी आकर बस गए थे ।

उनके वंशज आज भी बनारस में पाए जाते हैं । साधना के क्षेत्र में बंगाल के साधकों को काफी उच्च कोटि का साधक माना जाता रहा है ।

आप किसी बंगाली परिवार को जानते होंगे तो उन से काली साधना पर चर्चा करेंगे तो आपको पता चलेगा कि अधिकांश बंगाली दीवाली पूजन की रात को महाकाली का पूजन संपन्न करते हैं । जैसा कि मैंने पहले ही कहा है तंत्र साधना के क्षेत्र में बंगाल शुरू से ही काफी आगे रहा है इसलिए आप दीवाली की रात्रि में काली साधना का महत्व समझ ही गए होंगे ।

महाकाली की साधना जीवन का सौभाग्य होता है ।
महाकाली की साधना करने के लिए बहुत ज्यादा तामझाम की जरूरत नहीं होती है ।
वह भी भगवान शिव के जैसे दिगंबर हैं और श्मशान के अंदर स्थित है । इसलिए उनके पूजन में विशेष विधियों की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है और बहुत ज्यादा प्रतिबंधों के साथ भी साधना करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

ऐसे गृहस्थ जो बहुत प्रतिबंधों के साथ साधना करने में अपने आप को अक्षम मानते हैं उन्हें महाकाली की साधना करनी चाहिए ।
वह यह साधना अपनी इच्छा अनुसार किसी भी विधि से कर सकते हैं !
बस उनका विश्वास महामाया के प्रति अटूट होना चाहिए !
उसके बाद बहुत कुछ ऐसा होता है जो आपको मंत्र और साधना की शक्ति पर विश्वास करने के लिए विवश कर देगा ।

महाकाल और महाकाली को मूल शक्ति माना जाता है, इसलिए साधना जगत में इन दोनों का पूजन और साधना करने से तंत्र साधना का क्षेत्र व्यापक रूप में खुल जाता है और अन्य साधनाओं में सफलता भी ज्यादा शीघ्रता से प्राप्त हो जाती है ।

दीपावली जैसे सिद्ध अवसर पर महाकाल स्वरूप बाबा काशी विश्वनाथ के सानिध्य में उन्हीं की शक्ति महाकाली की साधना करने का सौभाग्य प्राप्त करने का आकांक्षी हर साधक होता है । काली साधना के विषय

में थोड़ा सा चिंतन मेरे मन में अवश्य था लेकिन मेरे मन में कुछ स्पष्ट नहीं था कि मुझे क्या पूजन करना है ? बस मन में विचार आया कि बाबा के दरबार में पहुंचना है और मैं आ गया ।

मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कह सकता हूं कि किसी भी साधक के जीवन में कुछ भी घटना या किसी भी स्थान पर जाना बेवजह नहीं होता है । उसके पीछे महामाया का कुछ ना कुछ इंगित अवश्य होता है । यही सब सोचते सोचते मैं अपने होटल के कमरे में वापस आ गया था । उस समय लगभग दोपहर के 3 बज रहे होंगे । कमरे में आकर मैंने चाय मंगवाई और साथ ही कुछ खाने के लिए लाने के लिए कहा ।

अगर आप उत्तर प्रदेश गए होंगे तो आपको दो चीजों का फरक बिल्कुल साफ साफ दिखाई देगा । एक तो आपको भूख बहुत अच्छी लगेगी और दूसरा आपका पाचन बहुत बढ़िया होगा । यह वहां की हवा का असर भी हो सकता है !

मुझे तो भूख बड़े जोर की लग आई थी ! ऐसी स्थिति में कुछ खा लेने का विचार मन में आया । होटल का नौकर लगभग अठारह उन्नीस साल का एक युवक था !
नाम था बंटी !!

मैंने अपने लिए भोजन लेकर आने के लिए कहा । कुछ देर में बंटी चार रोटियां और आलू मटर की सब्जी लेकर आ गया । कसकर भूख लगी थी इसलिए चार रोटियों में मन नहीं भरा । मैंने उसे आवाज देकर दो रोटियां और मंगवा ली !!
जब रोटी अंदर चली गई तब जाकर आत्मा को शांति महसूस हुई और थोड़ी देर में मैं बिस्तर पर पसर गया !
लेटते ही नींद भी आ गई ।

आमतौर पर मुझे सपने बहुत कम आते हैं । लेकिन नींद लगते ही अचानक उसी अघोरी बाबा का बिम्ब सामने आ गया । उनके मुंह से फिर से वही बात निकली कि अभी बहुतों की मुक्ति बाकी है और फिर वह गायब हो गए !

उस अघोरी बाबा का इस प्रकार से बार बार आना मेरे लिए एक विचित्र प्रकार का अनुभव था । मुझे लगा संभवतः महामाया कोई संकेत करना चाहती होगी ..... लेकिन.....

किसकी मुक्ति होगी और कैसे होगी यह समझ में नहीं आ रहा था .....

जैसे ही अघोरी बाबा गायब हुए, एक साथ बहुत सारे बच्चों के रोने की आवाज आने लगी !

जैसे उन्हें मारा पीटा जा रहा हो !!

मैं हड़बड़ा कर उठ गया ।

यह बड़ी ही अजीब सी बात थी क्योंकि अघोरी बाबा का इस प्रकार से कहना !

फिर बच्चों का रोना !!

इन सब का कुछ आपस में तालमेल जरूर होगा !

यह सोच कर मैं फिर से सोने की कोशिश में बिस्तर पर लेट गया ।

फिर से नींद लग गई !

अब की बार फिर एक अजीब सा सपना आया । शुरू में चांदनी महल दिखाई दिया ।

एक कमरा था जिसमें एक महिला प्रसव पीड़ा से तड़प रही थी ।

आप लोग जानते ही होंगे कि स्त्री के लिए काफी दर्दनाक अनुभव होता है बच्चे का प्रसव !
उस अनुभव से गुजरने के बाद एक मां को उसका बच्चा प्राप्त होता है !
लंबी प्रसव पीड़ा के बाद एक शिशु का जन्म होता है ।
जन्म लेते ही बच्चे को मां के हाथों सौंपा जाता है !
यह एक सामान्य प्रक्रिया है .....
लेकिन जो दृश्य में देख रहा था उसमें कुछ और ही घटित हो रहा था ।
शिशु के जन्म लेते ही चेहरे से ही क्रूर दिखने वाली दाई उस बच्चे को लेकर कमरे से बाहर निकल गई !
कमरे के बाहर करीब सात आठ लोग खड़े हुए थे ।
उसमें से 2 लोग आगे बढ़े !
दाई ने उस बच्चे को उन्हें सौंप दिया ।
वह शिशु बड़ी जोर जोर से रो रहा था ।
अंदर से उस महिला के जोर जोर से रोने की आवाज भी आ रही थी !

वे लोग चांदनी महल से बाहर निकले और तेजी से घने पेड़ों के बीच से गुजरने लगे !

उसके बाद जो मैंने देखा वह पाशविकता की पराकाष्ठा थी !

उन दोनों मे से एक ने उस नवजात शिशु को एक चबूतरे के पास जाकर हवा में उछाल दिया और वह जाकर एक दीवार के पीछे गिर गया ! फड़ की आवाज आई जैसे कुछ जमीन से या दीवाल से जोर से टकराया हो .....

यह कुछ कुछ वैसा ही था जैसे हम कचरे को पॉलिथीन में भरने के बाद उसे कचरे के डब्बे में उछालते हैं .....
लेकिन किसी मानव शिशु को इस प्रकार से उछालना मेरी कल्पना से भी परे था !
मैं फिर हडवड़ा कर उठ गया ।

एक नन्हा शिशु बेहद अबोध और मासूम होता है !
उसे इस प्रकार से मौत के घाट उतार देना बेहद क्रूर और निर्मम था !

उठकर मैंने एक गिलास पानी पिया और थोड़ी देर उस दृश्य को याद करके बैठा रहा !!
उसकी याद आते ही शरीर में झुरझुरी सी आ जा रही थी ।

थोड़ी देर तक उसी के ख्यालों में डूबा रहा फिर बिस्तर पर लेट गया और इस बार गहरी नींद आ गई ।
बिस्तर पर लेटे हुए लगभग घंटा भर गुजरा होगा, जब दरवाजे का कुंडा खड़का ।

दो तीन बार अगर नींद डिस्टर्ब हो जाए और उसके बाद मुश्किल से आपको नींद आ जाए तो इच्छा यह होती है कि वह नींद पूरी हो जाए । इस प्रकार की गहरी नींद लगी हुई हो तो इस प्रकार से दरवाजा खड़कना सबसे दुखदायक बात होती है,
लेकिन उठना तो था ही .....
दरवाजा खोल कर देखा तो सामने माधुरी खड़ी मुस्कुरा रही थी !

माधुरी[1] एक अत्यंत ही उच्च कोटि की तंत्र साधिका है । जिसके साथ कुछ दुर्लभ युगल साधनाएं संपन्न करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था ।
माधुरी ने गहरे नीले रंग की जींस और आसमानी रंग का गोल गले का टीशर्ट पहना हुआ था । उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वह इतनी उच्च कोटि की तंत्र साधिका है । किसी सामान्य मॉडर्न युवती की तरह ही वह लग रही थी ।

उसी के साथ खड़ा हुआ था बंटी !
बंटी कभी उसकी तरफ देखता और कभी अर्थपूर्ण निगाहों से मेरी तरफ देखता !

मैंने उसे दो चाय लाने के लिए कह कर भेज दिया ।
जाते जाते वह अपनी बात कहता गया - साहब ! गेस्ट का अलग चार्ज लगेगा ।
होटल या लॉज का जो बिजनेस होता है, उसमें छोटे होटल हो या बड़े अगर आप के साथ रहने के लिए कोई और आ जाए तो वह गेस्ट का चार्ज करते ही हैं । उसी के विषय में बंटी बात कर रहा था ।

माधुरी के अचानक से इस प्रकार आने से मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि बाबा के दरबार में आने का सौभाग्य प्राप्त होने के पीछे कोई न कोई साधनात्मक कारण भी अवश्य होगा !

जिस पर से अब माधुरी पर्दा उठाएगी ।

मैंने माधुरी से अंदर आने का आग्रह किया । वह कमरे के अंदर आकर कुर्सी पर बैठ गई ।

थोड़ी देर में बंटी चाय लेकर आ गया । इधर उधर की बातें होती रहीं और चाय खत्म होने के बाद माधुरी ने कहा - चलो !

कहां जाना है ? यह पूछने का कोई मतलब नहीं था क्योंकि माधुरी बताने वाली नहीं थी !

इसलिए मैं चुपचाप अपना झोला टांग कर उसके साथ हो लिया ।

लाज के नीचे उसकी बुलेट खड़ी थी । उसने किक मारकर बुलेट स्टार्ट की और मुझे पीछे बैठने का इशारा किया ।

मैं पीछे बैठ गया ।

उसके बाद बुलेट सरपट दौड़ने लगी !

रास्ता मुझे कुछ जाना पहचाना सा लग रहा था । थोड़ी देर बाद मुझे समझ आया कि हम लोग तो चांदनी महल की ओर ही जा रहे थे ।

मेरे मन में विचार आया कि मैं उससे पूछ लूं कि हम वहां क्यों जा रहे हैं ?

लेकिन अपनी आदत के अनुसार वह बताने वाली नहीं थी .....

इसलिए मौन रह गया ।

चांदनी महल के गेट के पास पहुंचने पर मैंने सोचा कि शायद यह अंदर जाने वाली होगी लेकिन वह चांदनी महल पार करके आगे निकल गई ।

चांदनी महल से कुछ दूर आगे जाने पर एक और खंडहर नुमा इमारत दिखाई दे रही थी ।

जिसे देखने से ही उसके भूतहा होने का एहसास होता था ।

यह वही बंगला था, जिसमें भुतहा बाबा निवास किया करते थे, यानी कि भूत बंगला ।

चांदनी महल और भूत बंगला दोनों शहर से थोड़ा हटकर थे ।

भूत बंगले के चारों तरफ दीवार उठी हुई थी जो कई जगह से टूट फूट गई थी । काफी बड़ा इलाका भूत बंगले का था ।

उसे देखते ही मन के अंदर भय का संचार होता था ।

पूरे माहौल में एक अजीब सी नीरवता विद्यमान थी ।

मैं वातावरण का भारीपन महसूस कर सकता था !

ऐसा भारीपन तब आता था जब किसी अशरीरी शक्ति की वहां पर मौजूदगी हो ।

एक अजीब सी मनहूसियत हर ओर बिखरी हुई थी ।

जैसे ही हम लोगों ने उसकी बाउंड्री के अंदर कदम रखा ..

जोर की आवाज गूंजी !

यह आवाज किसी के दहाड़े मारकर रोने जैसी थी !

ऐसी आवाज !

जिसे सुनकर रूह तक कांप जाए !

एक पल के लिए मेरा दिल धक से रह गया.....

आप खुद कल्पना करें.....

ढलती हुई शाम हो .....

और किसी सुनसान खंडहर के पास आप पहुंचे!

अचानक.....

किसी के जोर से रोने की आवाज आये .....

और शांत हो जाए !

तो.....

आपकी मन:स्थिति क्या होगी ?

ठीक वही मन:स्थिति मेरी थी ।

यह संकेत था कि वहां पर कुछ अजीब सा मौजूद है!

माधुरी के चेहरे पर शिकन तक नहीं आई थी ।

जैसे इन सब का उसके ऊपर कोई असर ही नहीं पड़ रहा हो ।

उसने मेरी तरफ देखा और कहा - देह रक्षा कर लो !

बहुत सारी पैशाची शक्तियां मौजूद है ।

मेरे गले में गौरी शंकर रुद्राक्ष का दाना रुद्राक्ष माला में गूंथा हुआ पड़ा था जो गुरुदेव ने मुझे दिया था । मैंने उसे अपनी मुट्ठी में लिया और पहले पाशुपत मंत्र का

उच्चारण कर लेने के बाद महाकाली के सिद्ध रक्षा मंत्रों का प्रयोग करते हुए अपने आप को आबद्ध किया ।

जब भी किसी ऐसे स्थान पर जाना हो, जहां पर अशरीरी शक्तियां मौजूद हो । तो पहले अपनी देह की सुरक्षा करना अनिवार्य होता है । इसके लिए तंत्र में देह रक्षा मंत्रों का प्रावधान है । जिनके प्रयोग के द्वारा हम अपने शरीर को सुरक्षित कर सकते हैं । श्मशान में प्रवेश करते समय भी साधक इस प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करके अपने आप को सुरक्षित करते हैं !
तभी साधनाएं प्रारंभ करते हैं !
अन्यथा वे शक्तियां आप को नुकसान पहुंचा सकती हैं !

माधुरी के साथ मैं आगे बढ़ता चला गया ।
वह ऐसे आगे जा रही थी, जैसे वर्षों तक इसी बंगले में उसने निवास किया हो । वह उसके दक्षिणी छोर की तरफ बढ़ती चली गई । दक्षिणी छोर में चबूतरा बना हुआ था जो लगभग आधा ढल चुका था । उस चबूतरे के बाद एक बड़ा सा कुआं दिखाई दे रहा था । कुएं की मुंडेर गोल आकार की ना होकर कुछ-कुछ तिकोने आकार की थी । उस प्रकार का कुआं मैंने आज

तक नहीं देखा था । कुएं की मुंडेर लगभग 4 फुट के आसपास ऊंची रही होगी । अगर आप लोगों ने कुआं देखा होगा तो आप जानते होंगे कि कुएं की मुंडेर या उसका जो घेरा बनाया जाता है वह मुश्किल से डेढ़ या दो फिट ऊंचाई का होता है ।

यह मैं पुराने कुओं की बात कर रहा हूं । अभी के समय में तो कई अलग-अलग किस्म के डिजाइन बना दिए जाते हैं । जिनकी ऊंचाई ज्यादा होती है लेकिन पुराने कुओं में आमतौर पर डेढ़ 2 फीट से ज्यादा ऊंची मुंडेर नहीं हुआ करती थी । यह पहली बार था जब मैं तकरीबन 4 फुट ऊंची मुंडेर देख रहा था ।

माधुरी सधे हुए कदमों से उस कुएं की तरफ बढ़ रही थी !

मैं उसी के पीछे पीछे चल रहा था ।

शाम ढलने की स्थिति में आ रही थी और हल्का हल्का अंधेरा चारों तरफ बिखरने लगा था !

भूत बंगले के अंदर इतने सारे पेड़ थे कि शायद दिन में भी अंधेरे जैसा माहौल ही रहता होगा । उस समय तो शाम होने के कारण और भी अंधेरा महसूस हो रहा था !

पेड़ छोटे-छोटे नहीं थे !

बल्कि बेहद विशालकाय पेड़ थे !!
करीब करीब 30 से 40 फुट लंबे !!!
उनमें एक बरगद का पेड़ भी था । जिसकी शाखाएं हर तरफ बिखरी हुई दिखाई दे रही थी । पेड़ों पर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज आ रही थी ।

जैसे ही हम लोग कुएं के साथ बने हुए प्लेटफार्म पर चढ़े ! अचानक 30-40 चमगादडों का एक झुंड उड़ता हुआ आया और हमारे चारों तरफ चक्कर काटने लगा ।
माधुरी ने अपनी जींस की जेब में हाथ डाला और कुछ छोटी सी चीज निकाली !
उसे अपनी दो उंगलियों के बीच में दबाकर अपने हाथ को हवा में उठाया .....
और उनकी तरफ उछाल दिया ।
संभवत: उसने कोई मंत्र प्रयोग किया था ।

जैसे ही वह मंत्र सिद्ध चीज उनके झुंड से जा टकराई .....
भयानक चीख निकालते हुए चमगादडों का वह झुंड वहां से भाग खड़ा हुआ !

स्कूटर हो !

कोई खंबा हो !

या दीवाल हो !!

ऐसा माना जाता है कि वह इस प्रकार से अपना दायरा दिखाते हैं कि यह मेरा इलाका है ।

दूसरी चीज .. .. ..

किसी दूसरी जगह का कुत्ता अगर आ जाए तो वह एक साथ इतनी तेजी से उसकी और दौड़ते हैं कि आपको लगेगा कि वह अभी उस दूसरे कुत्ते को मार ही डालेंगे ! लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं होता.....

दो-चार छह मिनट की चिल्ला चोट के बाद मामला रफा-दफा हो जाता है और वह कुत्ता अपने रास्ते चला जाता है और यह कुत्ते वापस अपनी जगह पर आ जाते हैं ।

कुछ कुत्तों को गाड़ियों के पीछे भोंकते हुए दौड़ने का शौक रहता है !

वह करते कुछ नहीं है लेकिन जब आपकी गाड़ी के पीछे भागते हुए दौड़ते हैं तो आपकी हालत खराब हो जाती है !

सबसे खास बात यह है कि कुत्ते रात के समय बड़े सक्रिय रहते हैं दिन के समय नहीं ।
जब धूप निकली रहती है तो अधिकांश कुत्ते आपको सोते अलसाये हुए पड़े दिखाई देंगे ।

उनकी सबसे खतरनाक खासियत है उनका रोना !
आमतौर पर कुत्ते नहीं रोते हैं !
वह भोंकते हैं !!
कई बार रात के अंधेरे में आपने सुना होगा .....
शुरु मे एक कुत्ता बड़ी मनहूस सी आवाज में रोना चालू करता है !!!
फिर और कुत्ते उसकी आवाज की नकल करते हुए रोना चालू कर देते हैं !
अगर किसी अंधेरे या सुनसान स्थान पर इस प्रकार की आवाज सुन ले तो सुनने वाले की हालत पतली होना तय होता है ।

कुत्तों के अंदर अशरीरी शक्तियों को भांपने की क्षमता होती है ऐसा माना जाता है ।
इसलिए जब इस प्रकार की शक्तियां दिखाई देती हैं तभी वे एक सुर में रोना चालू कर देते हैं ।
उस खंडहर के अंदर दो-चार कुत्ते थे उन्होंने रोने की शुरुआत की ..
और उनके सुर में सुर मिलाया आसपास के कुत्तों ने ।
कुल मिलाकर पूरा समा बांध दिया ।

अंधेरी पेड़ों से घिरी हुई उस सुनसान जगह मे जहां 10-12 फुट के बाद क्या है , यह भी नहीं दिखाई दे रहा था वहां हम लोग खड़े थे ।
चारों तरफ से कुत्तों के रोने की आवाज आ रही थी ! मेरे शरीर में झुरझुरी सी दौड़ने लगी । क्योंकि वह आवाजें ही इतनी मनहूस थी ।
अचानक उन्होंने रोना बंद कर दिया ...
मैंने थोड़ी राहत की सांस ली तभी फिर से उनका रोना चालू हो गया ...
काफी देर तक वैसा ही चलता रहा !
माहौल भयानक होता जा रहा था !

ऐसा लग रहा था जैसे सारा भूतों का डेरा वही जमा हो गया हो ।
एक अजीब सी दुर्गंध हवा में फैली हुई थी ...

हम दोनों कुएं की मुंडेर के पास पहुंच चुके थे ।
अचानक बच्चों के रोने की आवाज आने लगी ।
नवजात शिशुओं के रोने की आवाज !
ठीक वैसी आवाज जैसे हम फिल्मों में बच्चे के जन्म के समय सुनते हैं ।
चीख चीख कर रोते हुए बच्चों की आवाज !
वह भी एक दो नहीं !
ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे बच्चे एक साथ रो रहे हो ।
उस माहौल में बच्चों के रोने की आवाज सुनना माहौल की भयावहता को और बढ़ा रहा था ।
बिल्कुल किसी भूतिया पिक्चर की तरह माहौल हो गया था ।

माधुरी कुएं की मुंडेर तक पहुंच चुकी थी !
मैं भी वहां पहुंचा और अंदर झांकने का प्रयास किया ।
अंदर अंधेरा था !

ऐसा लग रहा था जैसे सारा भूतों का डेरा वही जमा हो गया हो ।
एक अजीब सी दुर्गंध हवा में फैली हुई थी ...

हम दोनों कुएं की मुंडेर के पास पहुंच चुके थे ।
अचानक बच्चों के रोने की आवाज आने लगी ।
नवजात शिशुओं के रोने की आवाज !
ठीक वैसी आवाज जैसे हम फिल्मों में बच्चे के जन्म के समय सुनते हैं ।
चीख चीख कर रोते हुए बच्चों की आवाज !
वह भी एक दो नहीं !
ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे बच्चे एक साथ रो रहे हो ।
उस माहौल में बच्चों के रोने की आवाज सुनना माहौल की भयावहता को और बढ़ा रहा था ।
बिल्कुल किसी भूतिया पिक्चर की तरह माहौल हो गया था ।

माधुरी कुएं की मुंडेर तक पहुंच चुकी थी !
मैं भी वहां पहुंचा और अंदर झांकने का प्रयास किया ।
अंदर अंधेरा था !

ठीक वैसे ही आवाज जैसे अचानक कोई चोट लगने पर हमारे मुंह से निकल जाती है !!

मोमबत्ती जलने के बाद माधुरी ने अपनी बैग में से एक तांबे का डब्बा निकाला । डब्बा तकरीबन 1 फुट व्यास का रहा होगा । उसका ढक्कन खोल कर उसने सामने रख दिया । उस डब्बे के अंदर मधुमक्खी के छत्ते के जैसा आकार वाला सफेद रंग का कोई पदार्थ रखा हुआ था । जिस प्रकार से मधुमक्खी के छत्ते में छोटे-छोटे छेद दिखाई देते हैं वैसे ही छेद उस सफेद पदार्थ में दिखाई दे रहे थे । वह भी लगभग गोल आकृति का था ।

उसे वहां पर अपने सामने रखने के बाद माधुरी ने मुझे वज्र यंत्र बनाने के लिए कहा । मैंने उस चबूतरे के ऊपर यंत्र का निर्माण कर दिया । उस यंत्र के ऊपर माधुरी ने वह पात्र रख दिया ।

उसके बाद हम दोनों ने मिलकर गुरु मंत्र का जाप प्रारंभ किया । किसी भी कार्य या साधना को करने से पहले गुरु मंत्र का जाप कर लेना चाहिए । इससे एक ओर गुरु की कृपा प्राप्त होती है और दूसरा किसी जटिल

परिस्थिति में गुरु मंत्र के जाप से आई हुई गुरु शक्तियां आपको बचा कर निकाल ले जाती हैं ।
इसलिए साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सबसे पहले गुरु मंत्र की साधना करना अनिवार्य माना जाता है ।
गुरु मंत्र का कम से कम सवा लाख जाप कर लेने के बाद ही किसी दूसरी साधना में प्रवृत्त होना चाहिए ।
जब भी दूसरी साधना में प्रवृत्त हो तो मंत्र जाप से पहले एक माला गुरु मंत्र और मंत्र जाप समाप्त हो जाने के बाद पुनः एक माला गुरु मंत्र कर लेने से साधना की सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है ।

माधुरी के द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों से मैं यह समझ गया था कि यह किसी आत्मा को मुक्त करने के लिए उसे आह्वान करने की क्रिया का प्रारंभ है । यह मुझे नहीं मालूम था कि किसकी आत्मा का आह्वान किया जाने वाला था ।

तंत्र में कई प्रकार की विधियां प्रचलित है । मैं उस विधि को जानता था जिसके अनुसार मैंने चांदनी महल

परिस्थिति में गुरु मंत्र के जाप से आई हुई गुरु शक्तियां आपको बचा कर निकाल ले जाती हैं ।
इसलिए साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सबसे पहले गुरु मंत्र की साधना करना अनिवार्य माना जाता है ।
गुरु मंत्र का कम से कम सवा लाख जाप कर लेने के बाद ही किसी दूसरी साधना में प्रवृत्त होना चाहिए ।
जब भी दूसरी साधना में प्रवृत्त हो तो मंत्र जाप से पहले एक माला गुरु मंत्र और मंत्र जाप समाप्त हो जाने के बाद पुनः एक माला गुरु मंत्र कर लेने से साधना की सफलता मिलने की संभावना बढ़ जाती है ।

माधुरी के द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों से मैं यह समझ गया था कि यह किसी आत्मा को मुक्त करने के लिए उसे आह्वान करने की क्रिया का प्रारंभ है । यह मुझे नहीं मालूम था कि किसकी आत्मा का आह्वान किया जाने वाला था ।

तंत्र में कई प्रकार की विधियां प्रचलित है । मैं उस विधि को जानता था जिसके अनुसार मैंने चांदनी महल

में चांद बेगम और उनकी सहयोगी आत्माओं का आह्वान करके उन्हें पिशाच मोचन में विसर्जित किया था । कुछ-कुछ वैसे ही क्रियाएं माधुरी के द्वारा भी की जा रही थी । इसलिए मुझे आभास हुआ कि अभी आत्माओं को मुक्त करने की किसी क्रिया का अंग है । वह पूरी प्रक्रिया करने के साथ-साथ मुझे समझाती भी जा रही थी ।

तंत्र साधना में किताबों में लिखी हुई विधियां देख कर कभी भी जटिल प्रयोग नहीं करना चाहिए । अगर संभव हो तो किसी अनुभवी साधक के साथ बैठकर ही या उसके निर्देशन में ही साधनाएं करनी चाहिए । इसी लिए तंत्र साधना में गुरु का महत्व सबसे अधिक बताया गया है । गुरु वह होता है जो शिष्य के साथ बैठकर उसे साधनाएं सिखाता है ।

कई बार ऐसा होता है कि सिद्ध गुरु के जाने के बाद उनका पुत्र गुरु मान लिया जाता है । हम यह सोचते हैं कि फलाना गुरु का यह पुत्र है इसलिए यह भी सिद्ध होगा, लेकिन उसके अंदर अपने पिता के समान सिद्धियां होना जरूरी नहीं है ।

यह एक अकाट्य सत्य है कि आमतौर पर अच्छा गुरु वही होता है जिसने स्वयं साधनाएं की हो ।

किसी साधक का पुत्र हो जाना या किसी गुरु का पुत्र हो जाना साधना क्षेत्र में गुरु बनने के लिए पर्याप्त नहीं है । जब तक वह स्वयं साधना के क्षेत्र में तप कर ना निखरा हो तब तक वह किसी को साधनाएं नहीं सिखा सकता ।

इसलिए गुरु बनाने से पहले यह अवश्य सुनिश्चित कर लें कि गुरु ने स्वयं साधनाएं की है या वह केवल हवाबाजी कर रहा है ! या किसी के नाम का सहारा लेकर गुरु बनने का प्रयास कर रहा है ।

मंत्र तथा तंत्र साधना में स्वयं गुरु को पूजन कराने का ज्ञान होना चाहिए । तभी वह शिष्य को यह चीजें सिखा सकता है । कई बार गुरु स्वयं उपस्थित नहीं होता तो वह किसी वरिष्ठ शिष्य को भेजकर साधना या प्रक्रियाओं की विधि समझाता है ।

माधुरी मेरे लिए उसी प्रकार की गुरु तुल्य साधिका थी । जिसने मुझे अनेक बार साधना के क्षेत्र मे मार्गदर्शन

दिया था और आज फिर एक नई विधि सीखने का मौका मिल रहा था ।

तिब्बती भाषा में 6 अक्षरों का एक मंत्र उसने मुझे बताया और उसके जाप करने का तरीका भी बताया । उसके बाद हम दोनों ने उस मंत्र का जाप प्रारंभ कर दिया । वह मंत्र आत्मा के आह्वान का मंत्र था ।
लगभग आधे घंटे तक हम लोगों का मंत्र जाप चलता रहा ।
इस दौरान कुछ भी घटित नहीं हुआ लेकिन जैसे ही आधा घंटा बीता.....
हमारे चारों तरफ सरसराहट होने लगी !
ऐसा लग रहा था जैसे बहुत सारे लोग वहां पर खड़े हुए हो .....
लेकिन कोई दिखाई नहीं दे रहा था.....
पत्तियों के खड़कने की आवाज से आभास हो रहा था कि कोई उन पर चल रहा है !
लेकिन .....
दूर दूर तक कोई भी नहीं दिख रहा था !

मोमबत्ती का हल्का पीला प्रकाश बिखरा हुआ था और मंत्र जाप चालू था !
लगभग 45 मिनट हुए होंगे जब फटाक की एक आवाज आई ।

उसके साथ ही दोनों मोमबत्तियां बुझ गई ।
चारों तरफ घुप्प अंधेरा छा गया !
हर तरफ कालिमा की चादर फैली हुई थी !
उस स्याह अंधेरे में हम बैठे हुए थे !!
माधुरी के पास टॉर्च भी थी और माचिस भी लेकिन उसने दोनों को जलाने की कोशिश नहीं की ।
यानी अब जो भी होने वाला था वह अंधेरे में होता ।

थोड़ी देर में कुए के अंदर से एक जुगनू जैसी चमकदार रोशनी बाहर आती हुई दिखाई दी !
वह एक आत्मा थी ..
जो धीरे-धीरे ! आगे बढ़ते हुए ! उस तांबे के पात्र में रखी हुई गोल मधुमक्खी के छत्ते जैसी चीज में समा गई ।
एक-एक करके उस प्रकार के कई प्रकाश बिंदु कुएं में से निकल कर उस पात्र के अंदर जमा होते चले गए ।

इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 2 घंटे का समय लगा होगा । उसके बाद माधुरी ने उस पात्र को ढक्कन लगाकर बंद कर दिया । अब वे सारी आत्माएं उस डब्बे के अंदर मौजूद थी ।

उसके बाद माधुरी ने अपने बैग से एक बोतल निकाली । उस बोतल में पानी भरा हुआ था ।
उसने बताया कि यह पानी कैलाश पर्वत मे स्थित फाजिल्का झील का है । कैलाश पर्वत देवाधिदेव महादेव का पर्वत है वहां सब कुछ अद्वितीय है अद्भुत है और दिव्य है । उस झील के पानी में भगवान शिव की कृपा से कुछ ऐसी शक्तियां थी जिससे वह सभी अशुद्ध शक्तियों को शांत कर सकती थी ।
उस पानी की 3-4 बूंदें उसने उस कुएं के अंदर डाल दी । जैसे ही वे बूंदे कुए की सतह से टकराई एक विस्फोट जैसा हुआ और काले रंग का धुएं का एक गुबार जैसा उस कुएं के अंदर से निकला और अनंत आकाश में विलीन हो गया ।

इतना होने के बाद मुझे लगा कि यहां की कार्यवाही समाप्त हो चुकी है, लेकिन माधुरी अपने स्थान पर शांत भाव से बैठी हुई थी !

शून्य की ओर देखते हुए !

ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी चीज की प्रतीक्षा कर रही हो ।

अचानक वातावरण का भारीपन बढ़ने लगा ।

अजीब सी दुर्गंध चारों तरफ फैल गई !

ठीक वैसी ही दुर्गंध जैसे शमशान के अंदर चिताओं के जलने के समय आती है !!

चर्बी और मांस के जलने की दुर्गंध !!!

यह किसी और अशरीरी शक्ति के आगमन का संकेत था और वह भी किसी ऐसी शक्ति का जो बहुत प्रबल और शक्तिशाली रही होगी !

वातावरण सुन्न हो चुका था ।

हवा भी थम चुकी थी ।

यह स्थिति कुछ कुछ ऐसी थी जैसी तब होती है जब जंगल में जानवरों के झुंड को आसपास किसी

आक्रामक जानवर की उपस्थिति का आभास होता है और वह सहम कर ठिठक जाते हैं ।

कुछ देर में हल्की हल्की आवाज आने लगी ।

क्षमा !

क्षमा !!

मुक्त करो !!!

मुक्त करो !!!!

धीरे-धीरे इन आवाजों की तीव्रता बढ़ती चली गई ।

यह बड़ी अजीब सी बात थी क्योंकि जो आवाज आ रही थी वह किसी वयस्क आदमी की आवाज लग रही थी । अभी तक जो भी कार्यवाही चल रही थी वह बच्चों से संबंधित थी !

छोटे-छोटे बच्चों के चीखने चिल्लाने की आवाज आ रही थी !

उसके बाद वे नन्ही रोशनीयां आकर उस बर्तन में जमा हो गई थी । उस पवित्र जल को डालने के बाद सब कुछ शांत हो जाना चाहिए था लेकिन यह फिर कोई नई प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी ।

थोड़ा ध्यान देने पर ... जो आवाज आ रही थी ... वह कुछ जानी पहचानी सी लग रही थी । मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैंने यह आवाज कहीं पर सुनी है । मैंने दिमाग पर थोड़ा जोर डाला क्योंकि यह आवाज बहुत आस पास में ही सुनी हुई लग रही थी ।

मुझे आमतौर पर आवाजें याद रहती हैं और उनके आधार पर मैं लोगों को बड़ी आसानी से पहचान लेता हूं । थोड़ा दिमाग पर जोर लगाते ही याद आया कि यह आवाज तो मंदिर के बाहर जो अघोरी बाबा मिला था उसकी आवाज से मेल खाती है !

लेकिन !

अघोरी बाबा का इस कुएं के पास में क्या काम ?

तभी फिर से आवाज आई !

क्षमा !

मुक्त करो !!

मुक्त करो !!!

अब मुझे कंफर्म हो गया कि यह आवाज उसी अघोरी बाबा की ही है ।

मैंने माधुरी की तरफ देखा उसके चेहरे पर वही रहस्यमई मुस्कान बिखरी हुई थी जिसका रहस्य जानना लगभग असंभव होता है ।

माधुरी अत्यंत सिद्ध और उच्च कोटि की साधिका थी । दूसरों के विचारों को पढ़ लेना और भांप लेना दोनों उसे बखूबी आता था ।
मैंने उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखा । उसने आंखों ही आंखों में इशारा किया जैसे वह मेरे विचारों का समर्थन कर रही हो ।

उसके बाद उसने अपने गले में पड़ी हुई माला हाथ में ले ली ।
इस माला के दाने रुद्राक्ष के दानों की तरह गोल गोल थे, लेकिन उसमें रुद्राक्ष में बने हुए लाइन की तरह लाइन नहीं थी बल्कि कुछ अलग तरह की लाइन बनी हुई थी ।

यह फल तिब्बत में पाए जाते हैं !
नेपाल में भी पाए जाते हैं !!

इन्हें भी रुद्राक्ष के समान ही महत्वपूर्ण माना जाता है और इनका प्रयोग माला और मंत्र जाप में किया जाता है । यह गोल गोल होते हैं और इसमें तीन या चार लाइने बनी हुई रहती है , बाकी पूरी सतह प्लेन होती है । मतलब चिकनी होती है । रुद्राक्ष की तरह खुरदुरी नहीं होती ।

थोड़ी देर में एक हल्की धुंधले रंग की आकृति स्पष्ट होने लगी और वह आकृति उसी अघोरी बाबा की थी !
मैं उन्हें लगभग स्पष्ट देख पा रहा था ।
थोड़ी देर में अघोरी बाबा हमारे सामने अपने संपूर्ण आकार में धुंध के शक्ल में मौजूद थे ।

माधुरी ने तिब्बती भाषा में फिर से कुछ विचित्र किस्म के मंत्रों का उच्चारण किया ।
आपने कभी तिब्बती गोम्पा से संबंधित कोई वीडियो देखा हो तो आपको पता होगा कि तिब्बती भाषा थोड़ी अजीब सी लगती है लेकिन अगर आप आंखें बंद करके उस भाषा के संगीत को सुनने की कोशिश करें तो बड़ी आसानी से आपका ध्यान केंद्रित होने लगता है ।

तिब्बत के मंदिर को गोम्पा कहते हैं । कई गोम्पा ऐसे हैं जो सैकड़ों वर्ष पुराने हैं । उन गोमपाओं में साधना से संबंधित कई रहस्यमई चीजें रखी हुई है ।

तिब्बती साधकों ने तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में बहुत ज्यादा कार्य किया है । उनके द्वारा किए गए कार्यों के फलस्वरूप कई ऐसी साधनाएं आज भी उन रहस्यमय गोमपाओं में सुरक्षित है , जिसके विषय में बाकी विश्व को कल्पना भी नहीं हो सकती ।

जिस प्रकार से कामरूप कामाख्या और असम के मंत्रों का एक रहस्यमय और विचित्र संसार है जो बेहद शक्तिशाली है, ठीक उसी तरह तिब्बती मंत्रों का भी एक रहस्यमय और विशाल संसार मौजूद है । उन्हीं में से कुछ मोती माधुरी के पास भी मौजूद थे । जिनका प्रयोग वह कर रही थी ।

हम दोनों मोमबत्ती के पास वापस आकर बैठ चुके थे । माधुरी ने मोमबत्ती जला दी थी , हल्का हल्का प्रकाश फैला हुआ था ।

रोशनी के छोटे-छोटे बिन्दु पात्र में रखी वस्तु में समा चुके थे । जिसे माधुरी ने बंद कर दिया था और उसे वापस अपने बैग में डाल लिया था ।

हम दोनों चबूतरे पर बैठे हुए थे । हमारे सामने अघोरी बाबा का बिम्ब धुंधली आकृति के रूप में स्पष्ट हो गया तो मैं साफ-साफ पहचान गया कि यह वही बाबा है जो मंदिर के पास मिला था ।

इस प्रकार से उसके दिखने का मतलब था कि वह अपना शरीर त्याग चुका था !

लेकिन बाबा काशी विश्वनाथ के मंदिर के सामने जो आकृति मुझे दिखी थी उसे देखकर मुझे आभास नहीं हुआ था कि यह कोई आत्मा है !

कोई अशरीरी है !

संभवत: बाबा के दर्शनों के लिए जाने की आतुरता रही होगी या फिर बाबा विश्वनाथ के दरबार में अघोरियों की बहुलता के कारण मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया होगा ।

जो भी बात रही हो मुझे वह एक जीवित अघोरी ही लगा था , लेकिन यहां पर उसका धुंधला बिम्ब मुझे साफ साफ दिखाई दे रहा था । जो यह बताने के लिए पर्याप्त था कि वह व्यक्ति अब इस पृथ्वी पर जीवित नहीं है ।

किसी न किसी कारण से वह किसी प्रेत योनि में भटका हुआ है इसीलिए मुक्ति की प्रार्थना कर रहा है । अघोरी बाबा का बिम्ब पूरी तरह से स्पष्ट हो चुका था और उन्होंने फिर से वही आवाज लगाई क्षमा !

मुझे मुक्त करो !

क्षमा !!

मुझे मुक्त करो !!

मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं इसलिए मैंने उनसे पूछा - आप कौन हो ?

उन्होंने जो जवाब दिया उसे सुनकर मैं दंग रह गया !

उन्होंने कहा - मैं भुतहा बाबा हूं ।

मैं सोच में पड़ गया यह तो वही बाबा है जिसके विषय में कई कहानियां प्रचलित हैं कि उन्होंने भूतों को सिद्ध करके अपना नौकर बना कर रखा हुआ था और यह भूत बंगला उन्हीं का था ।

मेरे मन में आ रहे विचारों को शायद उन्होंने पढ़ लिया था , उन्होंने कहा - हां ! तुमने सही समझा । मैं ही वह भूतहा बाबा हूं जिसके बारे में इस भूत बंगले के साथ कई कहानियां जुड़ी हुई है । मैं ही वह भुतहा बाबा हूं

जिसने भूतों को सिद्ध करके अपना नौकर बना कर रखा हुआ था ।

अब एक और दिलचस्प बात सामने आने वाली थी मैंने पूछा - आप तो सिद्ध योगी है । आप की यह दशा कैसे हो गई ?
उन्होंने कहा - बच्चा ! हर विद्या का अपना महत्व होता है, लेकिन कुछ विद्या ऐसी होती है जिसमें गलती करने की गुंजाइश बहुत ज्यादा होती है । गलती करने पर सजा तो मिलती ही है ।

मैंने कहा - बाबा थोड़ा सा स्पष्ट करिए ताकि मैं भी समझ सकूं ।
उन्होंने कहा - लंबी कहानी है, और समय कम है, इसलिए संक्षेप में सुनाता हूं ।
मैंने कहा - ठीक है बाबा ।
भुतहा बाबा बोले - मैं बनारस के पास एक गांव में रहने वाला साधारण युवक था । मेरे मन में तंत्र साधना के प्रति बहुत ज्यादा आग्रह भी था, उत्साह भी था । इसलिए मैं अपने गांव के श्मशान में भी भटकता रहता था ।

वहां पर मुझे अशरीरी आत्माएं दिखाई भी देती थी ।
कई बार मैं अपने दोस्तों को भी ले जाता लेकिन उनको वह नहीं दिखाई देती !
पर मुझे साफ-साफ दिखाई देती थी ।
तुम यूं कह लो कि मुझे जन्म से ही इस प्रकार की विशेषता प्राप्त थी कि मैं अशरीरी आत्माओं को देख सकता था । एक दिन मैं घर छोड़कर बनारस आ गया । यहां मैं इधर-उधर भटकता रहा । दो-चार साधक और गुरु सरीखे लोग मिले लेकिन उनके साथ कुछ समय गुजारने के बाद मुझे यह समझ में आ गया कि वे बोगस गुरु हैं ।

मेरे आराध्य भगवान शिव के श्री चरणों का ध्यान करते हुए मैं यह सोच रहा था कि बाबा आप की नगरी में भी अगर मुझे मार्गदर्शन नहीं मिला तो कहां मिलेगा । यही सब सोचता हुआ मैं मणिकर्णिका घाट पर बैठा हुआ था । मणिकर्णिका घाट में शवों का दाह संस्कार निरंतर चलता रहता है ।
वहां पर भटकते रहते हैं कई अघोरी ।
उन्हीं में से एक अघोरी पर मेरी नजर अटक गई !

उसकी आयु यही कोई 70-75 साल की रही होगी लेकिन उसके चेहरे पर एक अजीब सा तेज मुझे दिखाई दे रहा था । मैं जिस बात से ज्यादा प्रभावित हुआ वह थी उसके साथ चलती हुई शक्तियां । उसके साथ साथ दो अशरीरी शक्तियां चल रही थी । मुझे अशरीरी आत्माएं दिखाई देती थी इसलिए मैं उनको स्पष्ट देख सकता था ।

उन्हें उसके साथ चलता हुआ देखकर मुझे लगा कि यह व्यक्ति अवश्य सिद्ध होगा । मैंने जाकर उसके पांव पकड़ लिए । जैसे ही मैंने उसका पांव पकड़ा उसने मुझे जोरों की एक लात मारी ! 70-75 साल के आदमी के हिसाब से वह बड़े जोरों की लात थी जिसके लिए मैं तैयार नहीं था । मैं सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नदी में जा गिरा ।

अघोरी ने मेरी तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा और तेजी से एक और चला गया ।

यह साधना के जगत में मेरा पहला अनुभव था कि गुरु किस प्रकार से अपने शिष्यों की परीक्षा लेते हैं ।

मैं जब तक नदी से निकलता तब तक वह वहां से गायब हो चुके थे । उस दिन के बाद मैं रोज इसी संभावना के

साथ घाट पर आकर बैठता कि उनके फिर से दर्शन होंगे, लेकिन एक महीने तक उनके दर्शन नहीं हुए ।

मेरी उम्मीद टूटती जा रही थी लेकिन मेरा अंतर्मन यह कहता था कि वह अवश्य वहां पर दिखाई देंगे ।

लगभग डेढ़ महीने का समय गुजर गया और मैं भी हतोत्साहित होने लगा ।

लेकिन नित्य मणिकर्णिका घाट पर अपनी हाजिरी देने जाता था । वहां के डोम भी अब मुझे पहचानने लगे थे क्योंकि मैं रोज वहां जाता और घंटों बैठा रहता था । एक हमउम्र डोम से मेरी पहचान हो गई थी । बातों बातों में मैंने उसे बताया कि मैं वहां पर रोज क्यों आता हूं । जब मैंने उस अघोरी बाबा का हुलिया बताया तो वह तुरंत समझ गया ।

उसने कहा - वह तो कपाली बाबा है । वह अमावस्या की अर्धरात्रि को घाट पर अवश्य आता है ।

मुझे लगा कि यह तो गड़बड़ हो गई । मैं यहां रोज शाम को चक्कर लगा रहा था और बाबा आधी रात में आकर चला जा रहा है ।

सात दिन बाद अमावस्या थी !

मैंने डोम का हाथ बटाना चालू कर दिया और उसके बदले में मुझे भोजन आदि मिल जाता था । मैं वही रात को सोने लगा ।

सातवीं रात जो अमावस्या की रात थी ।

उस दिन मैं पूरी सजगता के साथ बैठा हुआ था कि आज बाबा दिखे तो पकड़ लेना है पैर ! और तब तक नहीं छोड़ना है जब तक वह स्वीकार ना कर ले ।

ऐसा मैं दृढ़ निश्चय बना कर बैठा हुआ था लेकिन गुरु इतनी आसानी से नहीं मिलता है , यह मुझे पता चल गया ।

अर्धरात्रि से थोड़ी देर पहले मुझे बड़े जोरों की नींद आ गई और मैं वही खाट पर सो गया ।

मेरा मित्र डोम भी वहां मौजूद था और अपने काम में लगा हुआ था , लगभग आधे घंटे की नींद हुई होगी जब मेरे पांव के पास एक पत्थर आकर लगा और मुझे अपने मित्र डोम की आवाज सुनाई दी - शंकर ! जल्दी उठ !!

ए शंकर ! जल्दी उठ !!

मैं हड़बड़ाकर उठा !

डोम अपने कार्य में लगा हुआ था और लकड़ियों को सजा रहा था और मेरी तरफ देख रहा था । उसी के बीच

बाबा अपनी उम्र के हिसाब से बहुत ही तेज रफ्तार में आगे की ओर बढ़ रहे थे ।
ऐसा लग रहा था जैसे वह चल नहीं रहे हो दौड़ रहे हों !!
वो दो दो सीढ़ियाँ उछलकर पार कर जा रहे थे और मैं उनको पकड़ने के लिए लगभग दौड़ता हुआ सीढ़ियां चढ़ रहा था ।
आखिरी सीढी के पास जब मैं पहुंचा तो मैंने देखा कि बाबा बाई ओर की सड़क पर चल पड़े थे ।
मैं फिर उनके पीछे पीछे भागा ।
आगे जाकर एक बड़ा सा नीम का पेड़ था । नीम के पेड़ के चबूतरे के पास जाकर बाबा बैठ गए ।
मैं समझ गया कि मेरा काम बन गया । मैंने तुरंत दौड़कर उनके पांव पकड़ लिए ।

जैसे ही मैंने उनके पांव पकड़े , उन्होंने अपने चिमटे का एक जोरदार प्रहार मेरी पीठ पर किया । वह इतनी जोर का प्रहार था कि मेरी पीठ की चमड़ी उधड गई और खून बहने लगा ।

बाबा अपनी उम्र के हिसाब से बहुत ही तेज रफ्तार में आगे की ओर बढ़ रहे थे ।
ऐसा लग रहा था जैसे वह चल नहीं रहे हो दौड़ रहे हों !!
वो दो दो सीढ़ियाँ उछलकर पार कर जा रहे थे और मैं उनको पकड़ने के लिए लगभग दौड़ता हुआ सीढ़ियां चढ़ रहा था ।
आखिरी सीढी के पास जब मैं पहुंचा तो मैंने देखा कि बाबा बाई ओर की सड़क पर चल पड़े थे ।
मैं फिर उनके पीछे पीछे भागा ।
आगे जाकर एक बड़ा सा नीम का पेड़ था । नीम के पेड़ के चबूतरे के पास जाकर बाबा बैठ गए ।
मैं समझ गया कि मेरा काम बन गया । मैंने तुरंत दौड़कर उनके पांव पकड़ लिए ।

जैसे ही मैंने उनके पांव पकड़े , उन्होंने अपने चिमटे का एक जोरदार प्रहार मेरी पीठ पर किया । वह इतनी जोर का प्रहार था कि मेरी पीठ की चमड़ी उधड गई और खून बहने लगा ।

मैं यह सोच कर निकला था कि आज बाबा को छोड़ना नहीं है ...
मैंने उनके पांव नहीं छोड़े...

बाबा ने मेरे ऊपर चिमटों की बरसात कर दी !
कम से कम सौ चिमटे उन्होंने मारे होंगे लेकिन मैंने पांव नहीं छोड़ा ।
चिमटों की बारिश बंद हो गई ।

मैंने सोचा कि मेरा परीक्षण पूरा हो गया होगा और मैंने बड़ी मुश्किल से सर उठाकर धीरे से जब उनकी और देखा तो भय के मारे मेरी आंखें फट गई ...
क्योंकि उनके चेहरे के स्थान पर एक खोपड़ी दिखाई दे रही थी ...
मार तो मैं सहन कर गया लेकिन इंसान के गर्दन के ऊपर लगी हुई खोपड़ी देखने का मेरा यह पहला अनुभव था ... .
मेरा दिमाग सुन्न हो गया !
मैं भय से थरथर कांपने लगा ... .
मेरी हालत देख कर उनके मुंह से अट्टहास निकलने लगा ... .

उन्होंने कहा - देखने में फट गई ... .

तू साधना क्या करेगा ?

उसके बाद वे उठकर तेजी से आगे निकल गए ।

यह सब कुछ इतनी जल्दी से हुआ कि मेरी समझ में कुछ नहीं आया ।

जब तक मैं सामान्य होता तब तक वह गायब हो चुके थे ।

अब मेरे पास कोई रास्ता नहीं था ।

मैंने काफी दूर तक इधर उधर देख लिया लेकिन उनका दूर-दूर तक कोई अता पता नहीं था ।

मेरी पीठ से खून रिस रहा था ।

मैं वापस मसान घाट पर पहुंचा । वहां मेरे मित्र डोम ने मेरी हालत देखकर मुझसे पूछा कि क्या हुआ ।

मैंने सारी कहानी उसे अक्षरशः सुनाई ।

पूरी बात सुनकर उसने कहा -शंकर ! तू चिंता मत कर । जब उन्होंने तेरा परीक्षण ले लिया है तो तुझ पर उनकी कृपा अवश्य होगी । तू लगा रह ।

उसकी बात सुनकर मुझे जोश भी आया और संभावना भी पैदा हुई । मैं वहीं मशान मे ही रहने लगा ।

एक लंबे इंतजार के बाद अमावस्या का दिन आया ।
रात आई और फिर प्रकट हुए कपाली बाबा । चिता के सम्मुख उनका जो भी साधनात्मक प्रक्रम था वह चला । चिता के 3 चक्कर लगाने के बाद वह सीढ़ियों पर ऊपर की ओर वैसे ही तेजी से चलने लगे ।
पिछली बार की मार को याद करके मन थोड़ा सा झिझक रहा था । चोट अभी पूरी तरह से ठीक नहीं हुई थी ! रह रह कर उसका दर्द उभर आता था । महीने भर से में पीठ के बल नहीं सो पा रहा था और औंधा होकर ही सोता था ...
सारी पीठ पर चिमटे की मार के लंबे लंबे निशान पड़े हुए थे ।
साधना और सिद्धि का मोह और आकर्षण मेरे अंदर इतना प्रबल था कि.....
मैं फिर से उनकी तरफ दौड़ पड़ा ...
सीढ़ियां चढ़कर जब तक मैं ऊपर पहुंचा तब तक वह काफी दूर निकल चुके थे और नजर नहीं आ रहे थे ।
काफी देर तक में उनकी तलाश में इधर उधर भटकता रहा लेकिन वे नहीं दिखे ।
वह अमावस्या खाली हाथ निकल गई ...

अब फिर से अगली अमावस्या तक इंतजार करना था ।
अगली अमावस्या में फिर से वही प्रक्रम हुआ , लेकिन इस बार मैं थोड़ा सतर्क था और उनके ऊपर चढ़ने से पहले सीढ़ियों पर जाकर खड़ा हो चुका था ।
वो उसी प्रकार से आते हुए तेजी से मेरे बगल से निकले और मैं भी उनके पीछे पीछे दौड़ता हुआ जाने लगा । मेरे दौड़ने के बावजूद वह मेरी चाल से ज्यादा तेज चल रहे थे यू कहना ठीक होगा कि लगभग उड़ रहे थे ।
इसके बाद काफी परीक्षणों के बाद कपाली बाबा ने मुझे शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया ।
वह भूत सिद्ध करने में सिद्धहस्त थे ।
उन्होंने मुझे भूत सिद्ध करने की विधि सिखा दी । उनके पास दो सिद्ध भूत थे !
एक था मंगल ! और दूसरा था बादल !!
मंगल सत्रह -अट्ठारह वर्ष के एक युवक का भूत था और बादल लगभग 50 साल की आयु के एक पहलवान का ।
यह दोनों भूत उन्होंने सिद्ध करके रखे हुए थे । लगभग 75 वर्ष की उन की अवस्था हो चुकी थी और उनको देह त्याग का समय करीब दिख रहा था । इसलिए वह

भी एक योग्य शिष्य की तलाश में थे । उसके बावजूद उन्होंने मेरा कड़ा परीक्षण लिया और अंत में मुझे भूत सिद्ध की विधि सिखाई और मंगल को मुझे दे दिया । मंगल मेरे साथ हमेशा रहता उसके बाद मैंने कई भूत सिद्ध किए.....

मैंने बाबा से पूछा - आप को भूत सिद्धि से क्या लाभ हुआ ?

बाबा बोले - मैं कोई बहुत बड़ा आध्यात्मिक चिंतन वाला व्यक्ति नहीं था । मैं तंत्र के चमत्कारों से प्रभावित था और भूत प्रेत मुझे दिखते थे ,इसलिए उनकी सिद्धि करने की विधि प्राप्त होना मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी ।

भूत सिद्ध हो जाने के बाद वे समस्त प्रकार के कार्य कर लेते हैं । मैंने एक महिला का भूत सिद्ध करके रखा हुआ था । जो मेरे लिए भोजन पकाने का कार्य करती थी और साथ ही साफ-सफाई आदि का कार्य भी उसके जिम्मे था !

मुझे जब भूत सिद्धि होने लगी तो मुझे कपाली बाबा ने इस भूत बंगले के विषय में बताया, क्योंकि वह भी यही

रहते थे । उन्होंने इस भूत बंगले को मुझे सौंप दिया और अपने रास्ते चले गए ।

उस दिन के बाद वह मुझे कभी दिखाई नहीं दिए .....

मैं बहुत खुश था.....

यहां पर मेरी दुनिया बसी हुई थी.....

मुझे कोई काम नहीं करना पड़ता था । सारा काम मेरे सेवक भूत कर देते थे । खाने पीने की चीजों की व्यवस्था भी वह कर देते थे । बाद में जब मैंने वनराज का काम किया तो उसके बाद तो मुझे किसी चीज की दिक्कत नहीं थी । सब कुछ घर पहुंच जाता था । पकाने का काम मेरे भूत कर देते थे और मैं बड़े आराम से पड़ा रहता था ।

भूत भी खुश थे और मैं भी .....

बाबा ने कुछ ऐसी साधना विधियां बताई थी जिनके द्वारा सिद्ध किए गए भूतों का प्रभाव बढ़ता रहता था । मैं किसी के यहां नहीं जाता था और मेरा रहने का तरीका और यहां के किस्से सुनकर कोई भूत बंगले की तरफ नहीं आता था ।

बचपन से ही मुझे एकांत पसंद था !

यहां मुझे भरपूर एकांत मिल रहा था और मैं बड़े मजे से अपनी जिंदगी काट रहा था .....

अघोरी बाबा का किस्सा बड़ा मजेदार लग रहा था ।
भूतों के विषय में मैंने सुना अवश्य था देखा भी था.....
लेकिन इस प्रकार से नौकरों जैसे काम कराने की बात मैंने पहली बार सुनी थी .....
उसके अलावा उन्हें शक्तिशाली बनाने की साधना भी होती है यह एक नया विषय था ।

बाबा कहानी बताते बताते थोड़ी देर रुके उसके बाद फिर आगे की बात चालू की - मुझसे एक गलती हो गई और उस गलती की कीमत मुझे चुकानी पड़ी । चांद बेगम और माला की आत्मा को कीलित करने का काम मैंने वनराज के लिए किया था । वहां से मेरी दिक्कतें चालू होने लगी । मैंने एक दुष्ट व्यक्ति का साथ दिया था ।
मैं उसका जाने अनजाने में सहयोगी बन गया था । उन सभी पीड़ित महिलाओं के दुख के कारणों में से एक मैं भी हो चुका था ।

प्रकृति में किसी भी गलती की खास तौर से इस प्रकार की अमानवीय गलतियों में माफी की गुंजाइश नहीं होती है .....

समय आगे बढ़ता गया और वनराज का चांदनी महल में आना धीरे-धीरे बंद हो चुका था .....

मेरी भी उम्र ढलने लगी थी.....

जिस श्रेणी की आप साधना करते हैं.....

जिस योनि की आप साधना करते हैं अंत में आपको वह योनि अपने अंदर समाहित करने की कोशिश अवश्य करती है.....

यह सभी साधनाओं पर लागू है ।

उदाहरण के लिए अगर आप यक्षिणी साधना कर रहे हैं तो इस बात की संभावना रहती है कि अंत में आपको यक्ष लोक की प्राप्ति हो जाए .....

यदि आप देवताओं की साधना कर रहे हैं तो इस बात की संभावना रहती है कि आपको उच्च कोटि की साधना करने पर देवलोक की प्राप्ति हो जाए.....

ठीक उसी तरह भूत प्रेत साधना करने से इस बात की संभावना रहती है कि आपको भूत प्रेत के लोक की प्राप्ति हो जाए.....
उनकी योनि प्राप्त हो जाए.....

पिशाच साधना करने वाले साधक जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं.....
लेकिन जब उनका शरीर कमजोर होने लगता है तो उन्हीं के द्वारा सिद्ध किए हुए भूत प्रेत उनसे ज्यादा शक्तिशाली होने की वजह से उन पर काबू करना प्रारंभ कर देते हैं ! और उन्हें अपनी योनि में खींच लेते हैं .....
मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ.....
मेरे द्वारा सिद्ध किए गए भूतों का प्रभाव कहिए या उनके द्वारा की गई क्रियाएं मैं धीरे-धीरे कमजोर होता चला गया और एक दिन मेरी मौत हो गई । उसके बाद मेरी आत्मा को प्रेत योनि प्राप्त हो गई तब से मैं यही भटक रहा हूं.....

मेरी मुक्ति करवा दो।

मैंने माधुरी की तरफ देखा.....

उसने सहमति में सिर हिलाया !
तो मैंने बाबा से पूछा-आपकी मुक्ति कैसे संभव है ।

बाबा ने एक विशेष मंत्र के विषय में बताया जिसके बारे में मुझे ज्ञात नहीं था, लेकिन माधुरी उसके बारे में जानती थी । उस मंत्र का चौबीस लाख जाप करवाना था और ब्रह्म भोज के रूप में ग्यारह हजार लोगों को भोजन कराना था ।

यह सब सुनकर मैं दंग रह गया .....
मैंने माधुरी की तरफ देखा ...
उसके चेहरे पर कुटिल मुस्कान बिखरी हुई थी ।
सहमति दे कर मैं फंस गया था !
ऐसा मुझे लगा !
क्योंकि .....
जो चीजें वह बता रहा था उसे करने में कई लाख रुपए का खर्चा आना था ।

मेरे पास मुश्किल से आठ या दस हजार नगद था ।
माधुरी के पास भी कुछ इसके आसपास की रकम ही रही होगी ।

जो खर्च इन कार्यक्रमों में होने वाली थी वह आठ दस लाख रुपए से कम नहीं पड़ने वाली थी ।
अनुष्ठान कराने के लिए भी ब्राह्मणों और साधकों को दक्षिणा तो देना ही पड़ेगा । इसके अलावा जो पूजन सामग्री का खर्च है वह भी लगेगा ।
ग्यारह हजार लोगों को भोजन कराना था और वह भी सम्पूर्ण यानी खाने की व्यवस्था के साथ-साथ मिठाई आदि की व्यवस्था भी करनी थी तभी उसे पूर्ण भोजन कहा जाता । इसके साथ-साथ अघोरी बाबा ने दक्षिणा भी देने के लिए कहा था । यानी कि मान लीजिए कि ₹10 भी एक व्यक्ति की दक्षिणा मान लें तो एक लाख से ज्यादा तो दक्षिणा के ही हो जाते थे ।
मैंने मन ही मन सारा गणित जोड़ लिया था और मैं समझ गया था कि यह मेरे बस की बात नहीं है ।
अगर कोई काम अपने बस का ना हो तो उसमें हाथ नहीं डालना ही बेहतर होता है इसलिए मैंने बाबा को सारी बात स्पष्ट कर दी.....

मैंने बाबा से कहा - बाबा इतनी रकम की व्यवस्था तो मेरे पास नहीं है ।

बाबा मुस्कुराया - धन की चिंता मत करो । मेरे पास बहुत धन है .....
वह सब मैं तुमको दे दूंगा .....
तुमको बस यह वादा करना होगा कि तुम मेरी मुक्ति के लिए यह सारे अनुष्ठान संपन्न करवा दोगे ।

मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन जितने आत्मविश्वास के साथ वह कह रहे थे उससे लग रहा था कि उनके पास कुछ न कुछ अवश्य होगा । पैसे की व्यवस्था अगर हो जाती तो मुझे वह सब कुछ करवाने में कोई दिक्कत नहीं थी क्योंकि वाराणसी में धार्मिक स्थल होने के कारण इस प्रकार के अनुष्ठान आराम से करवाए जा सकते हैं ।

मेरे आगे पीछे कोई नहीं था गुरु के सानिध्य के अलावा हृदय में कोई इच्छा भी बाकी नहीं बची थी । इसलिए अगर किसी का भला हो सकता है तो वह कर देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं थी मैंने सहमति में सर हिलाया ।
अघोरी बाबा की वह धुंधली आकृति खड़ी हो गई और उसने अपने पीछे आने का इशारा किया .....

मैं और माधुरी उसके पीछे पीछे चल पड़े !
वह उसी भुतहा खंडहर की ओर जा रहा था ।
उस खंडहर के अंदर एक तहखाना था । बाबा हमें उस तहखाने की ओर ले गया । तहखाने के अंदर पहुंचने के बाद उसने दीवार में बने हुए गड्ढे की तरफ इशारा किया और उसमें लगे हुए डंडे को खींचने के लिए कहा ।
मैंने डरते डरते उस गड्ढे में हाथ डाला तो वहां पर एक लीवर जैसा डंडा मौजूद था । मैंने उसे पकड़कर खींचा जैसे ही मैंने उसे खींचा बाईं तरफ का दीवाल का एक हिस्सा सरकने लगा.....
वहाँ लगभग 1 फुट का गैप बन गया ।
वहां पर एक अलमारी जैसा आला बना हुआ था.....
उसमें रखे हुए थे सोने और चांदी के सिक्के !
कम से कम चार पांच सौ सिक्के जरूर रहेंगे ।

उस समय सोने की कीमत लगभग छह हजार के आसपास थी । उस हिसाब से लगभग एक किलो की कीमत छह लाख के आसपास होती । सिक्के काफी मोटे मोटे थे कम से कम 10-10 तोले के रहे होंगे.....

मैंने उसमें से करीब 20 -25 सोने के सिक्के निकाल लिए ।

अघोरी बाबा ने कहा - पूरे रख लो ।

मैंने कहा - बाबा इतने में काम हो जाएगा !

लेकिन अघोरी बाबा जिद पर अड़ गया और कहने लगा - मेरे जाने के बाद यह किसी के काम नहीं आएगा । उससे अच्छा है कि तुम ले जाओ और किसी अच्छे काम में लगा दो ।

यह एक अजीब सी स्थिति थी.....

पास में ज्यादा पैसा होना भी एक साधक के लिए नुकसानदेह होता है.....

क्योंकि धन की माया से बच पाना बहुत आसान नहीं होता.....

यह सोचकर मैं उस पैसे को लेने से झिझक रहा था ।

अघोरी बाबा बार-बार आग्रह करता रहा और मैं बार-बार इंकार करता रहा लेकिन अंततः मुझे उनकी बात स्वीकार करनी पड़ी ।

हम दोनों माधुरी की बुलेट में आए थे ।

बुलेट एक बेहद ताकतवर मोटरसाइकिल है । इसमें साढ़े तीन सौ सीसी का इंजन लगा होता है । आमतौर पर जो मोटरसाइकिल चलती है वह सौ सीसी की होती है । यानी सामान्य मोटरसाइकिल से साढ़े तीन गुणा ताकतवर इंजन बुलेट में लगा होता है ।

बुलेट लगभग 100 साल पुरानी बाइक है । यह ब्रिटेन में बनती थी । भारत की फौज और पुलिस में इसकी डिमांड को देखते हुए कंपनी ने चेन्नई में इसकी इकाई चालू की थी । ब्रिटेन की कंपनी बाद में बंद हो गई और चेन्नई की भारतीय कंपनी में उत्पादन जारी रहा । यहाँ से आज भी लगभग साढे चार लाख बुलेट का निर्यात अलग-अलग देशों में होता है ।

सेना का काम ऐसा होता है जिसमें उनके वाहनों को अप टू डेट होना होता है । सेना के कार्य में किसी भी प्रकार की रुकावट स्वीकार्य नहीं होती । इसलिए वह नई गाड़ियां खरीदते हैं और कुछ साल इस्तेमाल होने के बाद उसे बेचकर दूसरी गाड़ी खरीद लेते हैं । बुलेट को भी सेना कुछ साल इस्तेमाल करने के बाद बेच देती थी । उस बुलेट को मैकेनिक लोग रिपेयर करके एक्स

आर्मी के नाम से बेचा करते थे । माधुरी की बुलेट भी उसी प्रकार की एक बुलेट थी ।

यह गाड़ी काफी वजनी होती है लेकिन इसे चलाना उतना ही आसान और आरामदायक होता है । उबड़ खाबड़ रास्तों के लिए यह बाइक सबसे शानदार सवारी मानी जाती है । यह इतनी ताकतवर होती है कि इसमें 20-25 सेना के जवान सवार होकर कई प्रकार के आकार बनाकर स्टंट का प्रदर्शन करते हैं । जिसे आप लोगों ने भी गणतंत्र दिवस या सेना की परेड के दौरान टीवी पर देखा होगा ...

इसमें बड़ी सी डिक्की लगी रहती है जिसमें बहुत सारा सामान रखा जा सकता है । पहले यह डिक्की लोहे की हुआ करती थी । वैसे ही डिक्की माधुरी की बुलेट मे दोनों तरफ लगी हुई थी । आधे आधे सिक्के दोनों डिक्कीओं में डाल दिए और फिर हम लोग वापस रवाना हो गए । उस समय तक रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे ।

माधुरी की बुलेट वापस लौट चुकी थी और मैं उसके पीछे बैठा हुआ था और सोच रहा था कि समय भी क्या-क्या खेल दिखाता है...

मेरे जैसा आदमी ...

जिसके पास कुछ नहीं है...

वह लगभग 20 किलो सोना और 25 किलो चांदी लेकर अंधेरी रात में घूम रहा है ।

वहां से निकलकर हम लोग माधुरी के ठिकाने पर पहुंचे ।

माधुरी ...

जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था वह घुमक्कड़ किस्म की प्राणी है , लगभग आधे से ज्यादा भारत वह घूम चुकी है और साधना के क्षेत्र में उसकी बहुत जबरदस्त पकड़ है । कई स्थानों पर उसका आना जाना लगा रहता है इसलिए उसके संपर्क भी लगभग हर जगह में है ।

बनारस में भी पिशाच मोचन के एक बुजुर्ग पंडित जी के यहां वह रुकी हुई थी जो स्वयं भी तंत्र साधक थे । वहां

पहुंचने के बाद माधुरी ने गाड़ी स्टैंड की और अंदर की ओर जाने लगी ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था कि जब धन आता है तो चिंता भी आती है !
तो मेरे मन में चिंता होने लगी कि गाड़ी की डिक्की में रखे हुए सिक्कों का क्या होगा ?
मैं थोड़ी देर वहां ठिठक गया !

मेरे मन के भावों को माधुरी समझ गई !
उसने कहा - इसमें तेरा क्या है ?
बात मेरी समझ में आ गई ।
एक साधक निर्लिप्त होता है !
बहुत सारी चीजों से मुक्त !!!

हां !
इसके लिए जरूरी है कि वह अकेला हो ।
गृहस्थ जीवन में आने के बाद कई बार समस्याएं आती रहती है ।

बहुत सारी जरूरतें आवश्यक और अनावश्यक भी मौजूद रहती है । इन सबके चलते मन भी विचलित होता है और लालच भी आता है ।

धन चीज ही ऐसी है कि वह बुद्धि भ्रष्ट भी करती है और लालच भी पैदा करती है ।
मेरे मन में भी एक क्षण के लिए उस धन के प्रति मोह पैदा हो गया था .....
जिसे माधुरी ने एक झटके में तोड़ दिया और मैं भी झिझकता हुआ माधुरी के पीछे पीछे अंदर चला गया .....
उस समय रात के 11 से ज्यादा हो चुके थे , और उसकी बुलेट की डिक्की में वह सारा सामान रात भर वैसे ही पड़ा रहा.....

अंदर आने के बाद हम दोनों ने पंडित जी को भुतहा बाबा के लिए किए जाने वाली विधियों के विषय में बताया । उन्होंने अगले दिन व्यवस्था कर देने का आश्वासन दिया । उसके बाद हम दोनों माधुरी के कमरे में पहुंचे !

वहां बैठने के बाद माधुरी को मैंने कुएं में से आती हुई आवाजों और उन नन्हे जुगनू के विषय में पूछा तो उसने बताया - वनराज के अत्याचारों का एक हिस्सा यह भी था । उसके द्वारा पकड़ कर लाई गई स्त्रियों में से जो गर्भवती हो जाती थी, उनका गर्भपात करने का प्रयास किया जाता था , लेकिन उसके बावजूद कई स्त्रियां प्रसव की स्थिति तक पहुंच जाती थी ।
उन नवजात शिशुओं को चांदनी महल की छोर पर बने हुए उस कुएं मे जीवित अवस्था में फेंक दिया जाता था । इस प्रकार की अकाल मृत्यु के कारण वे सारे नन्हे शिशुओं की आत्माएं आज भी भटक रही है ...
तुम्हारे यहां आने का उद्देश्य और मेरे तुम्हारे साथ जाने का उद्देश्य यही था कि उन शिशुओं की आत्माओं को मुक्ति दिलाई जा सके ।

अब मैं समझ चुका था कि बनारस आने के पीछे का कारण क्या है और मैं उस दिल दहला देने वाले स्वप्न का कारण भी समझ चुका था !

वाकई कितना दर्दनाक और भयावह अनुभव रहा होगा ! जिसमें मां के सामने उसके नवजात शिशु को छीन

लिया जाता था और उसे मौत के घाट उतार दिया जाता था ।

उन निर्दयी दुष्टों की करतूतों के बारे में सोच कर मेरी आत्मा तक कांप गई !

मैं यह सोचने के लिए विवश हो गया कि माता देवकी को कितना दर्द हुआ होगा ?

जैसा कि कथा है...

माता देवकी के नवजात शिशुओं को उन्हीं के सामने कंस मौत के घाट उतार देता था !

उन्होंने ऐसी सात संतानों की हत्या होते अपनी आंखों के सामने देखी थी, तब उनके हृदय पर क्या गुजरी होगी ?

उनको कितने दुख का सामना करना पड़ा होगा ?

एक परा ब्रह्मांडीय सत्ता !

भगवान कृष्ण !

उनको आने के लिए कितने कष्टों से गुजर कर उनकी मां को उनके आगमन का मार्ग प्रशस्त करना पड़ा होगा ।

यह सोच कर मेरा दिल बैठ गया...

उस लीलाधर की लीला तो वही जाने...

इसमें से किसी भी चीज को रोक लेना , उनके लिए तो बेहद सरल और सहज कार्य था ।
वह भी सारे परीक्षणों को पार करते हुए मानव के रूप में जन्म लेकर गुरुओं के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने कार्य को आगे बढ़ाते चले गए थे !

मनुष्य मात्र को यह दिशा निर्देश भी दे गए कि अपने आसपास घट रही घटनाओं को देखना भी जरूरी है...
आवश्यकता पड़ने पर उसमें हस्तक्षेप भी करना जरूरी है...
उसमें सुधार करने का प्रयास भी करना है...
खैर...

चौदस की रात थी और उस समय लगभग अर्ध रात्रि का समय हो चुका था ।
हम दोनों कक्ष में बैठे हुए थे ।
माधुरी ने अपने बैग में से एक बड़ी सी चादर निकाल कर जमीन पर बिछा दी थी । चादर में एक विचित्र सा यंत्र बना हुआ था जो देखने से किसी तिब्बती यंत्र की तरह दिखाई देता था । उसमे ड्रैगन जैसी कुछ आकृतियां

बनी हुई थी और कुछ ऐसे देवता दिखाई दे रहे थे जिनका मुख आग उगल रहा था !
आंखें बड़ी बड़ी थी और उनके शरीर में पंख भी बने हुए थे ।
ठीक मध्य में एक गोल आकार का यंत्र था जिसमें बहुत सारी लाइने खींची हुई थी वह गहरे काले रंग की थी ...

माधुरी ने अपना वह तांबे वाला बक्सा निकाला जिसमें वह विचित्र मधुमक्खी के छत्ते जैसे वाली चीज रखी थी जिसके अंदर कुए के अंदर से निकली हुई ढेरों आत्माएं आवाहित की गई थी ।

हम दोनों आमने सामने उस चादर के ऊपर बैठ गए ।
बक्से को खोलकर माधुरी ने उस गोल यंत्र के ऊपर रख दिया ।

लगभग 11 माला गुरु मंत्र का जाप हम दोनों ने किया ।
उसके बाद माधुरी ने साढे तीन अक्षरों का एक और मंत्र मुझे बताया । यह गुह्य काली का गोपनीय बीज मंत्र था ।

आत्मा को परमात्मा का अंश माना गया है । उसका सबसे विशुद्ध रूप महाकाल और महाकाली को माना गया है । महाकाली के अनेक रूप प्रचलित हैं उनमें से एक प्रबल प्रचंड और गोपनीय स्वरूप है गुह्यकाली ...

इस स्वरूप की साधना बहुत कम लोग करते हैं क्योंकि इनका स्वरूप अत्यंत विकराल है और साधना के दौरान इनके स्वरूप के दर्शन होने से सामान्य साधक बेहोश तक हो सकता है ।

ऐसी साधनाएं उन्हीं साधकों के द्वारा की जाती है जिन्होंने पहले भी काली के विभिन्न स्वरूपों की साधना की हो । विशेष रूप से अघोर साधक ही इस प्रकार की साधनाएं करते हैं।

गृहस्थ साधकों को इस प्रकार की साधना में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए क्योंकि उनका शरीर कमजोर होता है और वह इतने उग्र शक्ति का आह्वान करने पर अपने शरीर में उसे स्थापित नहीं कर पाते हैं जिससे कई प्रकार की विकृतियां पैदा हो सकती हैं ।

हम दोनों ही अघोर पंथ के साधक थे , इसलिए भी ! और गुरु की कृपा प्राप्त थी इसलिए भी ! हम लोग इस प्रकार की साधना मंत्र जाप कर लेते थे ।

महाकाली को शमशान की अधिष्ठात्री देवी माना गया है । अघोरी शमशान के अंदर ही साधना करता है इसलिए वह उसके लिए घर के आंगन जैसा होता है । अघोरी साधक महाकाली के लिए घर के बच्चे जैसा होता है और बच्चे को माँ का आह्वान करने और उसे बुलाने की छूट होती है.....

आधे घंटे तक मंत्र जाप करने के बाद वातावरण भारी होने लगा । चमेली की खुशबू से कमरा महकने लगा भगवती महामाया की उपस्थिति का आभास होने लगा था...

पात्र में रखा हुआ वह विचित्र सा पदार्थ धीरे धीरे चमकने लगा । 10-15 मिनट के बाद हम दोनों के नाभि से दो छोटे-छोटे लाल रंग के प्रकाशीय गोले बाहर की ओर निकलते हुए प्रतीत हुए और लगभग 6 फुट की ऊंचाई पर जाकर एक दूसरे से मिल गए और लाल रंग

हम दोनों ही अघोर पंथ के साधक थे , इसलिए भी ! और गुरु की कृपा प्राप्त थी इसलिए भी ! हम लोग इस प्रकार की साधना मंत्र जाप कर लेते थे ।

महाकाली को शमशान की अधिष्ठात्री देवी माना गया है । अघोरी शमशान के अंदर ही साधना करता है इसलिए वह उसके लिए घर के आंगन जैसा होता है । अघोरी साधक महाकाली के लिए घर के बच्चे जैसा होता है और बच्चे को माँ का आह्वान करने और उसे बुलाने की छूट होती है.....

आधे घंटे तक मंत्र जाप करने के बाद वातावरण भारी होने लगा । चमेली की खुशबू से कमरा महकने लगा भगवती महामाया की उपस्थिति का आभास होने लगा था...

पात्र में रखा हुआ वह विचित्र सा पदार्थ धीरे धीरे चमकने लगा । 10-15 मिनट के बाद हम दोनों के नाभि से दो छोटे-छोटे लाल रंग के प्रकाशीय गोले बाहर की ओर निकलते हुए प्रतीत हुए और लगभग 6 फुट की ऊंचाई पर जाकर एक दूसरे से मिल गए और लाल रंग

वह झाड़ियों के झुरमुट से घिरा हुआ एक सुनसान इलाका था । आबादी से दूर ! जहां पर हम लोग बाहर निकले थे ...

वहां पहुंचकर चादर और पात्र को गंगा नदी में विसर्जित कर दिया ....
उन सभी की आत्माओं को मुक्ति प्रदान करने का आग्रह करते हुए 108 बार गंगा नदी के जल से तर्पण करने के बाद हम लोग वापस लौट आए ....

अगले दिन दीपावली थी ।
जैसा कि मैंने आपको कहा था कि दीपावली में निशाकाल मे दो स्थिर लग्न होते हैं जिसमें से पहला लग्न शाम को लगता है जिसमें लक्ष्मी पूजन किया जाता है । लक्ष्मी पूजा के समय घर के सोने के और चांदी के सिक्कों को रखकर पूजन किया जाता है ।
विष्णु पंडित जी जिनके यहां माधुरी ठहरी हुई थी उन्होंने शाम को लक्ष्मी पूजन संपन्न करवाया । वह भी एक उच्च कोटि के तंत्र साधक थे । भूत बंगले से मिले सिक्कों को भी उस पूजन में हम लोगों ने शामिल किया था । इसके लिए हम लोग उनके घर मे भूगर्भ में स्थित

साधना कक्ष में पहुंचे । यह उसी गलियारे के एक तरफ था जहां से होकर हम लोग रात को नदी तट तक पहुंचे थे ।

वह काफी पुराना था ...

दीवालें पत्थर की बनी हुई थी !

पत्थरों का रंग हल्का मटमैला रंग का था ।

कमरे के फर्श पर श्री यंत्र बना हुआ था ।

भारत में कई मंदिरों में छत पर श्री यंत्र या अन्य यंत्र बने हुए हैं । उनकी कारीगरी देखकर आश्चर्य होता है कि किस प्रकार से उन कारीगरों ने इतने परफेक्शन के साथ उन यंत्रों को उतनी ऊंचाई पर स्थित छत मे बनाया होगा ।

फर्श पर जो यंत्र बना था वह पुखराज जैसे किसी हल्के पीले रंग के रत्न से बना हुआ लग रहा था । उसके ठीक बीच में लाल पत्थर से बिन्दु बना हुआ था ।

यंत्र के मध्य भाग में प्रमुख देवता की स्थापना की जाती है । उदाहरण के लिए श्री यंत्र के मध्य भाग में श्री विद्या की स्थापना की जाती है । किसी भी यंत्र के मध्य में जब बिंदु अंकित होता है तभी वह यंत्र जागृत हुआ

माना जाता है । कई बार मध्य के बिंदु पर विग्रह भी स्थापित किए जाते हैं ।

उस बिन्दु पर पारद लक्ष्मी की स्थापना की गई । पारे से बने हुए लक्ष्मी जी के विग्रह को पारद लक्ष्मी कहा जाता है इसके अलावा उन्हें पारदेश्वरी भी कहा जाता है । जहां भी पारदेश्वरी की स्थापना की जाती है वहां साक्षात महा लक्ष्मी का वास होता है ऐसा माना जाता है ।

पंडित जी ने यंत्र के दक्षिणी द्वार पर दीपक रख दिया और उसकी रोशनी में पूरा यंत्र स्पष्ट जगमगाने लगा था । श्री सूक्त महालक्ष्मी साधना का एक विशेष स्तोत्र है जिसके साथ बीज मंत्रों को संपुटित करके पंडित जी ने पूजन संपन्न करवाया । जिसमें लगभग 2 घंटे का समय लगा । पूजन संपूर्ण होने पर पूरा कक्ष गुलाब के फूलों की खुशबू से भर गया जोकि भगवती के आशीर्वाद का प्रतीक था ।

उस समय रात के साढ़े नौ बज रहे थे। पूजन समाप्त हो जाने के बाद पंडित जी ऊपर अपने कक्ष की ओर लौट गए ।

मैं और माधुरी कक्ष से निकले और लगभग सौ कदम चलने के बाद एक और दरवाजा दिखाई दिया । काफी पुराना और भारी दरवाजा था । उसमें पीतल के गोल गोल नुकीले आकार बने हुए थे ।

माधुरी ने उस दरवाजे पर हाथ रखकर कुछ मंत्रों का जाप किया ।

चरमराहट की आवाज के साथ दरवाजा खुल गया ।

अंदर एक विचित्र सी महाकाली की मूर्ति विद्यमान थी ... महाकाली के अनेक स्वरूप है और उनमें से कई अत्यंत ही विचित्र है । जिस प्रकार से भगवान शिव सभी योनियों के आराध्य हैं और वे अपने अपने तरीके से उनकी पूजा करते हैं ठीक उसी प्रकार से महाकाली भी उनकी शक्ति होने के कारण सभी योनियों की आराध्य हैं और वे अपनी अपनी मानसिकता भावना और विचारधारा के अनुसार देवी के स्वरूप की पूजा करते हैं । रावण भी भगवती का उपासक था ...

कमरे के अंदर बनी हुई एक चौकोर चबूतरे जैसी आकृति के ऊपर गहरे काले रंग के पत्थर से बनी हुई उस मूर्ति की ऊंचाई लगभग 8 फीट रही होगी ।

उसका स्वरूप बेहद विकराल था।

चांदी के जैसे किसी धातु का बना हुआ खडग दाहिने हाथ में हवा में उठा हुआ था !

जो चमक रहा था !

कमरे की दीवाल पर एक मशाल घुसी हुई थी जिसकी हल्की पीली रोशनी कमरे में बिखरी पड़ी थी ...

उस रोशनी में विग्रह का स्वरूप और भयानक लग रहा था !

भगवती की आंखें और जीभ दोनों ही लाल रंग से रंगी हुई थी !

ऐसा लग रहा था जैसे खून लगा हुआ हो ।

मूर्ति के सामने ही बलि यूथ बना हुआ था । बलि यूथ का तात्पर्य होता है वह स्थान जहां पर बलि चढ़ाई जाती है । उसके बगल में ही तलवार जैसा धारदार हथियार भी रखा हुआ था, जो संभवत बलि देने के काम आता रहा होगा ...

देवी के सामने पाँच पात्र रखे हुए थे !
जो अलग-अलग प्रकार के मांस खंडों से भरे हुए थे!
मदिरा का चषक भी वही पर रखा हुआ था !
उस कक्ष में हमारे अलावा तीन और लोग भी मौजूद थे । उनके आसन वहां पर पहले से बिछे हुए थे जिससे ऐसा लगता था कि वह वहां पर पहले से साधना कर रहे थे । उन सबके द्वारा माधुरी के लिए बहुत सम्मान प्रदर्शित किया जा रहा था जो इस बात का प्रतीक था कि वह संभवतः माधुरी के द्वारा ही इस साधना के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे थे ।
गुह्यकाली की साधना अत्यंत दुरुह और जटिल मानी जाती है । इस साधना को अघोर मार्ग से ही संपन्न किया जाता है, क्योंकि देवी का स्वरूप अत्यंत ही उग्र है और उनकी पूजा पद्धति वाममार्गी ही होती है ।
जीवन में जो भी रंग हम देखते हैं वह सारे रंग काले रंग में जाकर समाप्त हो जाते हैं । उन रंगों का अस्तित्व मिट जाता है ।

ब्लैक होल का मतलब होता है काले रंग का गड्ढा या काले रंग की कोई ऐसी संरचना जो गोलाकार हो ।

ब्रह्मांड में एक संरचना की कल्पना की गई है जिसे ब्लैक होल कहा गया है । इस ब्लैक होल के अंदर गुरुत्वाकर्षण इतना प्रबल होता है कि वह प्रकाश को भी अपने अंदर समाहित कर लेता है । कोई आकाशीय पिंड ग्रह उपग्रह उसके आसपास से भी गुजरे तो वह उसके आकर्षण के चलते उसके अंदर समाहित हो जाता है ! इस प्रकार से उसके अंदर का गुरुत्वाकर्षण और बढ़ता जाता है । एक मान्यता यह भी है कि ब्रह्मांड की उत्पत्ति ब्लैक होल के द्वारा हुई है ...

तंत्र जगत में महाकाली को मूल शक्ति माना गया है और सारी शक्तियों को उसके अंदर ही समाहित और उसी के अंदर से निकला हुआ माना जाता है । इसलिए उनके स्वरूप में विकरालता समाहित है । वे महाकाल की अर्थात संहार के देवता की शक्ति है । वह शमशान की अधिष्ठात्री देवी हैं । वह महाविद्याओं में प्रथम होने के कारण प्रथमा कही जाती है और प्रथम आराध्य भी मानी जाती है ...

तंत्र साधनाओं के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए महाकाली साधना को सर्वश्रेष्ठ माना गया है । उनके अनेक स्वरूप साधना जगत में स्वीकृत है ।

जिनमें से सबसे प्रचंड स्वरूप गुह्यकाली को माना जाता है ।

माधुरी ने उन लोगों को कुछ विशेष प्रकार का पूजन करवाया और दूसरे कक्ष में जाकर मंत्र जाप करने का निर्देश दिया । वे अपने-अपने आसन उठाकर उसी कमरे के साथ लगे हुए दूसरे कक्ष की ओर चले गए ।

हम साधना करने के लिए भूमिगत कमरे में बैठे हुए थे 12:15 बजे के आसपास लग्न प्रारंभ हुआ और गुह्यकाली का जो गोपनीय मंत्र मुझे माधुरी ने बताया था उसका हम दोनों ने मिलकर जाप प्रारंभ कर दिया । लगभग 1 घंटे के मंत्र जाप के बाद कमरे में अजीब अजीब सी ध्वनिया आने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे कोई चहलकदमी कर रहा हो !

कभी ऐसा लगता था जैसे कुछ बाजू से स्पर्श करके निकल गया हो !

मूर्ति को देखने मात्र से भय की अनुभूति होती थी !

इतनी जागृत मूर्ति मैंने इससे पहले नहीं देखी थी,
बिल्कुल ऐसा लगता था जैसे अभी बोल पड़ेगी !
हम दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए मंत्र जाप में लगे हुए थे !
कमरे के अंदर हलचल धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी !
कभी-कभी ऐसा लगता जैसे कोई स्त्री जोर-जोर से अट्टहास कर रही हो !
कभी ऐसा लगता जैसे बड़े-बड़े घुंगरुओं की आवाज गूंज रही हो !
लगभग डेढ़ घंटे का मंत्र जाप पूरा हो चुका था, जब अचानक कमरे में बने हुए दूसरे द्वार से एक शृगाल अर्थात सियार अंदर आता हुआ दिखाई दिया .....
महाकाली की गोपनीय साधनाओ में उनके निमित्त रखे गए भोगखंड को खाने के लिए सियार के स्वरूप में उनकी शक्तियां उपस्थित होती है । जिसका मतलब होता है कि देवी ने भोगखंड को स्वीकार किया ।
यह साधना में सफलता का प्रतीक माना जाता है ।
वह सियार धीरे-धीरे आता हुआ देवी के मूर्ति के ठीक सामने पहुंचकर ऊंचे स्वर में आवाज करने लगा ।

यह मेरे लिए बेहद आश्चर्यजनक अनुभव था , सियार, एक जंगली जानवर इस प्रकार से देवी की मूर्ति के सामने आवाज निकाल कर अपने शब्दों में उनकी स्तुति करता हुआ प्रतीत हो रहा था !
लगभग तीन चार बार उसने इस प्रकार से ध्वनि की होगी, तब तक माधुरी ने आगे बढ़कर उन पात्रों को एक पंक्ति में उसके सामने सजा दिया और उसे हाथ जोड़कर प्रणाम किया । उसकी देखा देखी मैंने भी हाथ जोड़कर प्रणाम किया ।

सियार ने हम दोनों की तरफ घूरती हुई नजरों से देखा । उसके देखने से मन में भय का आभास होता था ।
कुछ क्षण घूरने के बाद उसने पात्र में रखा हुआ भोग खंड ग्रहण कर लिया और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से चुपचाप वापस चला गया ।
उसके जाने के बाद कमरे के अंदर चमेली के फूल की तीखी सुगंध फैल गई.....
जो मंत्र जाप की समाप्ति तक कायम रही । लगभग सवा 2 घंटे का मुहूर्त था ,जिसमें हम लोगों ने मंत्र जाप संपन्न किया ।

पूजन समाप्त होते होते देवी की मूर्ति किसी अदृश्य प्रकाश से जगमगाने लगी । उनका भयानक स्वरूप प्रज्वलित होने लगा जिसे देखकर मैं बेहोश हो गया । माधुरी का मुझे पता नहीं चला , मैं अपने आसन पर पीछे की तरफ लुढ़क गया । उस समय रात्रि का लगभग ढाई बजे का समय हुआ होगा.....

उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला ।

जब मुझे होश आया तो मैंने घड़ी देखी ।

उस समय दोपहर के 3:30 बज रहे थे यानी कि मैं लगभग 12-13 घंटे बेहोशी की अवस्था में पड़ा था ।

मेरे बगल में माधुरी भी बेहोश पड़ी हुई थी । मैंने उसे झिंझोडा, वह हड़बड़ा कर उठ बैठी । उसकी आंखें बुरी तरह से लाल थी जैसे उनमें खून समा गया हो.....

मैं उसे आश्चर्य से देख रहा था और इतने ही आश्चर्य से वह मुझे देख रही थी ।

उसने मुझसे कहा - तुम्हारी आंखें तो खून से भरी हुई महसूस हो रही है ।

मैंने कहा - तुम्हारी आंखें भी खून जैसी लाल हो रही है ।

हम दोनों एक दूसरे का सहारा लेकर उठ खड़े हुए । देवी की प्रतिमा अब सौम्य हो रही थी । हमने दंडवत प्रणाम किया और कक्ष से बाहर निकल आए ।

कक्ष के बाहर वही सियार बैठा हुआ था ।

बिल्कुल उसी अंदाज मे जैसे चौकीदारी मे बैठा हो ...

जैसे ही हम बाहर निकले वह गलियारे मे भागता हुआ आँखों से ओझल हो गया ।

यह था भगवती गुह्यकाली की साधना का पहला अनुभव !

आपने भी अनुभव किया होगा कि जैसे जैसे शरीर में गर्मी बढ़ती है वैसे ही आपकी आंखें भी लाल होती जाती है ।

हमारी आंखें बिल्कुल खून से सनी हुई लग रही थी । उससे आप अंदाज लगा सकते हैं कि शरीर में कितनी गर्मी रही होगी ।

ऐसा लग रहा था जैसे शरीर के अंदर आग लगी हुई हो ।

इच्छा यह हो रही थी कि जाकर सीधे गंगा नदी में कूद जाऊँ और वहीं पड़ा रहूं ...

मैंने माधुरी की तरफ देखा उसकी स्थिति भी लगभग वैसी ही थी । हम दोनों एक दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराए और नदी तट की ओर बढ़ गए । आधे घंटे तक पानी में पड़े रहे तब जाकर थोड़ी सी राहत महसूस हुई । फिर हम बाहर निकले और गीले कपड़ों में ही ऊपर माधुरी के कमरे में आ गए ।
कमरे मे आकार हमने सूखे कपड़े पहन लिए और बिस्तर पर लेट गए । तब तक शाम हो चुकी थी ।

पानी की ठंडक से शरीर की गर्मी को जो राहत मिली थी वह बहुत लंबे समय की नहीं थी...

पंखे को फुल स्पीड में डालकर हम बिस्तर पर पड़े हुए थे ।
तभी पंडित जी कमरे में आए ।
हमारी हालत देख कर वह थोड़े चिंतित हुए लेकिन माधुरी ने उन्हें समझाया कि चिंता करने की जरूरत नहीं है कभी कभी ऐसा हो जाता है और जल्द ही हम लोग दोनों सामान्य हो जाएंगे ।

पंडित जी को माधुरी की बात पर विश्वास तो था लेकिन पूरा विश्वास नहीं था उन्हें लग रहा था कि कुछ दिक्कत जरूर है ।

अचानक पायल की झंकार सुनाई दी !
ऐसा लगा जैसे कोई कमरे की तरफ आ रहा हो !
आवाज दरवाजे की तरफ आती हुई प्रतीत हो रही थी !
हम तीनों उस तरफ मुड़े !
यह देखने के लिए कि कौन आ रहा है ?

तभी पंडिताइन कमरे में आई ।
पंडिताइन यानी पंडित जी की पत्नी !
उनकी उम्र रही होगी यही कोई 60 साल ।

जैसे ही वे दरवाजे तक पहुंची कमरे में चंदन की खुशबू बिखर गई ।
उनके चेहरे से जैसे तेज टपक रहा था ।
तीखे नैन नक्श और दमकती हुई आंखें !
ऐसा लग रहा था जैसे कोई देवी साक्षात प्रकट हो गई हो !

हम दोनों ने बिस्तर से उठने की कोशिश की लेकिन उठने की स्थिति में नहीं थे इसलिए उन्होंने लेटे रहने का संकेत दिया ।
उनके हाथों में एक पीतल की कटोरी थी जिसमें कुछ था।

हम दोनों ने उनको पहले भी देखा था लेकिन उस समय उनके अंदर कुछ अलग ही तेज और लावण्य छलक रहा था !
मुझे लगा कि शायद साधना की गर्मी की वजह से आंखें लाल होने के साथ-साथ कुछ गड़बड़ भी हो गई होंगी, इसलिए ऐसा लग रहा होगा !
लेकिन माधुरी और पंडित जी भी उसी तरह से हकबकाये हुए उनको देख रहे थे । ठीक वैसे ही जैसे अचानक किसी अद्भुत सौंदर्य युक्त नवयोवना षोडशी युवती के सामने आ जाने पर हम हतप्रभ होकर उन्हें देखने लग जाते हैं ।

हमें इस प्रकार हक बकाया हुआ देखकर उन्होंने पंडित जी से कहा - चंदन का लेप है बच्चों को लगा देती हूं ।
उनकी बात सुनकर पंडित जी कमरे से बाहर चले गए ।

पहले पंडिताइन माधुरी के पास गई और उसके नाभि के चारो और उस चंदन से गोल दायरे में लगभग 8 इंच व्यास का लेप लगा दिया ।
चंदन की खुशबू से पूरा कमरा महक रहा था । आमतौर पर चंदन खासतौर से घिसा हुआ चंदन हल्की भीनी खुशबू वाला रहता है । जब तक आप उसके पास जाकर सांस ना खींचे तब तक उसकी खुशबू का अहसास कम होता है । लेकिन यह लेप ऐसा लग रहा था जैसे चंदन का परफ्यूम पूरे कमरे में स्प्रे कर दिया गया हो ।

माधुरी की नाभि में लेप करने के बाद उन्होंने उसके माथे पर भी चंदन का लेप किया और आंखें बंद करने के लिए बोलने के बाद उसकी आंखों के ऊपर भी उसी चंदन का लेप कर दिया ।

उसके बाद पंडिताइन मेरी तरफ पलट कर आई ।
मुझे थोड़ा संकोच हो रहा था लेकिन मैं विरोध करने की स्थिति में भी नहीं था ।

उन्होंने मेरी नाभि पर भी उसी प्रकार 8 इंच के गोले के आकार का लेप लगा दिया और मेरे हृदय स्थल पर भी उसी चंदन का लेप लगा दिया ।

लेप लगते ही मुझे काफी ठंडक महसूस हो रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे वह लेप शरीर की गर्मी को खींच रहा है । जब उन्होंने माथे पर चंदन का लेप लगाया तो मेरा शरीर पूरी तरह से शांत होने लगा था ।

माधुरी तब तक खर्राटे मार कर सो रही थी ।

माथे पर जब उन्होंने लेप लगाया तब तक मुझे भी नींद आने लगी और मैं भी सो गया ।

उधर पंडित जी कमरे से बाहर निकल कर लघुशंका के लिए गए और वे जब दालान में पहुंचे तो आश्चर्यचकित रह गए...

उन्होंने देखा पंडिताइन वहां बैठकर बर्तन साफ कर रही थी । पंडित जी खंभा थाम कर थोड़ी देर वहीं खड़े रह गए ।

उन्होंने उनसे पूछा - इतनी जल्दी तुमने लेप लगा दिया ।

पंडिताइन - कौन सा लेप ?

पंडित - अभी जो तुम कमरे में चंदन का लेप लेकर आई थी ! बच्चों के लिए ! वह तुमने लगा दिया क्या ? इतनी जल्दी आकर तुम अपना काम भी करने लगी ? लगता है तुम्हारे घुटनों का दर्द अब बिल्कुल ठीक हो गया है ।

पंडिताइन की समझ में कुछ नहीं आया ।

उसने कहा - मैं तो आधे घंटे से बर्तन मांज रही हूं आप कौन से लेप की बात कर रहे हैं ? बच्चों को मैं क्यों लेप लगाऊंगी ? उनको कोई परेशानी है क्या ?

पंडित जी चकरा गए ।

उनकी समझ में कुछ कुछ बात आने लगी ।

उन्होंने धोती उठाइ और तेजी से वापस कमरे की तरफ आए ।

तब तक हम दोनों सो चुके थे !

पंडित जी को कमरे की तरफ आता देख कर कमरे के अंदर बैठी पंडिताइन ने उन्हें चुप रहने का इशारा किया ।

पंडित जी समझ चुके थे कि वह कौन है !

उन्होंने दंडवत प्रणाम किया !

वे दंडवत प्रणाम की मुद्रा में ही लेटे हुए थे । तभी कमरे के अंदर बैठी पंडिताइन ने कहा - दो कटोरिया खीर की यहां छोड़ रही हूँ । दोनों को उठते हीं खिला देना ।
पंडित जी ने लेटे-लेटे सहमति में सिर हिलाया ।
फिर गंभीर आवाज गूंजी - उठो पंडित ।
पंडित जी उठ कर बैठ गए ।
देवी ने उनकी तरफ एक पात्र बढ़ाया और कहा - पी लो ।
पंडित जी ने काँपते हुए हाथों से पात्र को अपने हाथ में लिया और एक ही सांस में पी गए ।
पात्र का द्रव गले से नीचे उतरते उतरते उनके ऊपर बेहोशी छाने लगी और वह वहीं दरवाजे पर ही बेहोश हो गए । लगभग आधे घंटे तक वहीं पर बेहोश पड़े रहे । उसके बाद उन्हें होश आया और देखा तो कमरे में हम दोनों के अलावा कोई नहीं था और हम दोनों बड़े आराम से खर्राटे मार कर सो रहे थे ।

उन्होंने हमें उठाना जरूरी नहीं समझा ।
वह इस सोच में पड़ गए कि उन्होंने जो देखा था वह सच था या कोई सपना ।

तभी उन्हें अपने पास पड़ी हुई कटोरी दिखाई दी । कटोरी देखते ही उन्हें खीर की याद भी आई । देखा तो टेबल के ऊपर दो कटोरी खीर रखी हुई थी ।

वह बाहर निकले तो पंडिताइन बर्तन धो कर वहां से जा चुकी थी । यह देख कर उन्हें फिर संदेह हुआ और वे कमरे तक पहुंचे तो पंडिताइन वहां पर भी नहीं थी । उन्होंने रसोई का रुख किया तो पंडिताइन वहां पर सब्जी बनाती हुई दिख गई । उन्होंने उनसे पूछा - खीर तुमने बनाई ?

पंडिताइन काम करके थक गई थी और उन्होंने कहा - लगता है आप सठिया गए हो । थोड़ी देर पहले चंदन का पूछ रहे थे और अब खीर की बात कर रहे हो । मुझे बर्तन भांडे से फुर्सत मिली तो आपके लिए भोजन बना रही हूं अगर आपको खीर खाने की इच्छा हो तो बताओ वह भी बना देती हूं लेकिन आधा घंटा समय लगेगा ।

पंडित जी समझ गए कि महामाया स्वयं खीर लेकर प्रकट हुई थी क्योंकि खीर की कटोरी तो गरम-गरम थी ।

पंडिताइन तो बर्तन मांज कर अब चावल बनाने में लगी है इसका मतलब उसने तो खीर बिल्कुल नहीं बनाई ...

पंडित जी चारपाई पर बैठकर फूट-फूट कर रोने लगे ।
कुछ आनंद की अवस्था में !
कि उन्हें महामाया ने साक्षात दर्शन दिए !!
कुछ विषाद में !
कि वे उन्हें शुरू मे पहचान नहीं पाए !!
कुछ उल्लास में !
कि उन्होंने स्वयं अपने हाथों से पंडित जी को प्रसाद दिया ।
उन क्षणों को याद करके वह हिलक हिलक कर रोते रहे ।
उनके रोने की आवाज सुनकर पंडिताइन बाहर निकली ।
उन्होंने कभी पंडित जी को इस प्रकार से रोते हुए नहीं देखा था !
उन्हें समझ में नहीं आया कि क्या हो गया ?
वह जल्दी से पानी का गिलास लेकर आई और पंडित जी से पूछा - क्या हुआ ?

पंडित जी जवाब देने की स्थिति में नहीं थे !
जिसने साक्षात भगवती के दर्शन किए हो !!
वह कुछ भी बोलने सुनने की स्थिति में नहीं रहता है!!!
ठीक वही स्थिति पंडित जी की थी !!!!
पंद्रह- बीस मिनट रो लेने के बाद पंडित जी ने पंडिताइन को सारी बात कह सुनाई ।
पंडिताइन को सुनने के बाद भी विश्वास नहीं हुआ !
लेकिन...
पंडित जी की अवस्था को देखते हुए अविश्वास करने का प्रश्न भी नहीं था !!!
फिर भी उन्होंने पंडित जी से पूछा - तो खीर की कटोरीया तो कमरे में रखी होगी ।
पंडित जी ने स्वीकृति में सिर हिलाया । पंडिताइन तेजी से कमरे की ओर बढ़ी ।

जब वह कमरे में पहुंची तो आश्चर्य से उसकी आंखें फटी रह गई ! उसने देखा कि टेबल पर दो कटोरिया खीर से भरी हुई रखी है और एक कटोरी खाली जमीन पर पड़ी हुई है । जिसमें से एकाद बूंद जमीन पर भी गिरा हुआ है ।

उन्होंने उसे उंगली से उठाकर चखकर देखा !
कुछ शहद जैसा था लेकिन उससे भी मीठा ...
उसे चखते ही पंडिताइन को भी चक्कर जैसा महसूस हुआ और वह धम्म से जमीन पर बैठ गई । तब तक पंडित जी भी सम्हल चुके थे ।
कमरे में पहुंचकर पंडिताइन की अवस्था को देखकर उन्होंने उसे उठाया और उन्हे लेकर अपने कमरे में वापस आ गए अब दोनों साथ में हिलक हिलक कर रो रहे थे ।

उनके रोने की आवाज से मेरी नींद खुल गई ।
मुझे किसी अनहोनी का अंदेशा हुआ और मैंने बिस्तर से उठने की कोशिश की । मुझे अपना शरीर एकदम हल्का लग रहा था । मैं आसानी से उठ गया और बाहर निकलकर पंडित जी के कमरे में पहुंचा तो दोनों पति-पत्नी एक दूसरे को पकड़कर रो रहे थे ।

मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि अंदर जाऊं या ना जाऊं !
फिर भी कारण जानना जरूरी था इसलिए मैंने पूछा - पंडित जी क्या हुआ ?

पंडित जी कुछ नहीं बोले और मेरी तरफ हाथ जोड़ दिया ।

मुझे किसी अनहोनी की आशंका हो रही थी इसलिए मैंने फिर से पूछा - पंडित जी आप दोनों क्यों रो रहे हो ? कुछ तो बताइए । क्या कुछ गड़बड़ हो गई है ?

पंडित और पंडिताइन दोनों अपनी जगह से उठे और मेरे सामने दंडवत लेट गए ।

अब आश्चर्य की बारी मेरी थी ।

बुजुर्ग पंडित जी जो मेरे लिए सम्माननीय थे !

और पंडिताइन जो उनकी पत्नी होने की वजह से भी !

उम्र में बड़ी होने की वजह से भी !

और स्त्री होने की वजह से भी मेरे लिए सम्माननीय थी !!

वह दोनों मेरे सामने दंडवत लेटे हुए थे ।

कुछ क्षणों तक मुझे समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है ?

फिर मैं थोड़ा सामान्य हुआ तो मैंने जमीन पर बैठकर उनसे पूछा - आप लोग क्या कर रहे हैं ? मैं तो आप

लोगों के बालक जैसा हूं फिर आप मुझे क्यों दंडवत कर रहे हैं ? ऐसा ना करें ।

लेकिन मेरी बात का उनके ऊपर कोई असर नहीं हुआ और दोनों उसी प्रकार दंडवत अवस्था में लेटे रहे । जब मुझसे कुछ नहीं बना तो मैं वहीं जमीन पर बैठ गया । लगभग 5-7 मिनट तक यही स्थिति रही होगी , उसके बाद दोनों उठे ।
उठने के बाद दोनों ने सारी कहानी सुनाई ।

पंडित जी बोले - तुम धन्य हो ! तुम्हारे गुरु भी धन्य है !! और माधुरी भी धन्य है !!!
जिसके लिए भगवती स्वयं खीर बनाकर लाई ।

सारी बात सुनने के बाद अब मेरी स्थिति भी खराब हो चुकी थी । मेरी आंखों से अविरल आंसू बह रहे थे ।
मैं यह सोच रहा था कि मां ने अपने हाथों से मुझे और माधुरी को चंदन का लेप लगाया !
स्वयं अपने हाथों से खीर बना कर लाई और हम उनके हाथों से उसे ग्रहण नहीं कर पाए ।

खीर की याद आते ही मैं कमरे की ओर दौड़ा । जब मैं कमरे में पहुंचा तो वास्तव में वहां पर दो कटोरी खीर की रखी हुई थी ।
मैंने माधुरी को झिंझोड़कर उठाया और उसे सारी बात बताई । सारी बातें सुनकर उसकी आंखों से भी आंसू बहने लगे । उसी स्थिति में हमने वह खीर खाई । वैसा सुस्वादु खीर जीवन में दोबारा नहीं मिला । उसका स्वाद बहुत अद्भुत था ।

थोड़ी देर में पंडित जी और पंडिताइन दोनों कमरे में आ चुके थे !
उन्होंने आगे बढ़कर माधुरी के भी चरण स्पर्श कर लिए ! माधुरी ने भी उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन वे नहीं रुके ।

पंडित जी गदगद कंठ से बोले - बेटा तुम दोनों आयु में मुझसे आधी आयु के हो ! संभवत: उससे भी कम होगी लेकिन मेरा यह प्रणाम तुम्हारे अंदर के साधनात्मक तेज को है, तुम्हारे ऊपर बरसी गुरुकृपा को है । जिसकी वजह से मुझे भी साक्षात भगवती के दर्शन हो पाए ।
काफी देर तक हम लोग उसी प्रकार बैठे रहे !

चर्चा करते रहे !

बातें निकलती रही !

रात के लगभग 10 बजने वाले थे, जब पंडित और पंडिताइन दोनों कमरे से वापस निकले । उनके जाते ही मैंने और माधुरी दोनों ने एक दूसरे को देखा और हम एक दूसरे के गले लग गए और कूद कूद कर नाचने लगे ....

ठीक वैसे ही जैसे छोटे बच्चे करते हैं ...

वह प्रसन्नता वह क्षण कुछ वैसा ही था...

किसी भी साधक के जीवन का अविस्मरणीय आनंददायक क्षण...

जब उसे साक्षात महामाया का साक्षात्कार हो !

उनकी कृपा प्राप्त हो !!

लगभग 11 बजे के आसपास हम लोग सो गए । उस रात ऐसी नींद आई जैसे किसी नन्हे शिशु को मां की गोद में आती होगी । अगली सुबह होते तक हमारे शरीर का ताप ठंडा हो चुका था ।

हम दोनों ने चंदन के उस लेप को निकाल कर एक डब्बे में रख दिया । क्योंकि वह लेप भी तो अद्भुत था इसलिए उसे फेंकने का तो सवाल ही नहीं था ।

दोपहर होते तक हम लोग पूरी तरह सामान्य हो चुके थे ।

वह भाई दूज का दिन था ।

दोपहर के भोजन के बाद जब मैं कमरे में लौटा तो मुझे अपने माथे में दोनों भौंह के बीच कुछ सनसनाहट सी महसूस होने लगी ।

मैं बिस्तर पर बैठ गया और मेरा ध्यान लग गया !

उस समय दोपहर के 2 बजे के आसपास का समय हो रहा होगा जब मेरा ध्यान लगा और शाम के 5 बजे के आसपास मैं वापस चेतन चैतन्य हुआ ।

वह भी एक अद्भुत और अकल्पनीय अनुभव था । इस दौरान मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मैं कई ब्रह्मांडों की यात्रा करके लौट आया हूं ।

हमने पंडित जी को भुतहा बाबा के सोने के सिक्कों के उपयोग के बारे में चर्चा की थी । उन्होंने उसी शाम को अपने एक परिचित ज्वेलर को इस संबंध में मिलकर सूचना दे दी थी । जो आने का वादा कर चुके थे ।

उस रात पंडित जी के साथ काफी देर तक हम लोग बैठ कर बातें करते रहे । उन्होंने अपने साधनात्मक संस्मरण

सुनाए । कुछ हम लोगों ने भी सुनाए और देर रात सब सो गए ।

भाई दूज के अगले दिन हमारे मेजबान विष्णु पंडित जी के पहचान के वह ज्वैलर किरात सोनी घर आए और हमने उन्हें वे सिक्के दिखाए ...

उन्होंने कहा - देखने में तो सभी सिक्के सोने के लग रहे हैं फिर भी इन्हे पिघलाकर ही बता पाऊंगा कि यह कितने खरे हैं ।

मैं और माधुरी उनके साथ उनकी वर्कशॉप में पहुंचे । उस समय के हिसाब से वह काफी आधुनिक तकनीक का उपयोग करते थे । संभवतः उनकी दुकान काफी चलती रही होगी । वहां एक भट्टी लगी हुई थी । उसमें उन्होंने दस सोने के सिक्कों को डाला और करीब 10-15 मिनट में सिक्के पिघलने लगे । पिघलने के बाद उन्होंने उसे बाहर निकाला और ठंडा होने के बाद उसकी जांच की और बताया कि वह लगभग 18 कैरेट का सोना था । दस सिक्कों का पिघलाने के बाद वजन करीब साढ़े आठ सौ ग्राम था ।

सोने के पूरे सिक्के उसी प्रकार पिघलाए गए और उनका कुल वजन करीब 18 किलो निकला ।

चांदी को भी पिघलाया गया जिसका वजन 21 किलोग्राम था ।
चांदी करीबन 75 % शुद्धता की निकली ।

हमने उसमे से करीब 3 किलो सोना बेच दिया ।
शुद्धता के हिसाब से उन्होंने उसकी कीमत ₹4000 तोला लगाई । हमारे पास कोई दूसरा ऑप्शन नहीं था इसलिए हमने उसे स्वीकार कर लिया और इस प्रकार से लगभग 12 लाख रुपए हमें मिले । उस मिले धन से सबसे पहले पिशाच मोचन का कर्मकांड संपन्न किया गया । जाप के लिए अगले दिन पंडित जी ने भोजन के लिए 108 ब्राह्मणों को बुलाया । सभी से कुछ मंत्रों का उच्चारण करवाया गया । भोजन के बाद उनको दक्षिणा देकर विदा किया गया ।
उसमे से 12 पंडितों का उच्चारण मंत्र जाप के लिए मुझे और माधुरी को उपयुक्त लगा ।
बाद में उन पंडितों को अलग से बुलाया गया ।
प्रत्येक पंडित को दो लाख मंत्र जाप का संकल्प करवाया गया और उनकी इच्छानुसार दक्षिणा भी

निर्धारित कर दी गई जो जाप पूर्ण हो जाने के बाद उन्हें प्रदान की जानी थी ।
ग्यारह दिन तक रोज भंडारे की व्यवस्था भी भुतहा बाबा के लिए की गई ।
जिसमे पहले दिन करीब 900 लोगों ने भोजन किया फिर अगले दिन संख्या करीब 1500 तक पहुँच गई । तीसरे दिन संख्या बढ़कर 2000 तक हो गई । भोजन व्यवस्था काफी शानदार रही और खाने वाले तृप्त होकर गए । भोजन के बाद सभी को 11 रुपये दक्षिण भी दी जा रही थी इसलिए भीड़ रोज रहती ।
तकरीबन बीस बाईस हजार लोगों ने भोजन किया होगा । 11 दिन का सारा कार्यक्रम समाप्त हो गया और 24 लाख मंत्र जाप भी पंडितों ने संपन्न कर दिया था उनकी दक्षिणा वस्त्र आदि देकर मैंने और माधुरी ने उनको ससम्मान विदा किया ..

उसी रात भुतहा बाबा का बिम्ब स्वप्न में आया और उन्होंने हाथ जोड़कर धन्यवाद देने के साथ एक और बात कही - गिरधारी ही वनराज है । उसके मामले मे हस्तक्षेप मत करो ।

यह बात सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया ! क्योंकि यह मेरी सोच से बहुत अलग बात थी। कहां वह अत्याचारी और निर्दई जमींदार वनराज और कहां यह सीधा साधा भोला भाला गिरधारी....

दोनों में कोई समानता ही नहीं थी।

जिसने भी वनराज की कहानी का एक भी अंश सुना होगा, वह किसी भी तरह से यह मानने के लिए तैयार नहीं होगा कि गिरधारी ही उसका पुनर्जन्म है ।

मैं प्रकृति के इस रहस्य को जान कर हतप्रभ था ।

मैंने भुतहा बाबा से थोड़ा और स्पष्टीकरण देने के लिए कहा । उन्होंने बताया कि वनराज मृत्यु के बाद पिछले 2 जन्मों से इसी प्रकार लोगों की प्रताड़ना झेल रहा है । यह जन्म भी उसे इसी प्रकार गुजारना है, तभी उसके द्वारा किए गए अत्याचारों का फल उसे पूर्णत: प्राप्त होगा और फिर से वह अपनी यात्रा प्रारंभ कर सकेगा ।

मैंने पूछा - वनराज के दुष्कर्म में साथ देने भर से आपको पिशाच योनि प्राप्त हो गई तो वह कैसे मनुष्य रूप में जन्म ले पाया ।

भुतहा बाबा - जैसे कि तुम भी जानते होगे वनराज किसी नरपिशाच से कम नहीं था और उसने अनेक

प्रकार के दुष्कर्म को अंजाम दिया था, लेकिन जीवन के आखिरी वर्षों में उसने अनेक साधु संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया । यही नहीं उसकी पत्नी और बेटे ने भी उसके लिए बहुत सारे पुण्य कर्म किए । इन के परिणाम स्वरूप उसे पिशाच योनि तो मिली लेकिन अल्प समय के लिए ! उसके बाद कर्म फल भोगने के लिए मनुष्य रूप में आना ही पड़ा ।
बिलावल की आत्मा का प्रतिशोध अभी बाकी है जब तक वह पूर्ण नहीं हो जाएगा तब तक वनराज की इस जन्म की यात्रा पूर्ण नहीं होगी । इसलिए उस के मामले में अब और हस्तक्षेप मत करो ।

यह बात सुनकर मुझे समझ में आ गया कि मेरा कार्य वहां पर समाप्त हो चुका है । इस प्रकार से चांदनी महल का प्रकरण मेरी तरफ से समाप्त हो चुका था और उसके बाद मैं और माधुरी एक साथ उसकी बुलेट में वापसी की यात्रा में निकले उसकी कथा अगले भाग में आपके सामने रखूँगा ।

पहले चांदनी महल में इसके बाद क्या हुआ उस पर एक नजर डाल लेते हैं । हम लोगों के जाने के बाद कुछ

दिनों तक तो शांति रही लेकिन फिर से गिरधारी के साथ वह सब कुछ दोबारा से होने लगा । उसने पंडित जी के पास जाकर मेरे बारे में पता करने की कोशिश की लेकिन मैंने उन्हें इसके लिए पहले ही मना कर दिया था । भुतहा बाबा की आत्मा से मिले संकेतों के आधार पर मुझे अब उसके लिए कुछ भी नहीं करना था ।
कई बार ऐसा होता है कि आपकी इच्छा होती है लेकिन अनुमति नहीं होती । कई बार ऐसा होता है कि आपकी इच्छा होती है लेकिन वह कार्य आपको नहीं करना होता है ....
यह कुछ कुछ वैसी ही स्थिति थी !

समय धीरे-धीरे गुजरता गया और गिरधारी के ऊपर होने वाले अत्याचार धीरे-धीरे बढ़ने लगे । उन दोनों ने अर्थात बिलावल और उस लाल साड़ी वाली महिला ने गिरधारी को लगभग दो साल तक पीड़ित किया और उस प्रताड़ना के चलते अंततः गिरधारी मृत्यु को प्राप्त हो गया ।

गिरधारी की माताजी भी गिरधारी के जाने के बाद बीमार पड़ गई और साल भर बाद उनका भी देहावसान हो गया।

चाँदनी महल मे अजीब अजीब सी आवाजों के आने का सिलसिला और विचित्र प्रकार की घटनाओं का घटना उसके बाद भी जारी रहा,,,,,
जिसकी वजह से लोग चांदनी महल की ओर जाने से घबराते रहे.....
और वह सुनसान पड़ा रहा.....
लगभग यही हाल भूत बंगले का भी था !
बिलावल की आत्मा अब भी चांदनी महल में भटक रही है !
कई बार उसके चीखने की आवाज अंधेरी रात को और भयानक बना देती है !
उसकी दर्द भरी चीख की आवाजें इतनी तेज होती है कि वह लगभग 100 मीटर दूर तक सुनाई देती है !
कुछ लोगों ने, जो अपने आप को पैरानॉर्मल इन्वेस्टिगेटर कहते थे, कुछ मशीनों की सहायता से चांदनी महल में भूत देखने का प्रयास किया.....

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. अघोरानंद और पशुपतिनाथ की बोक्सी ।
12. अघोरानंद और दतिया पीठ का चमत्कार ।
13. अघोरानंद और जटाधारी वैशाली ।

14. कापालिक चंडेश्वर ।

15. कापालिक चंडेश्वर और पूर्णानन्द ।

16. वह रहस्यमय युवती ।

17. परेतिन की शादी ।

कुछ साधना विधियाँ भी गुरु कृपा से प्रस्तुत हैं :-

1. गुरुपूजन की विधियाँ ।
2. मंत्र साधना और गुरु की आवश्यकता ।
3. अकाल मृत्यु तथा रोग नाशक मंत्र ।
4. श्री गणेश पूजन की विधियाँ ।
5. महालक्ष्मी पूजन ।

आपकी सुविधा के लिए एक ऑडियो चैनल चालू किया है जिसमें मंत्रों के उच्चारण को बताया गया है ।

नीचे दिए *Anchor* लिंक पर क्लिक करें

https://anchor.fm/u0938u0928u093eu0924u0928-u0938u0942u0924u094du0930

नीचे दिए *Overcast* लिंक पर क्लिक करें

https://overcast.fm/itunes1519049701

नीचे दिए *Spotify* लिंक पर क्लिक करें

https://open.spotify.com/show/00vXvHwYrtTbjnjSzyOt3V

नीचे दिए *Radiopublic* लिंक पर क्लिक करें

https://radiopublic.com/-WlZq04

नीचे दिए *Google Podcast* लिंक पर क्लिक करें

https://podcasts.google.com/?feed=aHR0cHM6Ly9hbmNob3IuZm0vcy8yNmNiMjA1Yy9wb2RjYXN0L3Jzcw%3D%3D

नीचे दिए *Breaker* लिंक पर क्लिक करें

https://www.breaker.audio/mntr-rhsy